Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जनकवि जगनिक

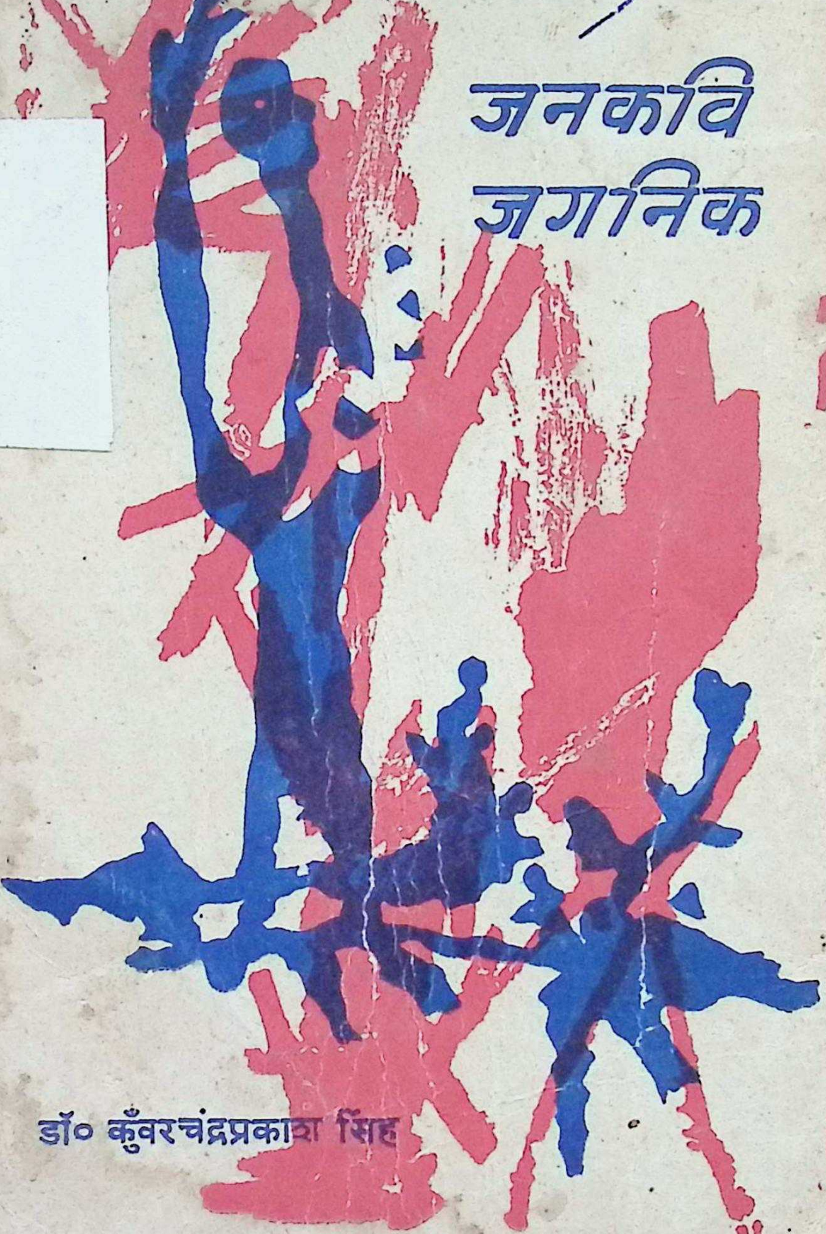

डॉ० कुँवरचंद्रप्रकाश सिंह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जनकवि जगनिक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जनकवि जगनिक

लेखक

डॉ॰ कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

© डॉ० कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह
तृतीय संस्करण : १९७०

प्रकाशक :
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-६

मूल्य : ३·५०

मुद्रक :
नवीन प्रेस,
नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्वर्गीय अनुज

शिवप्रकाश

की

सतत

प्रबुद्ध स्मृति

में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्राक्कथन

स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात् अन्य भाषाओं के साहित्य के समान ही हिंदी-साहित्य ने द्रुत गति से प्रगति की है। स्वाधीनता-प्राप्ति के पूर्व हमारे साहित्यकारों के सम्मुख अनेक अवरोध थे, स्वाधीनता के पश्चात् जिनमें से अनेक दूर हो गए, और साहित्यकारों को अवसर मिला कि वे अधिक निश्चिंत होकर अपनी साधना में जुटें, फलतः साहित्य की प्रगति हुई। परंतु यह प्रगति जहाँ साहित्य के अन्य अनेक क्षेत्रों में अधिक तेजी से हुई, वहाँ हिंदी के नाट्य-साहित्य की ओर हमारे लेखकों में उतना उत्साह नहीं दीख रहा। नाटक भारतीय साहित्य का गौरवशाली अंग है, जिसकी पर्याप्त प्राचीन परंपरा है। भारतीय नाटकों ने पिछले युगों में न केवल देश की सांस्कृतिक और साहित्यिक रुचियों को पुष्ट और परि-मार्जित किया, वरन् विश्व-साहित्य को भी महत्त्वपूर्ण देन दी है। उसी नाट्य-साहित्य की ओर आज के लेखकों की अपेक्षाकृत उदासीनता देखकर चिंता स्वाभाविक है। आज साहित्य के अन्य विभिन्न क्षेत्रों की भाँति हिंदी-नाट्य साहित्य के भी संवर्द्धन की, उसे ऐसी कृतियों से संपन्न करने की आवश्यकता है, जिसके फलस्वरूप वह अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्य साहित्य की समकक्षता में उन्नत-सिर खड़ा हो सके। हमारे साहित्यकारों को अपने दायित्व का निर्वाह पहले की अपेक्षा अधिक गंभी-रता और सावधानी से करना है। भारतेन्दु, प्रसाद और इनके समसाम-यिक अन्य प्रतिभाशाली नाटककार नाट्य-साहित्य को जिस कलागत और वैचारिक ऊँचाई पर छोड़ गए हैं, उसे हमें स्थिर रखना और आगे बढ़ाना है।

आज जो प्रतिभाएँ इस कार्य में संलग्न हैं, उनमें श्री चंद्रप्रकाशसिंहजी एक हैं। 'जनकवि जगनिक' उनकी नवीनतम नाट्यकृति है। इसके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पूर्व भी वह 'कवि-कुल-गुरु' की रचना द्वारा नाटककार के रूप में ही हिंदी-संसार द्वारा समादृत हो चुके हैं। 'जन-कवि जगनिक' जहाँ उनकी विकासशील कला का दर्शन कराता है, वहाँ उनकी व्यापक जीवन-दृष्टि का परिचायक भी है। उनकी कलागत, भावगत और विचारगत भूमियों की व्यापकता अभिनंदनीय है। अध्यापन के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य की रचना में उनकी यह रुचि और निष्ठा भी आदर की वस्तु है।

'जनकवि जगनिक' नाटक न केवल भारतीय इतिहास के सामंतीय युग में उत्पन्न राजाओं, महाराजाओं एवं इतिहास द्वारा उपेक्षित जन-साधारण के एक कलाकार की ओजस्वी कथा कहता है, वरन् अपने रचयिता की भी स्वस्थ, लोक-हितकारी एवं प्रगतिशील जीवन-दृष्टि का परिचय देता है, जिसने उसे भारतीय इतिहास की विशाल सामग्री के बीच से जगनिक-जैसे जन-कवि की गाथा चुनने को प्रेरित किया। आल्हा-ऊदल-नामक महोबे के दो इतिहास-ख्यात वीरों की वीरतापूर्ण गाथा को अपनी कविता में बाँधकर जगनिक ने न केवल उस युग के राजनीतिक-सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया था, वरन् आज भी उनकी वाणी (अपने मूल रूप में न सही) हिंदी-भाषी प्रदेशों के जन-साधारण के कंठ में बसी हुई उसकी कठोर जीवनचर्या में उसे हँसने, गाने और ओज से नाच उठने की प्रेरणा देती है, और एक बार कापुरुष-से-कापुरुष को उठकर खड़ा हो जाने को बाध्य करती है। वीर-रस की इस कृति ने हिंदी-भाषी प्रदेश के जनसाधारण पर जो प्रभाव डाला है, वह वास्तव में रामचरित मानस को छोड़कर कदाचित् अन्य कोई कृति आज तक नहीं डाल सकी है। जनता ने तुलसी को इसीलिये अपनाया क्योंकि राम और उनकी कथा के माध्यम से उन्होंने उस युग के दलित जन-साधारण की आशाओं-आकांक्षाओं को व्यक्त किया था और आज भी जन-साधारण अपनी पस्ती, निराशा और दु:ख के क्षणों में उसी से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को स्फूर्तिमय बनाता है। उसी प्रकार जनता जगनिक को भी इसी कारण अपनाए हुए है कि उन्होंने भी आल्हा और ऊदल-सरीखे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सामान्य जन-वर्ग के दो उद्भट वीरों की कथा द्वारा उस युग के जन-साधारण की आशाओं-आकांक्षाओं को वाणी दी, जो आज भी उतनी ही प्रेरणादायक और जीवंत है, जितनी तब थी। ऐसे महान् कवि की कथा को अपनी लेखनी का विषय बनाकर श्री चंद्रप्रकाशसिंहजी ने स्तुत्य कार्य किया है।

नाटक की कथावस्तु पाँच अंकों और उनके अंतर्गत अनेक दृश्यों में विभाजित है। नाटक की रचना में नाटककार का उद्देश्य जनता के उस महान् कवि के चरित्र को भी स्पष्ट करना है, जैसा कि नाटक के नाम-करण से स्पष्ट है। जगनिक के विषय में इतिहास अधिकांशतः चुप है, केवल जनता ही उन्हें आज तक अपने हृदय में बसाए है। जितनी भी प्रामाणिक सामग्री इतिहास, गजेटियरों व अन्य ऐसे ही स्रोतों से उपलब्ध हो सकती थी, नाटककार ने सपरिश्रम उसे एकत्र कर उसका उपयोग किया है। कुछ घटनाएँ उसकी कल्पित हैं, कुछ का आधार महाकवि चंद-रचित पृथ्वीराज-रासो है, जिसकी प्रामाणिकता के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है और नाटककार ने इसे स्वीकार भी किया है। उसने अपनी कृति की पूर्ण ऐतिहासिकता का दावा भी नहीं किया। हाँ, जो भी घट-नाएँ नाटक में वर्णित हैं, वे इतिहास-सम्मत हों अथवा काल्पनिक उनकी संगति इस प्रकार बिठाई गई है कि वे उस युग का यथार्थ और जीवंत चित्र हमारे सम्मुख बिना किसी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना अथवा व्यक्तित्व को विकृत किए प्रस्तुत करती हैं। यह नाटककार की महत्त्वपूर्ण सफलता है। घटनाओं के चयन और उनकी योजना में भी नाटककार ने आवश्यक सतर्कता बरती है, और उसने उन्हीं घटनाओं को कथा में स्थान दिया है, जो या तो रसनिष्पत्ति में समर्थ हैं या किसी-न-किसी रूप में नायक से संबंधित हैं। कथावस्तु महोबा, कन्नोज और दिल्ली से लेकर गज़नी तक विस्तार पाती है, और इस कथा के भीतर ही भारतीय इति-हास का वह काल भी आ जाता है, जहाँ से उसके एक महत्त्वपूर्ण अध्याय का अंत होकर दूसरे महत्त्वपूर्ण अध्याय का प्रारम्भ हुआ था। कथावस्तु

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज चौहान और महोबे के बीच विनाशकारी युद्ध का वर्णन तो करती ही है, जिसने एक बार उत्तर भारत को सहसा वीरों से शून्य-सा कर दिया था, वह मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुए उस अंतिम युद्ध का वर्णन भी करती है, जिसके परिणाम-स्वरूप भारत में प्रथम बार इस्लामी शासन की पताका फहराई और इतिहास ने सर्वथा नया मोड़ लिया। इन दो विनाशकारी युद्धों को अपनी परिधि में समेटे हुए कथावस्तु ने उस युग की राजनीतिक स्थिति का यथार्थ, मार्मिक और विषाद से पूर्ण जीवित चित्र दिया है।

पात्र लगभग सभी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। जगनिक नाटक का नायक है। उसके चरित्रांकन में लेखक ने विशेष कुशलता दिखाई है। राष्ट्रीय ऐक्य के लिए किया गया नायक का प्रयत्न जो कदाचित् नाटक का एक-मात्र कार्य है, भले ही तत्कालीन युग की मान्यताओं और कतिपय व्यक्तियों की वैयक्तिकता एवं अहं के कारण पूर्ण न हो पाया हो, पर नायक के इस ओर किए गए प्रयत्न और उन्हें पूरा होते न देख उसकी आंतरिक छटपटाहट और तड़प उसके चरित्र का बड़ा ही भव्य रूप उपस्थित करती है और अनायास ही हमें उस जनकवि के प्रति श्रद्धा से भर देती है। जगनिक के अतिरिक्त इतिहास के अन्य अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति भी नाटक में पात्रों के रूप में उपस्थित हैं। परमार्दिदेव, आल्हा, ऊदल, पृथ्वीराज, जयचंद, चंदवरदाई, मुहम्मद गोरी आदि पात्रों के विभिन्न क्रिया-कलापों से नाटक भरा पड़ा है। लेखक ने उनका वर्णन पूरी निष्ठा और तटस्थता के साथ किया है। स्त्री पात्र नाटक में थोड़े हैं। महारानी मल्हनादेवी व देवलदेवी का प्रवेश नाटक में प्राण फूंक देता है और भारतीय नारीत्व की प्रतीक ये देवियां भी हमारी श्रद्धा की पात्र बनती हैं। आल्हा की स्त्री सुलक्षणा एवं कुड़हिर के राजा गंगाधर की पत्नी शशि-रेखा भी आदर्श स्त्री पात्र हैं, जो हमें प्रभावित करते हैं।

नाटक की भाषा पुष्ट, परिष्कृत व प्रवाहमयी तथा पात्रानुकूल है। संवाद शक्तिशाली हैं। नाटककार के कविहृदय के संयोग ने संवादों में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मार्मिकता, सौंदर्य एवं प्रभाव की सृष्टि की है। वीर और करुण रस से भीगे ये संवाद अपनी मार्मिकता, ओज व प्रसाद गुण से नाटक के प्रभाव की वृद्धि करते हैं।

विभिन्न पात्रों द्वारा नाटककार ने तत्कालीन युग की प्रवृत्तियों को उभार दिया है। इस दृष्टि से नायक द्वारा उस युग की प्रवृत्तियों का उद्घाटन सफल हुआ है। तत्कालीन नरेशों के मानापमान, स्वार्थों, अधिकार-लिप्सा आदि भावनाओं की वेदी में देश के हित की बलि बड़ा ही विषादमय चित्र उपस्थित करती है। उस युग के चित्रण में भी नाटककार ने वर्तमान युग के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को सफलतापूर्वक गूंथ कर नाटक के महत्त्व को बढ़ा दिया है। जगनिक के विचार स्थल-स्थल पर ऐसी समस्याओं को उठाते हैं, जो आज के युग की भी उतनी ही हैं, जितनी उस युग की थीं। राष्ट्रीय ऐक्य की समस्या उनमें से एक है। राष्ट्रकवि के विषय में जगनिक के विचार पर्याप्त उत्तेजक और महत्त्वपूर्ण हैं, और राज्याश्रय के लिए उत्सुक आज के अनेक साहित्यकारों के सोचने-समझने की सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

नाटक की अभिनेयता की ओर भी लेखक ने ध्यान दिया है। युद्ध-संबंधी वर्णन नाटक के महत्त्वपूर्ण अंग हैं, जिनकी अभिनेयता ही बाधाएँ उपस्थित कर सकती है। शब्दवेधी बाण-विद्या का प्रदर्शन भी नाटक की अभिनेयता में बाधक हो सकता है। चतुर्थ अंक में चार दृश्य हैं, जिनकी कथावस्तु महोबा, दिल्ली व गज़नी तक विस्तार पाती है। स्थानों का एक ही अंक में इतना शीघ्र परिवर्तन रंगमंच पर कठिनाई पैदा करेगा। अभिनेता नाटक का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। सारी बाधा उपयुक्त हिंदी रंगमंच के अभाव की है। पाश्चात्य देशों की भाँति ही विकसित रंगमंचों की उपस्थिति में ये बाधाएँ बाधाएँ न रहकर नाटक की अभिनेयता में अद्भुत प्रभाव उत्पन्न कर सकती हैं। इस कारण अभिनेयता-संबंधी कतिपय बाधाओं के कारण नाटक के महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

संपूर्ण नाटक में विषाद की काली छाया मँडराती रहती है। नाटक की सारी कथावस्तु प्रारम्भ से ही विषाद के इसी चित्र को प्रस्तुत करने के लिए दौड़ती है और नायक के अथक प्रयत्न भी उसकी गति को रोक नहीं पाते और वह नाटक के अंतिम पृष्ठों में तो वातावरण को पूर्णरूपेण स्याह कर देती है। इस दृष्टि से नाटक दुःखांत नाटकों के ही अधिक समीप हो जाता है। नाटककार ने नाटक की रचना में भारतीय और पाश्चात्य दोनों नाट्य-प्रणालियों के समन्वय द्वारा ही अपनी नाट्य-प्रणाली निर्मित की है, और आज की मान्यताओं को देखते हुए इसी कारण हम उसे इस बात के लिए दोषी नहीं ठहरा सकते कि उसकी कृति भारतीय मान्यताओं के सर्वथा अनुकूल नहीं है। नाटक पर समग्र रूप से विचार करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि वह एक सुन्दर कृति है। आशा है, भविष्य में चंद्रप्रकाशजी की लेखनी और भी प्रौढ़ नाटकों का सृजन कर हिंदी-नाट्य साहित्य को समृद्ध करेगी। उनके इस सुंदर प्रयत्न पर मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ।

—द्वारिकाप्रसाद मिश्र
मुख्य मंत्री, मध्य प्रदेश

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रस्तावना

'जनकवि जगनिक' नाटक सहृदयों की सेवा में प्रस्तुत है। जगनिक हमारे आदि काल का एक ऐसा कवि है, जिसकी वास्तविक जीवनी के विषय में कुछ विशेष ज्ञात नहीं। उसके मूल शब्द—असली कृति का भी कहीं पता नहीं लगा है। फिर भी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, "जनता के कंठ में जगनिक के संगीत की वीर-दर्प-पूर्ण प्रतिध्वनि अनेक बल खाती हुई अब तक चली आ रही है।" पंडितों, विद्वानों और राजकीय पुस्तकालयों का संरक्षण जगनिक की रचना को नहीं मिला; किन्तु कोटि-कोटि जनता के हृदय पर उसकी रचना अंकित है, कोटि-कोटि कंठों में उसका स्वर अनेक भंगिमाओं के साथ अद्यावधि गुंजित है। हिंदी-भाषा-भाषी विशाल क्षेत्र में जो लोकप्रियता जगनिक की रचना को प्राप्त है, वह गोस्वामी तुलसीदास के अतिरिक्त अन्य किसी कवि को सुलभ नहीं हो सकी है। इसका कारण यही हो सकता है कि उसने बड़े सहज भाव से जनता के हृदय के साथ अपना हृदय जोड़ दिया था, लोक-हृदय के अनुकूल अपना हृदय ढाल लिया था। जगनिक ने अपने काल के बड़े-बड़े राजाओं और सामंतों को छोड़कर एक अति सामान्य और उपेक्षित कुल के दो वीरों को अपने काव्य का नायक चुना, यही इस बात का प्रमाण है। ऐसे कवि की रचना को राजकीय आश्रय कैसे प्राप्त होता, और राजाश्रित पंडित उसकी ओर क्यों आकृष्ट होते ? पर, जनता जनार्दन की सेवा में समर्पित जगनिक की कृति चिरकाल के लिए जनता का कंठहार तो हो ही गई। सारांश यह कि मुझे जगनिक अपना आदर्श जन-कवि प्रतीत हुआ। जनता के बीच उसके काव्य की जो गूंज निरंतर नए-नए उन्मेषों के साथ आज तक बनी हुई है, उसी में मैंने उसका वास्तविक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जीवन-चरित्र पढ़ने का प्रयत्न किया है। कवीन्द्र रवीन्द्र ने अपनी विश्रुत रचना 'सूरदासेर प्रार्थना' में महाकवि सूरदास की जो जीवनी—वास्तविक जीवनी—अंकित की है, वह पंडितों के द्वारा बड़े श्रम के साथ प्रस्तुत की गई उनकी जीवनी की विपुल सामग्री से मेल नहीं खाती। कारण, कवीन्द्र ने महाकवि की रचना को ही उनकी जीवनी का विश्वस्त आधार माना है। मैंने भी वही किया है—'महाजनो येन गतः स पंथः।' आधुनिक पंडित-मंडली ने जगनिक की जीवनी लिखने के लिए उल्टा-सीधा श्रम नहीं किया है, यह भी अच्छा ही हुआ। अन्यथा, बहुत संभव है, मुझे भी उनसे असहमत ही होना पड़ता।

जगनिक की भाषा क्या रही होगी? क्या उसने भी चंद आदि की तरह प्राकृत की रूढ़ियों से बद्ध भाषा की रचना की थी? मेरा विचार है, जगनिक की भाषा वह नहीं रही होगी। यह भाषा जन-साधारण के लिए उस समय भी अवश्य दुर्बोध रही होगी। यदि जगनिक इस भाषा को अपनाता, तो उसकी रचना को जनता के बीच इतना आदर नहीं मिलता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जगनिक और चंद के युग की भाषा-संबंधी स्थिति का निरूपण करते हुए लिखा है—"इतना अनुमान तो किया ही जा सकता है कि प्राकृत पढ़े हुए पंडित ही उस समय कविता नहीं करते थे। जन-साधारण की बोली में गीत, दोहे आदि प्रचलित चले आते रहे होंगे, जिन्हें पंडित लोग गँवार समझते रहे होंगे।" यह जन-साधारण की बोली ही जगनिक की कविता की भाषा रही होगी। मेरा अनुमान है, इसीलिए, पंडितों और विद्वानों के हाथ उसकी रक्षा की ओर नहीं बढ़े, और इसीलिए राजकीय पुस्तकालयों में उसे संरक्षण या स्थान नहीं प्राप्त हुआ। मैं समझता हूँ, यदि जगनिक की रचना अपने मूल रूप में मिल जाती, तो वह खुसरो और विद्यापति के पद्यों की भाषा के समान अपने क्षेत्र में अपने समय की जनता की बहुत-कुछ असली बोलचाल का पता देती। इसीलिए इस नाटक में जगनिक के गीतों को मैंने आधुनिक काल की जन-साधारण की एक बोली में प्रस्तुत किया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सहृदय प्रेक्षकों को इससे जगनिक के काव्य की भाषा-स्थिति समझने में सुगमता होगी।

'जगनिक' नाटक इतिहास की भूमि पर प्रतिष्ठित है। इसकी कथा-वस्तु के विधान के लिए मैंने सामान्यतः इतिहास के अतिरिक्त चन्द बरदाई के 'पृथ्वीराज-रासो' के महोबा खंड, प्रचलित आल्हखंड और बुंदेलखंड के विभिन्न ज़िलों के गज़ेटियरों का उपयोग किया है। इसमें संकलित सब-की-सब घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं, ऐसा दावा मैं नहीं करता। न तो ऐसा करना आवश्यक है, और न वैसा होना अनिवार्य। यह दावा मैं अवश्य कर सकता हूँ कि नाटक में जिन ऐतिहासिक परिस्थितियों का ग्रहण, चित्रण, संश्लेषण या विश्लेषण किया गया है, वे पूर्णरूपेण इतिहास-सम्मत हैं। तात्पर्य यह कि इस नाटक में किसी को इतिहास के साक्षात् सांकेतिक वाच्य अर्थ का अभाव भले ही अनुभव हो, पर इसकी पंक्ति-पंक्ति में हमारे सच्चे इतिहास की ध्वनि व्यंजित और गुंजित रहे, यह प्रयत्न मैंने अत्यन्त जागरूक रहकर किया है। इसीलिए इस नाटक में इतिहास के अभिधेय रूप की अपेक्षा उसके प्रतीयमान रूप का आरोप ही प्रमुख है। साहित्य की स्वकीय विशेषता और मर्यादा भी यही है। जो लोग तबाक़ात-ए-नासिरी, ताजुल-म-आ'सिर, फरिश्ता बदायूँनी आदि को ही ऐतिहासिक सत्य का संरक्षण मानते हैं, उनको यह नाटक पढ़कर निराशा हो सकती है। ऐसे लोगों को यह जान लेना चाहिए कि विदेशियों द्वारा लिखे गए इतिहास की पूरी परीक्षा जब परतंत्रता के बंधनों से मुक्त देश की स्वतंत्र मेधा कर लेगी, तभी साहित्यकार में उसके प्रति निष्ठा उत्पन्न होगी।

मैंने नाटक को अधिक-से-अधिक अभिनेय बनाने का प्रयत्न भी किया है। अपने रंगमंच के अभाव में सामान्यतः हिन्दी के नाटक-लेखक के सामने जो कठिनाइयाँ आती हैं, वे ही मेरे सामने भी आईं। शक्ति-भर मैंने उनके निवारण का प्रयत्न किया है। आधुनिक हिंदी नाटकों में पश्चिमी नाटकों के अनुकरण पर लम्बे-लम्बे रंग-निर्देश देने की प्रथा चल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पड़ी है। कभी-कभी ये विस्तृत रंग-निर्देश अभिनय में बाधक भी हो जाते हैं, और नाटक को कहानी या उपन्यास का संवादीकृत रूप-मात्र बना देते हैं। उनके कारण नाटकों में श्रव्यत्व या पाठ्यत्व की वृद्धि अवश्य होती है, किन्तु प्रायः दृश्यत्व का अभाव हो जाता है, इसलिए बहुत लम्बे-लम्बे रंग-निर्देश मैंने नहीं दिए हैं।

साहित्य, संस्कृति एवं राजनीति के महान् साधक, 'कृष्णायन' के यशस्वी महाकवि, सुप्रसिद्ध देशभक्त, मध्य प्रदेश के भूतपूर्व शिक्षा एवं गृह मंत्री तथा सागर-विश्वविद्यालय के वर्तमान उप-कुलपति पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र जी ने इस नाटक को स्नेहपूर्वक ध्यान से पढ़कर इसकी भूमिका लिख देने की कृपा की, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

मुझे विश्वास है, राष्ट्रभारती के चरणों में अर्पित मेरी यह पूजा स्वीकार अवश्य की जायगी।

—लेखक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

जगनिक : महोवे के जनकवि
आल्ह खंडकाव्य के रचयिता
आल्हा : महोवे के प्रसिद्ध बनाफर वीर,
ऊदल : महोवे के प्रसिद्ध बनाफर वीर
आल्हा के छोटे भाई
इंदल : आल्हा के पुत्र
परिमार्दिदेव (परमाल) : महोवे के चन्देल महाराज
ब्रह्माजित : महोवे के युवराज
रणजीत : महोवे के राजकुमार
कर्णजीत : ,,
पृथ्वीराज : दिल्ली के चौहान नरेश
चंद : दिल्ली के महाकवि
जल्ह : चंद के पुत्र
कैमास : पृथ्वीराज के सरदार
कह्न : ,,
चामुंडराय : ,,
संयमराय : ,,
माहिल : उरई-नरेश, महाराज
परमार्दिदेव के साले
गंगाधर : कुड़हिर के राजा
राजसिंह : कुड़हिर के सरदार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जयचंद : कन्नौज के महाराज
लक्ष्मणचंद्र (लाखनसी) : कन्नौज के युवराज
मधुकर भट्ट : कन्नौज के राजकवि
मुहम्मद गोरी : ग़ज़नी का सुलतान
पीरोज़ खां : गोरी के सरदार
हुज्जाब : ,,

वृद्ध, सेवक, सामंत, सभासद्, योद्धा आदि

स्त्री-पात्र

मल्हनादेवी : महोबे की महारानी
शशिरेखादेवी : कुड़हिर की रानी
देवलदेवी : आल्हा-ऊदल की मा
सुलक्षणा : आल्हा की धर्मपत्नी

वृद्धाएँ, सेविकाएँ आदि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—महोबा के राजप्रासाद का सिंहद्वार

[द्वार के बाहर बहुत बड़ा जन-समूह एकत्र हो रहा है। इस जन-समूह में स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सभी हैं। सबके मुखों पर चिंता और भय का चिह्न अंकित है। बड़ा कोलाहल हो रहा है। "हमारी रक्षा होनी चाहिए", "हमको बचाओ" का जन-रव चारों ओर फैल रहा है। त्रस्त और उत्तेजित भीड़ को बढ़ती हुई देखकर प्रहरीगण शीघ्रता से सिंहद्वार के लौह-कपाट बन्द कर लेते हैं, और सजग होकर खड़े हो जाते हैं। एक प्रहरी भीतर जाकर इस जन-समूह के समवेत होने का वृत्तान्त कहता है। प्रहरी के साथ एक राजपुरुष सिंहद्वार की खिड़की से बाहर आता है, और जन-समूह के निकट जाता है।]

राजपुरुष—क्यों भाई, आप लोग आज इतने अशान्त क्यों हैं ?

एक वृद्ध—(आगे बढ़कर) आश्चर्य है, राजपुरुष होकर भी आप हमसे ही अशान्त होने का कारण पूछते हैं। क्या आपको पता नहीं कि दिल्ली-नरेश ने महोबा फिर घेर लिया है ? उनकी सेना ने बेतवा के सब घाटों को छेंक लिया है।

एक स्त्री—यह राजपुरुष ठहरे, इनको हमारे सुख-दुःख का क्या पता ? हमारे परिवार के लोग पिथौरा के भय से अपने काम काज पर भी नहीं जाते, बच्चे भूखों मर रहे हैं। उनका रोना-तड़पना देखा नहीं जाता।

एक पुरुष—सिरसा के ध्वंस के कारण जनता विशेष त्रस्त है, चरवाहे तक बेतवा के तट की ओर नहीं जाते। हमारे ढोर भी प्यासों मर

Digitization by American Academy of Indic Studies - AAIS(USA)

रहे हैं। उनका रंभाना सहा नहीं जाता। (बहुत-से लोग एक साथ) महाराज से जाकर कहिए कि हमारी रक्षा करें, हमारा घर-बार बचाएँ।

राजपुरुष—महाराज को भी इस आक्रमण का पता है, वह इसको विफल करने का उपाय कर रहे हैं। क्या आप लोग अपने महाराज को असावधान समझते हैं ?

वृद्ध—यह हम कैसे कहें ? पर जनता इस समय बहुत अधीर है। हम लोगों के घर-बार और बाल-बच्चों की रक्षा के लिए जो कुछ किया जा रहा है, उसे जानने की इच्छा तो स्वाभाविक ही है।

राजपुरुष—इस अधीरता का कोई कारण समझ में नहीं आता, भद्र ! पहले भी तो महोवे पर आक्रमण हुए हैं ? क्या परिणाम आपको स्मरण नहीं ?

वृद्ध—स्मरण क्यों नहीं, श्रीमान् ? मैं यह जानता हूँ कि इसके पहले भी महोबे पर आक्रमण हुए हैं, और वे सब विफल हुए हैं। आक्रमण-कारी यहाँ से मुँह की खाकर लौटे हैं, पर···

राजपुरुष—पर क्या ?

वृद्ध—श्रीमान्, अविनय क्षमा हो। उस समय इस महोबे में वीर थे, उनका आदर था।

राजपुरुष—तो क्या अब महोवे में वीर नहीं हैं ? क्या उनका आदर नहीं होता ?

वृद्ध—आपसे छिपा क्या है, श्रीमान् ? आप हमें राजद्रोह का अपराधी बनाकर ही क्यों मारना चाहते हैं ?

राजपुरुष—आप मुझ पर ऐसा सन्देह क्यों करते हैं ? हम तो आपके मन की बात जान लेना चाहते हैं, यह हमारा कर्तव्य है। आप डरें नहीं।

कई व्यक्ति—(एक साथ) बाबा, कह क्यों नहीं देते साफ़-साफ़ ? मरना तो हमको है ही, चाहे दिल्ली वाले हमको मारें, चाहे रुष्ट होकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हमारे महाराज। अब तो हम सब प्रकार से हताश हैं।

वृद्ध—श्रीमान्, आप जब की बातें करते हैं, उस समय सीमा पर सिरसा-गढ़ी में नाहर मलखान हमारे प्रहरी और रक्षक थे। उनके रहते किस शत्रु को चंदेलों की धरती पर पैर रखने का साहस हुआ? दिल्लीवालों के कई आक्रमण उन्होंने विफल किए, किंतु अन्त में महोवे से बिना किसी प्रकार की सहायता पाए, अकेले लड़ते हुए, वह छल से मारे गए। पिथौरा के सेनापति चौड़ा ने कितनी क्रूरता से सिरसा को लूटा, उजाड़ा और बरबाद किया। हाय! अब··· (सिसकता है।)

एक स्त्री—और, यह क्यों नहीं कहते बाबा कि अब महोबे में आल्हा-ऊदल नहीं हैं। जनता के उन 'बिना दाम के सेवकों' को बिना अपराध के देश-निकाला देकर राजा ने अपने आप पैरों में कुल्हाड़ी मारी है। उसी पाप का फल आज हम सब को भोगना पड़ रहा है।

वृद्ध—चुप-चुप, बेटी! राजा के विषय में इस तरह नहीं बोला जाता। राजा सब-कुछ कर सकता है, सर्वसमर्थ है।

कई युवक—बाबा, सच बात छिपाने से काम नहीं चलेगा। राजा सब-कुछ भले ही कर सकता हो, पर इस आक्रमण से वह हमारी रक्षा नहीं कर सकता। हम कीर्तिसागर के युद्ध में सब-कुछ देख चुके हैं। अब तो आल्हा-ऊदल को लौटाये बिना हमारा कल्याण नहीं। उनके अतिरिक्त महोबे का सम्मान बचाने वाला कोई नहीं।

अनेक स्त्रियाँ—ठीक है। बिना बनाफर भाइयों के हमारी लाज बचाने वाला कोई नहीं।

जन-समूह—यही ठीक है, यही ठीक है। आल्हा-ऊदल को लौटा लाओ, आल्हा-ऊदल को हमारे बीच लाओ।

[राजद्वार की खिड़की फिर खुलती है। कवि जगनिक बाहर निकलते हैं। जगनिक लगभग २५-३० वर्ष के एक तेजस्वी तरुण हैं। आयत-दृग, पुष्ट देह, आजानुविलंबित भुजाएँ, मांसल स्कंध-देश तक

Digitization by American Academy of Indic Studies AAIS(USA)

प्रसारित उनके केश एवं उन्नत वक्षःस्थल उनकी प्रतिभा और व्यक्तित्व की छाप मन पर छोड़ते हैं। उनको देखकर जनता में हर्ष की लहर फैल जाती है।]

अनेक जन—(एक साथ) आओ, भैया जगनिक आओ। तुम्हीं हमारी कुछ सहायता करो, हमको इस संकट के पार उतारो।

जगनिक—भाइयो, आप लोगों के संकठ का पता मुझको है। अभी-अभी मैं आपकी मातृतुल्या महारानी मल्हनादेवी से उसी के विषय में परामर्श कर रहा था।

अनेक जन—(एक साथ) धन्य कवि-श्रेष्ठ, धन्य हैं आप। हमारी महारानी ने क्या निश्चय किया है?

एक वृद्ध—क्या हमारी महारानी को आज भी आल्हा-ऊदल की याद नहीं आती, बेटा जगनिक?

जगनिक—आती है माँ! उनको आल्हा-ऊदल सोते-जागते कभी नहीं भूलते। आज तो वे आल्हा-ऊदल की वात्सल्यमय स्मृति में उसी तरह वेचैन हैं, जैसे कोई नई ब्याई हुई गाय अपने बछड़े से बिछुड़ने पर होती है।

अनेक जन—धन्य हैं हमारी महारानी। वही तो महोवे की अन्नपूर्णा हैं।

वृद्ध—तो क्या महारानी ने आल्हा-ऊदल को लौटा लाने के विषय में भी कुछ सोचा?

जगनिक—माँ, उनको लौटाने के प्रयत्न वह चुपके-चुपके तो पहले से ही करती आ रही हैं। पर वे दोनों भाई किसी प्रकार लौटे नहीं। अब भी वह सब-कुछ करने को तैयार हैं।

अनेक जन—हाय! शायद हमारी महारानी महाराज के भय के कारण खुलकर कुछ नहीं कर पातीं। कुछ भी हो हमें आल्हा-ऊदल चाहिएँ ही।

वृद्ध—बेटा जगनिक, आल्हा-ऊदल को मना लाने का काम तुम्हीं कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सकते हो। किसी दूसरे से यह काम नहीं होगा। तुम्हारी ही वाणी का वशीकरण आल्हा पर चल सकता है। अपमान के कारण फ़ौलाद की तरह कठोर बने हुए आल्हा के हृदय को और कोई द्रवीभूत नहीं कर सकता।

अनेक जन—यही ठीक है, यही ठीक है। भैया जगनिक, तुम्हारी वाणी में वह जादू है, जो वेतवा की धारा को उलटकर बहने को मजबूर कर सकता है। तुम्हीं आल्हा-ऊदल को लौटा ला सकते हो।

जगनिक—आप लोग धैर्य धारण करें। माता मल्हनादेवी और मातृ-भूमि महोबे के नाम पर आल्हा-ऊदल को मना लाने के सब संभव प्रयत्न किए जाएँगे। यदि आप लोगों की इच्छा है, और महारानी की आज्ञा होगी, तो इस कार्य के लिए मैं स्वयं कन्नौज जाऊँगा।

वृद्ध—लेकिन इस बीच में तो महोवे का सर्वनाश हो जायगा। पृथ्वीराज की सेना प्रलय-घटाओं की तरह उमड़ रही है। कल सूर्योदय होते ही महोवे पर पहला प्रहार होगा। वर्तमान अरक्षित स्थिति में महोवे को धूलिसात होने में कितने दिन लगेंगे?

जगनिक—आप लोग उसकी चिंता न करें। उसकी व्यवस्था मुझ पर छोड़ दें। आप लोगों का इतना विश्वास तो मुझे मिलना ही चाहिए। फिर हमारी महारानी आप लोगों के दुःख में अत्यंत दुखी हैं और संकट दूर करने के लिए सब-कुछ करने को तैयार हैं।

सब लोग—महारानी की जय! कवि जगनिक की जय! हम लोगों को तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है भैया जगनिक। तुम इस धरती के सच्चे सपूत और हम लोगों के अनन्य हितैषी हो।

(पट-परिवर्तन)

*

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा दृश्य

[महोबे के राजप्रासाद के अंतःपुर में महारानी मल्हनादेवी का प्रकोष्ठ। महारानी अत्यंत शोकाभिभूत-सी हथेली पर अपना मुख रखे बैठी हैं, उनके निकट उसके तीनों पुत्र युवराज ब्रह्माजीत, रणजीत और कर्णजीत बैठे हैं। महारानी की आँखों में आँसू हैं, और तीनों राजकुमार भी किसी चिंता से कातर बने, सिर नीचे किए, बैठे हैं। इसी समय जगनिक प्रवेश करते हैं।]

जगनिक—माता ! आपकी आँखों में आँसू ? यदि आप कातर होंगी, तो महोबा आश्रय-हीन हो जायगा। आपकी मति और धृति ही इस संकट-काल में प्रजा-जनों का अवलंब है। उनके क्षोभ से आपको चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। मैंने सबको समझा-बुझाकर लौटा दिया है। आबाल-वृद्ध सब आपकी जय-जयकार करते हुए घरों को गये हैं।

मल्हनादेवी—बेटा ! ··· (आँसुओं के वेग से कंठ रुद्ध हो जाता है। वह प्रयत्न करके भी कुछ कह नहीं पातीं।)

जगनिक—महिमामयी मां, महोबे की प्रजा तन, मन, धन से अपनी महारानी की अनुयायिनी है। आप उसकी चिंता का भार मुझ पर छोड़ दें। अब हम लोगों को उद्वेग छोड़कर भावी कार्यक्रम स्थिर करना चाहिए।

मल्हनादेवी—बेटा, मुझे प्रजा से कोई भय नहीं; उसके दुःख से मेरा हृदय अवश्य फटा जा रहा है। प्रजा को छोड़कर राजपरिवार प्रासादों और दुर्गों में सुरक्षित रहे, यह चंदेल-राजवंश के लिए लज्जा की बात है। मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम प्रजा का असंतोष दूर कर दोगे। तुम्हारी वाणी का प्रभाव अमोघ है। किंतु हम लोगों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पर विपत्ति के पहाड़-पर-पहाड़ टूट रहे हैं। (आँसू गिरते हैं।)

जगनिक (युवराज ब्रह्माजीत से) युवराज, क्या कोई नई घटना घटी है ? विंध्याचल से भी अचल-अटल महोबे की अन्नदात्री आज इतनी व्याकुल क्यों हैं ? किसी शत्रु के आक्रमण-मात्र से इस धरती की किसी शौर्यप्रसू माता का इतना उद्विग्न होना तो अस्वाभाविक और असंभव ही है।

ब्रह्माजीत—भाई, तुम्हारा अनुभव ठीक है। कुमार कर्णजीत कैलासगढ़ी का जो समाचार लाये हैं, उसी को सुनकर माँ कातर हो उठी हैं।

जगनिक—कैलासगढ़ी का समाचार ! (कुमार कर्णजीत से) वहाँ क्या हुआ कुमार ?

कर्णजीत—अर्ध-रात्रि में पृथ्वीराज की सेना की एक टुकड़ी ने छिपकर कैलासगढ़ी पर आक्रमण किया। राव लाखनसिंह और उनके सैनिक असावधान थे, क्योंकि उनको ऐसे आक्रमण की आशंका ही न थी, इसलिए रात्रि के युद्ध में सब-के-सब मारे गए। राव लाखनसिंह, उनके पुत्र माधवराय तथा उनके परिवार के अन्य सब व्यक्ति खेत रहे; बहन शशिकला सती हो गई। माधवराय की गर्भवती पत्नी अपने मायके गई थीं, वही बची हैं।

जगनिक—यह तो बड़ा दारुण दुःसंवाद है।

मल्हना—प्राणाधिक मलखान के वध के बाद राव लाखनसिंह की तलवार पर ही महोबे को भरोसा रह गया था। आज हमारा वह अवलंब भी छिन गया। उनके असाधारण बल-विक्रम से मुग्ध होकर ही हम लोगों ने उनके साथ प्यारी बेटी शशिकला का ब्याह किया था। हमारे अनुरोध पर ही वह अपना जन्म-स्थान डौंडियाखेरा छोड़कर वहाँ के अपने चुने हुए सिंह-पराक्रम बैसों के साथ कैलासगढ़ी में आकर रहे थे। हाय, बेटा मलखान और जामाता लाखनसिंह दोनों ही छल की बलि हो गए।

रणजीत—उनको सामने युद्ध में जीतना असंभव था, शत्रु ने इसीलिए

Digitization by American Academy of Indic Studies (AAIS USA)

रात्रि में छिपकर आक्रमण किया।

मल्हना—सच्चे क्षत्रिय तो अधर्म-युद्ध से घृणा करते आये हैं। यह दुर्नीति उनमें कैसे प्रवेश पा गई?

कर्णजीत—पश्चिम के जो म्लेच्छ इस देश पर बार-बार आक्रमण करके हमारे मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ते हैं, सुना है, वे लोग इसी प्रकार का अधर्म-युद्ध करते हैं। क्या इस देश के क्षत्रिय म्लेच्छों से यही सीख रहे हैं?

जगनिक—कुमार, ऐसी बात नहीं है। इस देश के क्षत्रियों ने म्लेच्छों से कुछ नहीं सीखा। म्लेच्छ जितने सुसंगठित और अनुशासित हैं, वे उतने ही असंगठित और अनुशासनहीन! क्षत्रियों का मिथ्याभिमान इतना बढ़ गया है कि वे विदेशी शत्रु के सामने कंधे-से-कंधा भिड़ाकर खड़े ही नहीं हो सकते। हां, वे अपने ही भाई के साथ क्रूर-से-क्रूर व्यवहार कर सकते हैं। प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर वे उचित-अनुचित का विवेक छोड़कर अंधे हो जाते हैं। मेरा अनुमान है, कैलासगढ़ी के आक्रमण के मूल में यही मिथ्याभिमान और प्रतिशोध की भावना है।

रणजीत—ठीक कहते हो, भाई! मैं सैन्य-संगठन तथा राज्य की सुरक्षा की व्यवस्था के लिए उस दिन कैलासगढ़ी के निकट ही सुदास में ठहरा था। जैसे ही मुझे इस आक्रमण का समाचार मिला, मैं अपने सैनिक लेकर वहां पहुंचा। तब तक युद्ध समाप्त हो चुका था, और दिल्ली के सैनिक कैलासगढ़ी का ध्वंस कर लौट रहे थे। मैंने उन पर प्रबल आक्रमण किया। मेरे आकस्मिक आक्रमण के वेग को वे सँभाल न सके, बहुत-से हताहत हुए। कुछ बंदी भी हुए। उनसे मैंने इस कायरतापूर्ण रात्रि-आक्रमण का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि यह आक्रमण बदला लेने के लिए किया गया था।

मल्हना—किस बात का बदला, बेटा?

रणजीत—लगभग आठ वर्ष पूर्व जब चौहान-नरेश समुद्र-शिखर दुर्ग के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अधिपति पद्मसेन से युद्ध करके लौट रहे थे, तो उनके कुछ घायल सैनिक कैलासगढ़ी के मार्ग से होकर निकल पड़े। वहाँ उन्होंने बिना रक्षकों की अनुमति के राजकीय उद्यान में विश्राम किया...।

जगनिक—(बीच में ही बोल उठे) वह घटना तो मुझे भी स्मरण है। उन सैनिकों और उद्यान के मालियों में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया था। उन लोगों ने मालियों को मारा-पीटा था। इस पर राव लाखनसेन के पुत्र माधवराय ने उनको कठोर दंड दिया था, कुछ सैनिक मारे गए थे।

रणजीत—ठीक यही बात है। माधवराय द्वारा दंडित पृथ्वीराज के उन सैनिकों ने ही बदला लेने के लिए यह कपटपूर्ण आक्रमण किया था।

जगनिक—देश पर कितनी बड़ी विपत्ति आनेवाली है, और देश तथा धर्म के कर्णधार आपस में ही लड़-लड़कर यदुवंशियों की तरह अपना सर्वनाश करने को तुले हुए हैं।

मल्हना—तुम्हारा संकेत कदाचित् म्लेच्छों के निरंतर होते रहनेवाले आक्रमण की ओर है। क्या ये वर्बर लुटेरे इस देश को कभी जीत सकेंगे, वेटा जगनिक? हमारी अपरिमित सम्पत्ति का कुछ अंश वे कभी लूट भले ही ले जायें, पर उनका यहाँ टिकने का साहस कभी नहीं हो सकता। महमूद गज़नवी-जैसा भयानक म्लेच्छ-सरदार हम चंदेलों के यशस्वी पूर्वज द्वारा पराजित किया जा चुका है।

जगनिक—यह ठीक है कि महमूद यहाँ पराजित हुआ, और उसने अर्थ-दंड देकर चंदेल-नरेश से संधि-याचना की, किन्तु इस पराजय से उसके आक्रमणों की बाढ़ कहाँ रुकी? कालिंजर में वह हारकर भी हताश नहीं हुआ, उसके लगभग दो ही वर्ष बाद उसने सोमनाथ का मंदिर लूटा और मूर्ति तोड़ी। इसका कारण यह है कि हमारे शत्रु हमारी आंतरिक दुर्बलता को समझ गए हैं।

मल्हना—हमारी वह आंतरिक दुर्बलता क्या है?

जगनिक—हम आपस में निरंतर लड़ते-कटते रहते हैं, और मिथ्याभिमान

Digitization by American Academy of Indic Studies (AAIS)(USA)

के कारण अपनी शक्ति का ठीक-ठीक अनुमान भी नहीं कर पाते। हमारी शक्ति राज्यों, प्रदेशों, जातियों, कुलों आदि में बिखरी हुई है, और हमारे शत्रु-सैनिक धार्मिक बंधुत्व की भावना के कारण दृढ़ सामाजिक एवं राजनीतिक एकता के सूत्र में बँधे हुए हैं। म्लेच्छों के आक्रमण को छोटा समझना हमारी राजनीतिक अदूरदर्शिता और मिथ्याभिमान मात्र है, माता! इस विषय पर फिर विचार किया जाएगा, इस समय तो हमें महोवे की सुरक्षा की समस्या सुलझानी है।

मल्हना—बेटा जगनिक, महोवे की रक्षा आल्हा-ऊदल के आये बिना संभव नहीं। उनको लौटाने के लिए मैंने जो प्रयत्न अब तक किये हैं, वे तो विफल रहे। हो सके, तो महोवे की जनता और जन्म-भूमि के नाम पर तुम एक प्रयत्न और करो। उनसे जाकर कहो, मल्हना देश के लिए अपने दूध का बदला माँगती है।

जगनिक—यही करूँगा, माँ! आज्ञा शिरोधार्य है।

ब्रह्माजीत—किंतु इस अवकाश में युद्ध तो रोका नहीं जा सकता।

कर्णजीत—इस समय हमारा सैन्य-बल क्षीणतम है। यदि तत्काल युद्ध हुआ, तो हमारा सर्वस्व स्वाहा हो जाएगा। परिणाम कुछ भी हो, हम दिल्लीश्वर के मांडलिक होकर संधि करना स्वीकार नहीं करेंगे।

जगनिक—(मल्हना से) माँ, इस संबंध में आपका क्या निश्चय है? मैं कन्नौज जाऊँगा, और इधर युद्ध तो होगा ही। यह संकट बनाफर-बंधुओं के आने तक कैसे टाला जाएगा?

मल्हना—यदि चौहान-नरेश एक पक्ष की युद्ध-विराम-संधि स्वीकार कर लें, तो महोवे की मान-रक्षा हो सकती है। तुम इसके लिए समुचित प्रयत्न करो।

जगनिक—उचित विचार है, माँ! चौहान-नरेश एक पक्ष-मात्र का अस्थायी युद्ध-विराम स्वीकार कर लें, इसके लिए मैं सब संभव प्रयत्न करूँगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मल्हना—जाओ बेटा, भगवान् तुम्हें सफलता प्रदान करें।

(जगनिक मल्हना के चरण छूकर जाते हैं।)

ब्रह्माजीत—क्या यह युद्ध-विराम-संधि की याचना हम चंदेलों के आत्म-सम्मान के प्रतिकूल नहीं ?

मल्हना—कदापि नहीं ! ऐसा होता रहा है; यह हमारे धर्म-युद्ध की सर्वसम्मत परिपाटी है।

कर्णजीत—क्या महोवे की प्रजा अपने राजा और राजपरिवार को क्लीव एवं कापुरुष नहीं समझेगी ?

मल्हना—प्रजा कहेगी कि हमारा राजपरिवार वीर होने के साथ-साथ विवेकवान भी है।

रणजीत—क्या चौहान-नरेश युद्ध-विराम-संधि स्वीकार कर महोवे पर विजय प्राप्त करने का यह अवसर चूकना पसंद करेंगे ?

मल्हना—यदि चौहान-नरेश सच्चे क्षत्रिय हैं, और क्षात्र-धर्म के मर्म को जानते हैं तो इस छोटी-सी बात को वह कदापि अस्वीकार नहीं करेंगे। अच्छा, अब तुम लोग भी जाओ, और अपनी प्रजा का विश्वास संपादित करो तथा अपना सैन्य-बल अधिकाधिक संगठित करने का प्रयत्न करो।

रणजीत—माँ, प्रजा से सैन्य-बल संगठित करने में हमें विशेष सहायता नहीं मिल पाती। कारण, लड़ते तो हैं केवल राजपूत। उनकी संख्या भी निरंतर कटते-मरते रहने के कारण कम ही होती जा रही है। इतर जनों में सैनिक वृत्ति ग्रहण करने की पात्रता नहीं। बड़ी कठिन समस्या है।

मल्हना—यह तो ठीक है।

(पट-परिवर्तन)

*

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीसरा दृश्य

समय—अपराह्न

स्थान—-महोवे से लगभग वीस कोस दूर खंडौत-नामक स्थान पर वेतवा के किनारे।

[महाराज पृथ्वीराज की विशाल वाहिनी की शिविर-श्रेणी। चारों ओर सेना का अनेक प्रकार का कोलाहल परिव्याप्त है। वीच में महाराज पृथ्वीराज का शिविर है, जिसकी चूड़ा पर स्वर्णकलश शोभित हैं। कलश पर उदित होते हुए सूर्य के वर्ण की परम प्रतापी चौहान-राजवंश की पताका लहरा रही है, जिस पर यज्ञ-कुंड से निकलनेवाली समिद्ध-अर्चियाँ अंकित हैं। इसी के निकट एक ओर छोटा शिविर है, जिसमें महाकवि चंद अपने आसन पर अकेले ही विराजमान हैं। उनके हाथ में लेखनी है, सामने लिखने के लिए भूर्जपत्र रखा है। इस समय वह कुछ लिख नहीं रहे, गहरे विचार में डूबे, किसी के आने की प्रतीक्षा करते हुए, प्रतीत होते हैं। उनकी दृष्टि बार-बार द्वार की ओर जाकर फिर लौट आती है। इसी समय सशस्त्र द्वार-रक्षक धीरे-से प्रवेश कर सैनिक-अभिवादन करता है।]

द्वार-रक्षक—महाकवि! महोबा-राज्य के कवि जगनिक दर्शनार्थ द्वार पर उपस्थित हैं। क्या आज्ञा है?

चंद—उन्हें ससम्मान ले आओ।

(दौवारिक आज्ञा पाकर चला जाता है।)

चंद—(स्वगत) महोवे के कवि का नाम तो मैंने सुन रखा है, पर कभी भेंट का अवसर नहीं मिला। हमारे महाराज की सभा को अलंकृत करने के लिए देश-देशांतर के कवि आते ही रहते हैं, पर जगनिक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वहाँ कभी नहीं गये। युद्ध-काल में आज उनके यहाँ आने का क्या अभिप्राय हो सकता है? क्या वह चंदेल-नरेश का संधि-प्रस्ताव लेकर आये हैं, अथवा उनका अभीष्ट कुछ और...

(दौवारिक जगनिक के साथ प्रवेश करता है और पुनः अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो जाता है। चंद जगनिक को आया देख उठकर खड़े हो जाते और स्वागतार्थ आगे बढ़ते हैं।)

जगनिक—मैं महोबे का कवि जगनिक आपको प्रणाम निवेदन करता हूँ। (हाथ जोड़ते हैं।)

चंद—(आगे बढ़कर उनको छाती से लगा लेते हैं।) पधारिए, पधारिए कवि-श्रेष्ठ! आपसे मिलकर मुझे असीम आनंद प्राप्त हुआ। इस कष्ट के लिए आभारी हूँ। कृपया आसन ग्रहण कीजिए।

(चंद जगनिक को आसंदी पर बैठाते हैं और स्वयं भी अपना आसन ग्रहण करते हैं।)

जगनिक—आपका शील आपकी देश-व्यापी प्रसिद्धि के अनुरूप ही है, महाकवि! आपके उदार सौजन्य ने मेरा हृदय जीत लिया है।

चंद—सेना का शिविर है, चारों ओर युद्ध की प्रलय-घटाएँ उमड़ रही हैं! कुसमय में मैं आपका क्या सत्कार करूँ, प्रतापी चंदेल-वंश के राज-कवि!

जगनिक—आपका सौहार्द कभी न भूल सकूँगा, कृतज्ञ हूँ। प्रारंभ में ही मेरा एक निवेदन है, मैं राजकवि नहीं हूँ महाकवि! किसी राजवंश या राजकीय व्यक्ति-विशेष से कवि-रूप में मेरा संबंध नहीं है। मैं तो महोबे की जनता का, इस धरती का एक साधारण कवि हूँ।

चंद—(उत्सुकता से) मैं आपकी बात नहीं समझ सका, कवि-श्रेष्ठ! क्या आप महोबे के चंदेल-वंशी महाराज परमाल के राजकवि नहीं हैं?

जगनिक—जी नहीं! एक बार परमोदार महाराज परमार्दिदेव (परमाल) ने मुझे अपना राजकवि बनाना अवश्य चाहा था। पर मैंने ही अपने-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आपको उस गौरव और उत्तरदायित्व के योग्य न पाकर वह असाधारण सम्मान स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट की । राज-कोष से मेरे लिए उन्होंने पुष्कल-वृत्ति भी नियत करनी चाही थी, पर वह भी मुझे ग्राह्य न हो सकी ।

चंद—आपने ऐसा क्यों किया ?

जगनिक—महाकवि, मेरा विश्वास है कि काव्य-रचना जीवन-यापन के लिए वरण किया गया कोई व्यापार नहीं, वस्तुतः वह लोकहित के लिए किया गया कवि का सर्वस्व दान है । इस दृष्टि से मुझे राजकवित्व अपने सहज कवि-कर्म में बाधक प्रतीत हुआ ।

चंद—राजकवित्व में आपको क्या दोष दिखलाई पड़े, कविवर ?

जगनिक—महाकवि ! मैं दुर्विनीत नहीं कि इस देश के इस समय के सबसे बड़े राजकवि के समक्ष राजकवित्व को दोष-युक्त कहूँ । पर, मैं यह अवश्य कहूँगा कि राजकवित्व की कुछ ऐसी मर्यादाएँ होती हैं, जिनके भीतर रहकर कवि को अपना लोकाराधन-कर्म संपादन करना कभी-कभी कठिन हो सकता है ।

चंद—यह कैसे ?

जगनिक—महाकवि, राजा और राजनीति जब तक लोकाराधन में निरत हैं, तभी तक उन्हें कवि की सपर्या एवं प्रशस्ति का अधिकार है । जब वे व्यक्तिनिष्ठ होकर अधिकार-लिप्सा का पर्याय बन जाते हैं, तब कवि का उनसे विमुख या विद्रोही हो जाना स्वाभाविक होता है । ऐसे अवसर पर राजकवित्व की निगड़ कवि की वैयक्तिक स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व-भावना को कुंठित कर सकती है । इसलिए राजकवित्व का गौरव मुझे सह्य और स्वीकार्य नहीं हो सका ।

चंद—आपकी वार्त्ता बड़ी विचारोत्तेजक है, कविवर ! मैं जानना चाहता हूँ, क्या आपका चंदेल-राजवंश से कोई संबंध नहीं ?

जगनिक—है क्यों नहीं महाकवि ! महाराज परमार्दिदेव मेरा बड़ा आदर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करते हैं, मुझ पर उनका अपार विश्वास और स्नेह है, और महारानी मल्हनादेवी के वात्सल्य का तो मेरा रोम-रोम ऋणी है। वह इस प्रदेश के सब असहायों, अनाथों, मातृ-पितृहीनों की ममतामयी धात्री हैं। इस प्रदेश के अन्यतम वीरश्रेष्ठ बनाफर उदयसिंह और मैं दोनों ही शैशव में निराश्रित-से हो गये थे। हम दोनों को ही महारानी ने अपना स्तन्य पिलाकर बड़े लाड़ से पाला है। चंदेल-राजवंश मुझे अपने परिवार का ही एक व्यक्ति मानता आया है, फिर भी मैं राजकवि नहीं हूँ। मेरे कवि पर राजसत्ता का कोई अंकुश या बंधन नहीं।

चंद—अर्थात् ?

जगनिक—अर्थात् यदि महोबे की राजसत्ता वर्तमान अथवा भविष्य में कभी विपथगामी हो जाय, तो उसके विरुद्ध खड़े होने का अपना अधिकार मैंने सुरक्षित रखा है।

चंद—राजसत्ता के विपथगामी होने की कल्पना से आँप आक्रांत प्रतीत होते हैं। ऐसा क्यों है, कविवर ?

जगनिक—आपका यह अनुमान सत्य है, महाकवि! पर मेरी आशंका निराधार नहीं। एक तो देश में एक सार्वभौम राजसत्ता नहीं रही, इसलिए देश की राजनीतिक शक्ति का विघटन और विकेंद्रीकरण हो गया है। देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया है, जिनमें निरंतर युद्ध होते रहते हैं। ये युद्ध भी किसी सिद्धांत के लिए नहीं, केवल राजाओं की वैयक्तिक अहंता की तुष्टि के लिए, अपने बल या शक्ति के प्रदर्शन-मात्र के लिए लड़े जाते हैं। इनसे देश के धन-जन का अपरिमित क्षय हो रहा है। इसी परिस्थिति में महमूद ग़ज़नवी ने देश को सत्रह बार लूटा, और उत्तर भारत की प्रायः सब राजशक्तियों को अपमानित किया। देव-मंदिरों का ध्वंस, सामूहिक नारी-धर्षण, गो, ब्राह्मण, बालक और वृद्ध सबका वध, उस बर्बर म्लेच्छ ने इस देश पर क्या-क्या अत्याचार नहीं किए ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फिर भी हमारे राजाओं का आत्मसम्मान नहीं जगा। अब मुहम्मद ग़ोरी के आक्रमण देश पर होने लगे हैं।

चंद—मुहम्मद ग़ोरी को तो कई बार हमारे महाराज ने पराजित किया, बंदी बनाया, और प्राण-भिक्षा माँगने पर क्षमा-दान किया है। उसकी आपको चिंता नहीं होनी चाहिए, कविवर !

जगनिक—यथार्थ है, महाकवि ! चौहानराज मूर्तिमान् शौर्य हैं, कीर्ति-सागर के युद्ध में मैंने प्रथम बार उनके दर्शन किये थे। लौह-धनुष धारण किए हुए उन्हें गजारूढ़ देख मुझे गांडीव-दुर्द्धर्ष सव्यसाची का स्मरण हो आया। मैं वह वीर-मूर्ति देखकर झूम उठा। सोचा, यदि इन्हें कृष्ण-जैसा कोई मार्ग-दर्शक मिला होता, तो…

चंद—तो क्या होता ?

जगनिक—तो इस देश का इतिहास बदल जाता, महाकवि ! देश में वैयक्तिक शौर्य की कमी नहीं है, पर इस शौर्य का दुरुपयोग आतंक-सृष्टि-मात्र के लिए हो रहा है। राजाओं की पारस्परिक असहिष्णुता चरम सीमा को पहुँच चुकी है, जिसके कारण देश में चतुर्दिक अकारण ही रणचंडी का तांडव होता रहता है। इन युद्धों में देश की क्षात्र-शक्ति निःशेष हुई जा रही है। आप ही सोचिए, देश के तेजस्वी तारुण्य को अपनी पारस्परिक कलह की वेदी पर बलि देकर ये राजा लोग किसकी शक्ति से महमूद ग़ज़नवी और मुहम्मद ग़ोरी जैसे विदेशी शत्रुओं का प्रतिरोध करेंगे ? कन्नौज आदि के युद्धों में आपके महाराज के जो प्रमुख वीराग्रणी सामंत काम आये हैं, क्या उनके स्थान की पूर्ति हो सकी ? अकाल में ही काल-कवलित होने-वाला राष्ट्र का अप्रतिम शौर्य क्या आपको व्यथित नहीं करता, महाकवि ?

चंद—(द्रवीभूत होकर) यथार्थ है, यथार्थ है। आप बड़े दूरदर्शी हैं, कवि ! आपका विवेक अत्यंत प्रबुद्ध है। मैं आपका संपूर्ण मंतव्य जान लेना चाहता हूँ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—महाकवि, निरंतर चलते रहनेवाले इन युद्धों में जो सैनिक क्षति हो रही है, उसकी पूर्ति जनता कर सकती थी; किंतु देश की साधारण जनता राजाओं के पारस्परिक युद्धों से उदासीन है। प्रजा में अपने राजाओं की नितांत व्यक्तिनिष्ठ राजनीति में न अभिरुचि है, और न उत्साह। राजाओं की अनियंत्रित विलास-परायणता और युद्ध-लिप्सा के कारण राजकोष का जो उच्छृङ्खल अपव्यय हो रहा है, उसके कारण प्रजा श्री-हीन हो रही है। उदासीन और श्री-हीन प्रजा राजा की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। वह इच्छा होते हुए भी अपने राजा की कुछ सहायता करने में समर्थ नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त सैनिक शिक्षा के अभाव में जनता अनुशासन-विहीन और निस्तेज है। प्रायः सौ वर्ष पूर्व इस देश में महाराज आनंदपाल और चंदेलराज गंड ने जन-साधारण का आह्वान कर महमूद ग़ज़नवी के प्रतिरोध के लिए विशाल सेनाएँ एकत्र की थीं, पर इन प्रशिक्षण और अनुशासनहीन सेनाओं से अभीष्ट लक्ष्य की सिद्धि कहाँ हो पाई? जब वीर खोक्करों ने अपनी विकट मार से ग़ज़नवी की सेना के पैर उखाड़ दिए थे, वह भागने ही वाली थी, उसी समय आनंदपाल के हाथी के चौंकने-मात्र से उनके द्वारा समाहृत वह विराट् जन-समूह टिड्डियों की तरह भाग खड़ा हुआ। पेशावर के मैदान में उस बार विजय निश्चित होते हुए भी राष्ट्र की प्रतिष्ठा का सूर्य अस्त हो गया।

चंद—आपने राष्ट्रीय जीवन की एक महत्त्वपूर्ण समस्या की ओर मेरा ध्यान खींचा है। कृपया अपनी बात पूरी कीजिए।

जगनिक—महाकवि, महमूद ग़ज़नवी के सत्रह आक्रमण इस देश पर इसीलिए सफल हो पाए, क्योंकि उसे भारतीयों की संगठित शक्ति का सामना कभी करना ही नहीं पड़ा। महमूद की विजय वस्तुतः उन राजाओं की व्यक्तिगत पराजय थी, जो इस विशाल देश को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटकर उन पर शासन के नाम पर स्वेच्छाचार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर रहे थे, और जो अपनी प्रजा के हार्दिक सहयोग से वंचित थे। मैं इसे देश की पराजय स्वीकार करने को तैयार नहीं। उसी प्रकार मुहम्मद ग़ोरी पर चौहान-सूर्य महाराज पृथ्वीराज की अनेक बार की विजय उनकी व्यक्तिगत विजय है, दुर्दांत विदेशी आक्रांतों पर यह राष्ट्र की संगठित शक्ति की विजय नहीं। इसलिए मेरी दृष्टि में यह विजय निरापद नहीं है।

चंद—(उत्सुकता से) ऐसा क्यों? ग़ोरी पर प्राप्त की गई महाराज की इस बार-बार की विजय को आप निरापद क्यों नहीं मानते?

जगनिक—कारण, धर्म के उन्माद में हमारे विदेशी शत्रु जितने शक्तिशाली और संगठित हो रहे हैं, स्वार्थजन्य विवाद के कारण हम उतने ही विघटित और शक्ति-हीन होते जाते हैं। म्लेच्छों की संगठन की शक्ति तो अपरिमित है, पर महाराज पृथ्वीराज की व्यक्तिगत सैनिक शक्ति तो परिमित ही है, भले ही उनका शौर्य अद्वितीय हो। शेष देश का सहयोग प्राप्त किए बिना वह प्रत्येक बार दूने वेग से होनेवाले म्लेच्छों के आक्रमण का विरोध अकेले कब तक कर सकेंगे, जब घरेलू युद्धों में ही उनकी शक्ति का क्षय निरन्तर होता जा रहा है? मुझे यह विश्वास नहीं कि अनेक बार पराजित होकर ग़ोरी निरस्त हो गया है। स्वभाव से ही अकृतज्ञ ये म्लेच्छ अवसर पाकर पुनः आक्रमण अवश्य करेंगे। पर यदि मैं यह भी मान लूं कि आपके महाराज के भय से ग़ोरी या उसके सहधर्मियों को उनके रहते इधर आंख उठाकर देखने का भी साहस नहीं होगा, तो भी मूल समस्या का कोई समाधान नहीं होता। महाराज के बाद क्या होगा, इस प्रश्न का कोई आशापूर्ण उत्तर नहीं मिल रहा। असंगठित और शक्तिहीन देश आक्रामकों को खुला आमंत्रण है, इसलिए मुझे भविष्य अंधकारपूर्ण प्रतीत होता है।

चंद—तो आपके विचार में क्या होना चाहिए?

जगनिक—होना तो यह चाहिए कि आपके महाराज देश को एक बार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फिर दृढ़ राजनीतिक संगठन के सूत्र में आबद्ध करने का प्रयत्न करें। उन्हें चंद्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त और यशोधर्मन-जैसे महान् पूर्वपुरुषों का आदर्श अपने सामने रखकर देश की निस्तेज अनेकता को प्रज्वलित एकता में परिणत करने की साधना करनी चाहिए। अभी समय है। देश को इस समय राष्ट्र-धर्म में दीक्षित असंख्य सैनिकों की आवश्यकता है। गाँव-गाँव में घर-घर जाकर देश-प्रेम की अलख जगाने की आवश्यकता है, जिससे हमारे देश की जनता कुल, जाति, वर्ण, संप्रदाय, प्रदेश और भाषा आदि के कृत्रिम भेदों के ऊपर उठकर एक हो सके, और कोटि-कोटि भुजाएँ आततायी आक्रांतों का मान-मर्दन करने के लिए सोत्साह शस्त्र हाथ में ले लें। ऐसी राष्ट्रीय सेना का अधिनायकत्व ग्रहण कर यदि महाराज पृथ्वीराज महोबा-जैसी राजधानियों को पद-दलित करने का संकल्प त्यागकर ग़ज़नी को धूलिसात् करने के लिए अभियान करें, तो सचमुच विदेशी बर्बरों को इस देश में कभी पैर रखने का भी साहस न हो। परम प्रतापी मौर्य सम्राट् चंद्रगुप्त ने इस देश की सीमा को मध्य-जंबूद्वीप तक विस्तृत कर दिया था, फिर शताब्दियों तक दुर्दांत यवनों को इधर आँख उठाकर देखने का साहस नहीं हुआ था। प्रतापी गुप्त सम्राटों ने भी देश की इन्हीं सीमाओं का पुनरुद्धार और संरक्षण किया था। अपने महाराज से कहिए, ग़ज़नी और बग़दाद को अपने अचूक तीरों का लक्ष्य बनावें, दजला और फ़रात में उनकी तलवार के पानी की बाढ़ आनी चाहिए। गंगा, यमुना और बेतवा को रक्त-रंजित करने से क्या लाभ ?

चंद—बड़ा महान् और सम्मोहक है आपका स्वप्न, कवि ! पर क्या यह संभव है ? क्या इस देश के नृपतिगण वैयक्तिक स्पर्धा का परित्याग कर एक झंडे के नीचे समवेत हो सकेंगे ? आप महाराज जयचंद और हमारे महाराज की पारस्परिक कलह के विषय में तो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जानते ही हैं, अन्यों की भी प्रायः यही अवस्था है।

जगनिक—कार्य बहुत कठिन है, महाकवि ! इसमें कोई संदेह नहीं, पर प्रयत्न तो होना ही चाहिए। अपने महाराज को इस ओर अग्रसर होने की प्रेरणा तो दीजिए। उनसे कहिए, वह अपने ही देश के नरसिंहों का आखेट कृपया बंद कर दें, इसमें उनकी अपनी भी क्षति है। भगवान् न करें, कभी उनको इसके लिए पश्चात्ताप करना पड़े। अभी कुछ ही दिन पूर्व उन्होंने सिरसा के वीरवर मलखान का युद्ध में वध किया है। ऐसी विजयों से महाराज को क्या मिलता है ? यदि मलखान-जैसे देश के प्रमुख वीर महाराज के अनुयायी होते, यदि महोबा-जैसी राज-शक्तियाँ उनके साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर खड़ी होतीं, तो देश में कैसी अपराजेय शक्ति का आविर्भाव होता ? इसकी कल्पना कीजिए, महाकवि ! उस समय आप अपने महाराज के शौर्य की जो कथा लिखते, वह...वह !

चंद—(उल्लसित होकर) ओह ! सचमुच बड़ी उन्मादक है यह कल्पना ! आपने मेरी हृत्तंत्री के किसी अज्ञात तार को छू दिया है। जब आपकी सामान्य वार्ता में इतनी स्फूर्ति है, तो आपकी कविता तो ओज-तेज का प्रस्रवण ही होगी।

जगनिक—महाकवे ! मेरी कविता...मेरी कविता तो इस प्रदेश की जनता की कविता है, उसमें आप-जैसे महाकवि की प्रशंसा पाने की पात्रता कहाँ ? मेरी काव्य-प्रेरणा की स्रोत हैं विंध्याचल की ये अडिग उन्नत पहाड़ियाँ, यह अनंत प्रवाहिनी गर्वीली वेतवा, अरण्य-गहन यह वीर-प्रसू धरती और इस धरती के पुत्र सब स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध। इस धरती के दो पुत्रों में इस समय शौर्य और विनय चरम उत्कर्ष को प्राप्त हैं। मेरी दृष्टि में वे सदेह क्षात्र-धर्म हैं। जब मेरा मन मानव की महिमा से अभिभूत होकर कुछ गाने के लिए उल्लसित हो उठता है, तब मैं इन्हीं दो वीरों की कृति-कीर्ति गा-गाकर सबको सुनाता हूँ। मेरी कविता में इस प्रदेश के कृषक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और श्रमिक रस लेते हैं, आप-जैसे सुधी-जनों के लिए इसमें क्या है ?

चंद—ऐसे वे कौन वीर हैं, जिनके उदात्त जीवनादर्श ने आपकी सरस्वती को इतनी रसवती बना रखा है ?

जगनिक—वे कोई राजा या राजकुमार नहीं, महाकवि ! वे तो मेरे ही जैसे साधारण परिवार के क्षत्रिय-कुमार हैं। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो इस युग में डूबते हुए क्षात्र-धर्म ने अपनी दोनों बाँहें फैलाकर उन्हीं दोनों का आश्रय पा लिया है। वे हैं आल्हा और ऊदल नाम के दो अप्रतिम नर-रत्न, जिनको देश के सब राजवंशी क्षत्रियों और अन्य उच्च वर्णवालों ने दंभ और द्वेष-वश हीन एवं अकुलीन घोषित कर रखा है। उनका बनाफर-वंश इसलिये नीच ठहराया गया है कि समर्थ होते हुए भी उनके पूर्व-पुरुषों ने किसी राज्य की स्थापना नहीं की। दुर्भाग्य से आज हमारे देश में निर्धनता और अकुलीनता एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। प्रतापी बनाफर-बंधु चाहते, तो अब तक वे भी एक विशाल राज्य का अर्जन और संस्थापन कर डालते, पर उनका वीरत्व त्याग की भूमि पर प्रतिष्ठित है। उत्तर भारत के अनेक शक्तिशाली राजाओं का मान भंग करनेवाले इन महावीरों ने कभी किसी का राज्य नहीं छीना, किसी को अपदस्थ नहीं किया। उनकी तलवार केवल अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध उठती है, आर्ति के अंधकार में उनका अमोघ खड्ग विद्युत गति से आलोकित हो उठता है। हमारे इस प्रदेश में बनाफर-बंधु परदुख-भंजन कहे जाते हैं। यहाँ की पुत्रहीनाएँ उनके कारण अपने को पुत्रवान् मानती हैं, तथा सब बहू-बेटियाँ उन्हें अपनी मर्यादा का रक्षक भाई समझती हैं। उनके घोड़े की टाप जन-मानस में मृदंग की थाप बनकर प्रतिध्वनित होती है, उनका शौर्य हमारी जनता के जीवन का मधुरतम संगीत है। मैं भी कभी-कभी स्वांतःसुखाय उसी स्वर में अपना स्वर

Digitization by American Academy of Indic Studies (AAIS)(USA)

मिलाकर गा लेता हूँ।

चंद—ठीक है, बनाफरों का यश हमारे महाराज के कानों तक पहुँचा है। मैं जानता हूँ, उन्हें भी बनाफर-बंधुओं का युद्ध-कौशल देखने की उत्कंठा है।

जगनिक—उन्हीं के चचेरे भाई मलखान का युद्ध-कौशल तो आपके महाराज अभी कुछ दिन पूर्व सिरसा के युद्ध में देख चुके हैं। उन्होंने वीरगति तो पाई, पर···! किन्तु बीते हुए का क्या सोच! हाँ, पिछले कीर्तिसागर के युद्ध में योगी के वेश में जिन्होंने आपके प्रमुख सामंत और सेनापति चामुंडराय का मान-मर्दन कर उनके बंधन से चंदेल राजकुमारी चंद्रावली का उद्धार किया था, वे छद्मवेशधारी छोटे बनाफर उदयसिंह ही तो थे। उन्हीं के योगी वेशधारी अनुयायियों के सामयिक आगमन और प्रबल पराक्रम ने ही तो आपके महाराज को महोबे का वह पहला घेरा उठा लेने को बाध्य कर दिया था।

चंद—ओह, उन योगियों का रहस्य आज खुला। हमारे महाराज तो साधु-संन्यासियों से लड़ना ठीक न समझकर ही लौट गए थे। निस्संदेह उस युद्ध में योगियों के नायक ने अलौकिक शौर्य प्रदर्शित किया था, चामुंडराय स्वीकार करते हैं कि ऐसे प्रबल प्रतिपक्षी का सामना उन्हें जीवन में कभी नहीं करना पड़ा।

जगनिक—इतना ही नहीं, उनके घोड़े की टाप आपके महाराज के विश्रुत गजेंद्र आदिभयंकर के मस्तक पर भी बजी थी। पर विनय की मूर्ति वीरवर ऊदल ने सहज श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आपके महाराज के शरीर पर कोई प्रहार नहीं किया था, केवल अपनी तलवार से उन्हें सैनिक अभिवादन अर्पित कर वहाँ से लौट गए थे।

चंद—यह भी ठीक है, कविवर! मैंने स्वयं वह रोमांचकारी दृश्य देखा था! किन्तु सुना है, बनाफर-बंधु अब महोबे में नहीं हैं, उन्हें चंदेलराज परमार्दिदेव ने अपने राज्य से निर्वासित कर दिया है?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—यह सत्य है, महाकवि ! इसीलिए महोबा आज दीन और अनाथ है।

चंद—तो क्या इसीलिए आप महोवे से संधि का प्रस्ताव लेकर पधारे हैं, कवि-श्रेष्ठ !

जगनिक—नहीं, महाकवि ! आपके महाराज ने अपनी जो माँगें रखी हैं, उनका स्वीकार करना चंदेल-वंश और महोबा-राज्य की मर्यादा के प्रतिकूल है। इसलिए संधि-वार्ता का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ, महारानी का एक अनुरोध अवश्य है। उसे यदि आप अपने महाराज से स्वीकार करा सकें, तो बड़ी कृपा हो।

चंद—वह क्या है ? यथाशक्ति मैं आपकी सहायता और आपकी महारानी की सेवा करने का प्रयत्न करूँगा।

जगनिक—हमारी महारानी केवल पंद्रह दिन का युद्ध-विराम चाहती हैं। पंद्रह दिन के इस अवकाश के पश्चात् आपके महाराज जैसे चाहें वैसे आक्रमण और युद्ध करें।

चंद—(हँसकर) मैं समझ गया। इस अवकाश में आप बनाफर-बंधुओं को महोबा लौटा लाने का प्रयत्न करेंगे।

जगनिक—कह नहीं सकता, महारानी की क्या योजना है ? वैसे बनाफर-बंधुओं को लौटा लाने के अब तक जो प्रयत्न हुए, वे तो विफल ही रहे। अपमान की आग से जले हुए वे इस समय कन्नौज-राज्य के अंतर्गत रिजगिरि-नामक स्थान में रह रहे हैं। जयचंद की शक्ति के इस समय वे प्रमुख स्तंभ हैं। इसलिए कनौज-नरेश न तो उनके लौटने की अनुमति ही देते हैं, और न वे स्वयं लौटना ही चाहते हैं।

चंद—(पुनः हँसकर) पर वे आपके अनुरोध से अवश्य लौटेंगे, कवि की वाणी का प्रभाव अव्यर्थ होता है। आपकी विदुषी महारानी पंद्रह दिन के युद्ध-विराम में आपको रिजगिरि भेजकर आल्हा-ऊदल को मनाने का प्रयत्न करेंगी, उनकी यही योजना है।

जगनिक—हो सकता है, यही हो। तो क्या आप आल्हा-ऊदल के लौट

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

आने की आशंका से महारानी का अनुरोध स्वीकार कराने में सहायक न होंगे ?

चंद—नहीं, नहीं ! आप अपने मन में संदेह को स्थान न दें। यदि युद्ध-विराम-प्रस्ताव महाराज परमार्दिदेव की ओर से आया होता, तो संभव है, हमारे महाराज उसे अस्वीकार कर देते। पर हमारे महाराज क्षात्र-धर्म की मूर्ति हैं, वह महारानी मल्हनादेवी का अनुरोध अवश्य स्वीकार करेंगे। आप जाकर महारानी को आश्वस्त कीजिए, चंद की वाणी पृथ्वीराज का हृदय है।

जगनिक—यही विश्वास कर मैं सीधा महाराज के पास न जाकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। इस कृपा के लिए महोवे की महारानी आपकी चिरऋणी रहेंगी, महाकवि !

चंद—कवि-श्रेष्ठ, आप पूर्ण प्रत्यय के साथ पधारिए। अपनी पुण्यशीला महारानी के चरणों में मेरा प्रणाम निवेदन कीजिए, और कहिए कि अगले पक्ष में युद्ध नहीं होगा। इस समय का वह जैसा चाहें, वैसा उपयोग करें। इस अवकाश में हमारे महाराज बेतवा के वनों में आखेट करेंगे।

जगनिक—(उठकर) धन्य, धन्य, महाकवि ! पर देश की वर्तमान अवस्था के विषय में मेरा निवेदन···

चंद—हाँ, उसे भी मैं यथावकाश महाराज के कानों में डालने का प्रयत्न करूँगा।

(जगनिक अभिवादन करते हैं। पर्दा गिरता है।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा दृश्य

समय—प्रभात

स्थान—वही

[महाराज पृथ्वीराज आखेट में जाने के लिए तैयार होकर अपने शिविर के बाहर आए हैं। उनके साथ महाकवि चंद और कतिपय अन्य सामंत भी हैं। इसी समय उरई के अधिपति माहिल आते हुए दिखाई देते हैं। उनका शरीर स्थूल और व्यक्तित्व चिंता के कारण अस्त-व्यस्त है।]

एक सामंत—देव ! देखिए ! यह माहिलजी आ रहे हैं आखेट में चलने के पूर्व यह अपशकुन हो गया। दिन अच्छा नहीं बीतेगा।

(माहिल प्रवेश कर महाराज पृथ्वीराज को अभिवादन करते हैं।)

चंद—देखो बन्धु, उरई-नरेश के दोनों नेत्र उन्निद्र पद्म के समान प्रकाश-मान हैं, इनके दर्शन से अपशकुन की आशंका क्यों ? सघट और सबाल सौभाग्यवती स्त्री का मिलना जितना मांगलिक होता है, उतना ही मांगलिक है इन उरई-नरेश का पुण्य दर्शन। **(माहिल से)** अहोभाग्य ! पधारिए, पधारिए !

दूसरा सामंत—आप ठीक कहते हैं, महाकवि ! वायस और लोम का दर्शन भी हमें मानो एक साथ ही हो गया है, हमारे माहिल महाराज देहधारी शुभ शकुन हैं।

तीसरा सामंत—भक्तराज देवर्षि नारद की सुर-नर-वंदित चरण-पादुकाओं के समान हमारे महाराज भी परानुग्रहकांक्षा से निरंतर परिव्राजक बने रहते हैं। आपकी चिंताकुल करुण-श्रीमंडित मुखच्छवि यह बता रही है कि आप किसी परोपकार-भावना से अत्यन्त अभिभूत हैं। कोई परम हितकारी नया समाचार मिलने ही वाला है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

पृथ्वीराज—(स्मित हास के साथ) पधारिए उरई-नरेश ! आपसे मिलने की बड़ी उत्कंठा थी। आज आप कुछ विशेष चिंतित प्रतीत होते हैं। चलिए; मेरे साथ मृगया का आनन्द लीजिए, आपकी सब चिंता दूर हो जाय।

पहला सामंत—किसी पर यम कुपित प्रतीत होते हैं, तभी माहिल महाराज इतने चिन्तित हैं।

माहिल—महाराज, आपको मृगया और आपके सामंतों को विनोद की सूझी है, आपने इस परदेश में आकर जो संकट मोल ले लिया है, उसकी चिन्ता किसी को नहीं।

चंद—धरती शेषनाग ही धारण करते हैं, महाराज ! वह सामर्थ्य भूमि-नागों में नहीं। उसी प्रकार हमारे महाराज के योग-क्षेम की चिन्ता का भार तो सदैव से आप पर ही रहा है, हम-जैसों में उसके वहन करने की पात्रता कहां ?

माहिल—(प्रसन्न होकर) आप मुझे असाधारण गौरव प्रदान कर रहे हैं, महाकवि ! अवश्य मैं दिल्ली-नरेश का एक विनीत शुभचिंतक हूँ, इसीलिए प्रातःकाल होते ही दौड़ा आया हूँ। एक बड़ी भारी भूल हो गई है, उसी की सूचना देनी है।

दूसरा सामंत—भूल ही संसार का मूल है, उसी का नाम है माया। आप-जैसे गुरुजनों का मार्ग-दर्शन पाकर माया का आवरण भंग हो जाता है, तो एक छोटी-सी भूल भी सुधर ही जायगी। आपकी कृपा बनी रहनी चाहिए।

माहिल—नहीं भाई, यह कोई छोटी बात नहीं। आप स्थिति की गम्भीरता समझ नहीं पा रहे हैं।

तीसरा सामंत—जब आप-जैसा महावीर उद्विग्न और भयभीत है, तब तो कोई बड़े संकट की बात अवश्य है।

पहला सामंत—हां-हां, है कोई बड़ी भयंकर बात ! या तो आकाश टूटेगा या धरती फटेगी। संकट आने पर मैं तो माहिल महाराज

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

की उरई में ही शरण ग्रहण करूँगा। वहाँ स्थान तो मिल ही जायगा, महाराज ?

माहिल—(हँसकर) क्यों नहीं, मेरे रनिवास में आप-जैसों के लिए स्थान-ही-स्थान है। (सब हँसते हैं।)

चंद—उरई-नरेश कभी असत्य भाषण नहीं करते। मैंने भी सुना है कि उरई का रनिवास वहाँ की सेना से भी अधिक शक्तिशाली है। (सब लोग अट्टहास करते हैं।)

पृथ्वीराज—उरई-नरेश, आप मेरे अन्यतम सुहृदों में से हैं। कहिए, बात क्या है ?

माहिल—महाराज, आपने महोबा वालों की पन्द्रह दिन की युद्ध-विराम की प्रार्थना स्वीकार कर भारी भूल की है।

पृथ्वीराज—यह कैसे ?

माहिल—महोबे की रानी मल्हनादेवी ने कवि जगनिक को आल्हा-ऊदल को मना लाने के लिए कन्नौज भेजा है।

पृथ्वीराज—मैंने सुना है, वे दोनों भाई परमाल के अपमानपूर्ण व्यवहार से अत्यन्त असंतुष्ट हैं, कई बार अनुरोधपूर्वक बुलाने पर भी नहीं लौटे। अब उनका महोबा आना कठिम ही है, अपमानित क्षत्रिय शिथिल-संकल्प नहीं हुआ करते।

माहिल—यह तो ठीक है, महाराज! पर अभी तक उन्हें बुलाने जगनिक कभी नहीं गए। बड़ा विचित्र है यह कवि जगनिक, उसकी वाणी में अलौकिक ओज और माधुर्य है। जब वह बोलता या गाता है, तो पहाड़ डिग जाते हैं, बेतवा की धारा स्तंभित हो उठती है, और जनता तो विक्षुब्ध सिन्धु की तरह भाव-तरंगों में आलोड़ित होने लगती है। उनका अनुरोध आल्हा टाल न पाएँगे।

पृथ्वीराज—तो भी चिन्ता क्या ? उन्हें आने दीजिए। मैं भी देखूंगा, बनाफरों की तलवार में कितनी धार है।

माहिल—महाराज, अविनय क्षमा हो। बनाफरों के लौट आने पर महोबे

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

पर विजय प्राप्त करना असम्भव हो जाएगा।

पृथ्वीराज—असंभव को सम्भव बनाना ही वीरों का काम है, राजन्! अब मैं अपना वचन भंग नहीं कर सकता (किंचित् मुस्कराकर) फिर आप-जैसे शुभैषी के रहते मैं भय का कोई कारण नहीं देखता।

पहला सामंत—आप तो सहस्र-बुद्धि हैं, उरई-नरेश! आल्हा-ऊदल न लौटें, इसके लिए आप ही कोई उपाय कीजिए।

दूसरा सामंत—क्यों नहीं! हमारे उरई-नरेश के लिए कुछ भी अशक्य या असाध्य नहीं। उनकी अनन्त-उर्वरा बुद्धि इसके लिए उपयुक्त उपाय का प्रसव भी अवश्य करेगी।

माहिल—(**प्रसन्न होकर**) आप लोगों का मुझ पर अपार विश्वास है, इसके लिए कृतज्ञ हूँ। इस गाढ़े समय में मैं महाराज की सेवा का कोई उपाय करूँगा अवश्य।

चंद—हाँ महाराज, मैत्री-धर्म तो यही है। क्या सूझ गया कोई उपाय?

माहिल—(**अधिक प्रसन्न होकर**) हाँ, सूझ गया, सूझ गया उपाय! मैं अभी कन्नोज जाऊँगा, और महाराज जयचन्द से कहूँगा कि वह आल्हा-ऊदल को महोबा न लौटने दें। इतने दिन दोनों भाइयों ने कन्नोज के राजकोष के बल पर ही वहाँ राजकीय ऐश्वर्य भोग किया है। मैं कान्यकुब्ज-नरेश से कहूँगा कि महोबा लौटने की अनुमति देने के पूर्व उनसे एक-एक कौड़ी का हिसाब ले लें।

तीसरा सामंत—यदि दोनों भाइयों ने महाराज जयचन्द का हिसाब दे दिया, तो!

माहिल—कहाँ से दे देंगे? अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् उन दोनों भाइयों के पास जो कुछ बचता है, उसे वे दीन-दुखियों में बाँट देते हैं। अपने पास वे कुछ संग्रह तो करते ही नहीं। यदि वे महोबा लौटने को तैयार हो गए, तो भी बुरे फँसेंगे।

पहला सामंत—आपका उपाय तो अचूक ही प्रतीत होता है। अच्छा, शीघ्रता कीजिए महाराज! हम लोगों को भी आखेट के लिए

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विलम्ब हो रहा है।

माहिल—ठीक है, मैं तुरन्त जाता हूँ। (**महाराज पृथ्वीराज को अभिवादन कर जाने लगते हैं।**)

पहला सामंत—सुनिए उरई-नरेश! यदि आपका यह कौशल काम न आए, तो सिरसा वाली युक्ति से काम लीजिएगा। आल्हा-ऊदल के प्रत्यावर्तन के मार्ग में गहरी खाइयां खुदवा दीजिएगा, मलखान की तरह सब-के-सब उसमें गिरकर मर जाएंगे।

माहिल—आपका सुझाव ठीक है। जगनिक के मार्ग में मैं बीच में ही रुकावट डालने का प्रयत्न अवश्य करूंगा।

(**सब लोग हंसते हैं। माहिल घूमकर देखते हैं, फिर नीचा सिर किये हुए चले जाते हैं।**)

पृथ्वीराज—महाकवि, सचमुच इस माहिल के कहने से चामुंडराय ने जिस प्रकार छल से मलखान का वध किया, उसका मुझे दुःख है, लज्जा भी। यह अवीरोचित व्यवहार हुआ।

चंद—ठीक है, महाराज!

(**सब आखेट को चले जाते हैं।**)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

समय—लगभग मध्याह्न

स्थान—कुड़हिर के राजा गंगाधर के भवन का एक सुसज्जित कक्ष

[राजा गंगाधर एक शय्या पर मसनद के सहारे बैठे हैं। उनकी रानी शशिरेखादेवी निकट ही एक आसंदी पर बैठी व्यजन झल रही हैं। वे आपस में वार्तालाप कर रहे हैं। दोनों की मुद्रा गंभीर है।]

शशिरेखा—महाराज, मेरा यह निश्चित मत है कि आप उरई के राजा माहिल के कुचक्र में कदापि सहयोग न करें।

राजा गंगाधर—रानी, यह राजनीति है। इसे आप कुचक्र क्यों कहती हैं?

शशिरेखा—महाराज, माहिल-जैसे पिशुन एवं घोर ईर्ष्या-द्वेष-परायण व्यक्ति की प्रेरणा से प्रवंचना और प्रतारणा को आश्रय देना कुचक्र नहीं तो और क्या है? महोवे के राजवंश से कभी आपकी शत्रुता नहीं रही, फिर भी आप वहां के राजदूत के कार्य में कपटाचरण द्वारा बाधक होना चाहते हैं। इस प्रकार एक मित्र-राज्य से अकारण कलह करने को आप राजनीति कहते हैं?

गंगाधर—प्रिये, माहिल ने लिखा है कि मेरे इस कार्य से दिल्लीपति महाराज पृथ्वीराज प्रसन्न होंगे। महोबा इस समय निर्बल है। उस पर विजय प्राप्त करने में अद्वितीय बलशाली चौहान-नरेश से शक्ति-भर सहयोग करके क्या कुड़हिर-जैसा छोटा राज्य अपने अभ्युदय का पथ प्रशस्त नहीं करेगा? बलवान् की प्रीति अर्जित करते चलना ही

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तो राजनीति का सार है।

शशिरेखा—देव, आपका कथन एकांगी है। शक्तिमान् की मैत्री अर्जित करने का उद्देश्य दुर्बल को अकारण सताना नहीं। यह बड़ा अनैतिक कार्य है। उच्च राजनीति कभी अनैतिक नहीं होती।

गंगाधर—(हँसकर) राजनीति में हर समय नैतिकता का ध्यान नहीं रखा जा सकता, देवी! राजनीति यथार्थ की धरती का फल है, आदर्श के आकाश का कुसुम नहीं। प्राचीन काल में भी हमारी राजनीति के आप्त-से-आप्त संचालकों ने अनैतिक माने जानेवाले कार्य किए हैं।

शशिरेखा—यह आपका भ्रम है, देव! आपका संकेत कदाचित् भगवान् कृष्ण और महान् चाणक्य-जैसे राजनीतिज्ञों की ओर है, किंतु उन लोगों ने अपने परमोच्च आध्यात्मिक जीवन में कभी अनैतिकता को स्थान नहीं दिया। आपाततः अनैतिक प्रतीत होनेवाले उनके कार्यों का लक्ष्य था अधर्म का ध्वंस, अन्याय का दमन एवं अनैतिकता का उन्मूलन। उनका राजनीति का उद्देश्य था लोक-कल्याण; वे व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना से सर्वथा शून्य थे। किंतु आप जिसे राजनीति कहते हैं, उसका उद्देश्य है वैयक्तिक स्वार्थ-साधन-मात्र। महाराज, पितृगृह में मेरे विद्यावयोवृद्ध गुरुदेव ने मुझे बताया था कि जब किसी देश के राजनीतिज्ञ स्वार्थी हो जाते हैं, तो उसका पतन अवश्य हो जाता है।

गंगाधर—प्रिये, तर्क में भले ही मैं तुम्हें पराजित न कर सकूं, किंतु मुझे दिल्ली-नरेश की मैत्री में लाभ-ही-लाभ दिखाई देता है। माहिल ने लिखा है कि यदि मैं महोबे के राजदूत जगनिक को कुछ दिन तक कन्नौज जाने से रोक सका, तो वह मेरा बड़ा उपकार मानेंगे। जगनिक महोबे के युवराज ब्रह्माजीत के घोड़े हरनागर पर कन्नौज जा रहे है, वह इस समय के सर्वश्रेष्ठ अश्वों में है। दिल्ली-नरेश ने महोबे से संधि की जो शर्तें रखी हैं, उनमें से एक इस घोड़े की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

माँग भी है।

शशिरेखा—मुझे माहिल की इस बात में विश्वास नहीं। अभी तो साँडनी-सवार उनका पत्र लेकर आया है, उन्होंने भी शीघ्र-से-शीघ्र आने को लिखा है। तब परीक्षा हो जायगी। मैं यह नहीं मान सकती कि इस युग के भारत के अद्वितीय वीर महाराज पृथ्वीराज आपके इस कपटाचरण से प्रसन्न होंगे। मुझे इसमें माहिल की ही दुर्नीति दिखाई पड़ती है।

(इसी समय किसी की पदचाप सुनाई पड़ती है।)

गंगाधर—कौन है? क्या राजसिंह?

राजसिंह—**(प्रवेश करके)** मैं ही हूँ अन्नदाता!

गंगाधर—क्या समाचार है?

राजसिंह—महोबे के राजदूत जगनिक आ गए हैं, महाराज!

गंगाधर—वह कहाँ हैं?

राजसिंह—वह पांथशाला के सामनेवाले वट-वृक्ष के नीचे श्रांति-निवारण के निमित्त कुछ काल के लिए ठहरे हुए हैं, देव!

गंगाधर—तुमने उन्हें राजभवन में आने का निमंत्रण नहीं दिया?

राजसिंह—महाराज, आज्ञानुसार मैंने उन्हें अत्यन्त आदरपूर्वक निमंत्रित किया। मैंने उनसे प्रार्थना की कि महोबे के राजपुरुष के आतिथ्य का अवसर प्राप्त कर हमारे महाराज हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव करेंगे, आप राजभवन में पधारकर यथेच्छ विश्राम लाभ करें। किंतु उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की।

गंगाधर—**(आश्चर्य से)** उन्होंने क्या कहा?

राजसिंह—उन्होंने कहा कि मैं आपके महाराज की उदारता के लिए आभारी हूं। भविष्य में यदि भगवान् ने कभी कोई अवसर दिया, तो मैं उनके दर्शन भी कर लूंगा। किंतु इस समय मुझे अवकाश नहीं, विशेषतः मुझे विश्राम की आवश्यकता भी नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि आप अपने महाराज को बतला दें कि मैं कवि हूँ, और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कवि जब राजभवनों में विश्राम करने लगता है, तो देश सो जाता है, धर्म पर विपत्ति के काले बादल छा जाते हैं, और समाज विपथगामी हो जाता है।

शशिरेखा—धन्य ! धन्य !

गंगाधर—बड़ा विचित्र है महोबे का यह कवि ! मेरी तो उससे मिलकर बात करने की इच्छा होती है।

राजसिंह—सचमुच महोबे के वह कवि बड़े विचित्र हैं, देव ! उनकी वाणी और व्यक्तित्व सबमें अद्भुत आकर्षण है। उन थोड़े ही क्षणों में लोग उनको देखने और उनकी बात सुनने के लिए वट-वृक्ष के नीचे इकट्ठे होने लगे थे।

गंगाधर—तो क्या मैं स्वयं चलकर उन्हें राजभवन में आने के लिए निमंत्रित करूँ ?

शशिरेखा—देव, आप उन्हें राजभवन में अवश्य लाएँ। माहिल द्वारा आयोजित कपटाचरण के लिए नहीं, अपितु सच्चे आतिथ्य के लिए।

राजसिंह—महाराज, मेरा अनुमान है, वह चले गए होंगे। जल पीकर उनका तुरंत चल देने का विचार था।

गंगाधर—अच्छा, तुम जाकर उन्हें देखो। यदि हों, तो तुरंत मुझे सूचित करो।

राजसिंह—जो आज्ञा। (अभिवादन कर शीघ्रतापूर्वक जाता है।)

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा दृश्य

समय—सायंकाल, सूर्य अस्त होनेवाला है।

स्थान—कन्नौज के निकट रिजगिरि-नामक ग्राम, उसमें गंगा-तट पर स्थित आल्हा-ऊदल की गढ़ी।

[गढ़ी की बाहरी बैठक में आल्हा, ऊदल, इंदल और जगनिक बैठे हैं। दो परिचारक दोनों ओर से वृंत का व्यजन झल रहे हैं। सब लोग बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं। जगनिक का शरीर पसीने से श्लथ एवं वस्त्र तथा वेश धूलि-धूमरित हैं। प्रतीत होता है, वे अभी-अभी अपनी यात्रा समाप्त कर रिजगिरि पहुँचे हैं।]

आल्हा—भैया जगनिक, तुमसे भेंट कर आज मुझे अनंत सुख और अपूर्व शांति मिली है, मानो हमने वर्षों से छूटी हुई महोबे की अपनी जन्म-भूमि के दर्शन पा लिए हैं। (कंठ भर जाता है।)

ऊदल—सचमुच दादा, भाई जगनिक महोबे की धरती के सब पुण्य-संस्कारों का सार लेकर आए हैं। इनको देखकर हृदय उच्छ्वसित हो उठा है। (आँसू भर आते हैं। उठकर, आवेश से जगनिक को हृदय से लगा लेते हैं। दोनों एक बार फिर बड़े प्रेम से गले मिलते हैं।)

इंदल—(ऊदल से) काका, जगनिक चाचा यात्रा में बहुत थक गए होंगे। उनके घोड़े की श्रांतावस्था देखकर अनुमान होता है, चाचा ने दिन-रात बिना कहीं विश्राम किए यात्रा की है।

ऊदल—(जगनिक को छोड़कर) ठीक कहते हो, बेटा! स्नेह के आवेग में हम लोगों का उधर ध्यान ही नही गया।

आल्हा—भैया जगनिक ने दिन-रात बिना रुके यात्रा की है, यह तो इनकी शारीरिक अवस्था से ही प्रकट है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—सत्य है दादा ! महोवे से चलकर जल पीने के लिए कुछ क्षण केवल कुड़हर में रुका था, और अब यहीं आकर मैंने अपनी फेंट खोली है।

आल्हा—तुम्हें ऐसी जल्दी क्या थी, भैया ! महोवे में सब कुशल तो है ?

इंदल—पिताजी, चाचा वहुत थके हैं। वह पहले कुछ भोजन-विश्राम कर लें, तब विशेष वार्तालाप क्यों न किया जाय ?

आल्हा—ठीक कहते हो, इंदल।

जगनिक—(इंदल से) नहीं वेटा, दादा से अपनी बात कह लेने के बाद ही विश्राम करूँगा।

आल्हा—जगनिक भैया, तुमने मेरी उद्विग्नता वढ़ा दी है, शीघ्र महोवे का वृत्त कहो।

जगनिक—दादा, मैं चंदेल लक्ष्मी महारानी मल्हनादेवी का संदेश लेकर आपके पास आया हूँ।

आल्हा—क्या कहा है उन ममतामयी ने ? महोबा छूटने पर सबसे बड़ा दुख इसी बात का रहा है कि उन महिमामयी के स्नेह की शीतल छाया से हम वंचित हो गए ! उनका स्तन्य हमारे रोम-रोम में रमा है।

जगनिक—दादा, उन्हीं माता मल्हनादेवी ने मुझे आग्रहपूर्वक आपको वुलाने भेजा है।

आल्हा और ऊदल—(एक साथ आश्चर्य से) माता मल्हनादेवी ने हमें वुलाने भेजा है ? यह तुम क्या कह रहे हो, भैया ?

जगनिक—ठीक कह रहा हूँ, दादा। उन्हीं की ओर से मैं आज आपको मनाने आया हूँ।

आल्हा—यह सुनने के लिये हृदय और कान तैयार नहीं हैं, भैया ! माता के इस अप्रत्याशित आह्वान का कारण ?

जगनिक—दादा, चौहान-नरेश महाराज पृथ्वीराज ने महोवे पर बड़ा प्रबल आक्रमण किया है। सारी प्रजा त्रस्त है। चौहानों ने कैलाश-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गढ़ी ध्वस्त कर दी, राव लाखनसिंह और उनके पुत्र माधवराय मारे गए। वहन शशिकला सती हो गईं।

आल्हा—बड़ा दारुण दुःसंवाद है। ओह !

जगनिक—दादा ! चौहान-सेना ने आपकी पितृभूमि दशपुरवा को श्मशान बना दिया है। वे आपकी मुँहबोली बहन राजकुमारी चंद्रावली का अपहरण करना चाहते हैं। माता मल्हनादेवी ने कहलाया है कि आप दोनों भाई शीघ्र-से-शीघ्र महोवे की लाज बचाने के लिए आवें।

ऊदल—(रोष से) क्या हमारे जीते-जी चौहानों ने हमारी पितृभूमि उजाड़ दी ? माता देवलदेवी जब यह समाचार सुनेंगी, तो उन्हें बड़ा दुःख होगा।

आल्हा—राव लाखनसिंह के परिवार के विनाश का समाचार क्या उन्हें कम क्षुब्ध करेगा ?

ऊदल—दादा, बहन चंद्रावली के अपमान की कल्पना से तो वह क्रुद्ध सिंहिनी की तरह गरज उठेंगी !

आल्हा—ठीक है ऊदल ! हमारे बाहु-बल को धिक्कार है, जो हमारे जीते-जी महोवे में इतना बड़ा अत्याचार हो रहा है। पर, अब उपाय क्या है ? हमारा महोबा जाना तो असंभव ही है। हम अकुलीन अपने संसर्ग से चंदेल-राज के पवित्र वंश को दूषित करने वहाँ कदापि नहीं जाएँगे।

ऊदल—यथार्थ है, दादा ! माता मल्हनादेवी की आज्ञा की अवज्ञा करना यद्यपि आत्मघात से कम नहीं, फिर भी हम दीन-अकुलीन बनाफरों को अब चंदेलों की धरती पर ठौर नहीं।

आल्हा—भैया जगनिक, हम अपनी फ़ौज महोवे की सहायता के लिए भेज सकते हैं। महाराज जयचंद से भी हम प्रार्थना कर सकते हैं कि वह कुमुक वहाँ भेजें। पर, हम लोगों का अब महोवा जाना तो असंभव ही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—दादा, आपकी अथवा कन्नौज की फ़ौज की सहायता से महोबे को विपत्ति टाली नहीं जा सकती। आप दोनों भाइयों के बिना महोबा निष्प्राण है।

आल्हा—भैया, हम दोनों भाई अब महोबा नहीं जा सकेंगे, माता मल्हनादेवी से हमारी यह विवशता कह देना। चंदेल-नरेश परमार्दिदेव हम लोगों से हज़ार गुना समर्थ हैं।

जगनिक—दादा, आप इतनी जल्दी अंतिम निर्णय न करें। मैं माता मल्हनादेवी का पत्र लाया हूं, उसे सुन या पढ़ लें। मेरे मुख से वहाँ की जनता का संदेश भी श्रवण कर लें। फिर गंभीरतापूर्वक सारी परिस्थिति पर विचार करें।

इंदल—पिताजी, चाचा बहुत थके हैं, उन्हें स्वल्पाहार और विश्राम का थोड़ा अवसर दीजिए। फिर उनकी शेष बातें सुनिए। मा और दादीजी भी चाचा के आने का समाचार सुनकर उनसे भेंट करने को उत्सुक हो रही हैं।

आल्हा—ठीक कहते हो, बेटा। पहले वही आवश्यक है। (जगनिक से) अच्छा, चलो भैया। (सब उठते हैं।)

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीसरा दृश्य

स्थान—रिजगिरि

समय—दिन का द्वितीय पहर

[गंगा-तट पर स्थित आल्हा-ऊदल के भवन में माता देवलदेवी का कक्ष, जो अगरु और धूप की गंध से आमोदित है। वर्षीयसी देवलदेवी पूजा संपन्न कर एक चौकी पर बैठी हाथ में माला लिए भगवन्नाम का जप कर रही हैं, उनकी बड़ी बहू, आल्हा की पत्नी, सुलक्षणा निकट ही एक आसन पर बैठी हुई उन्हें पंखा झल रही हैं। सामने श्वेत आस्तरण बिछा है, जिस पर ऊदल, जगनिक और आल्हा के किशोर पुत्र इंदल बैठे हैं। सबकी आकृति पर गंभीरता है।]

देवलदेवी—बेटा जगनिक, आल्हा ने महोबा जाने के संबंध में क्या कहा ?

जगनिक—माँ, पहले तो वे परमाल द्वारा किए गए अपमान का स्मरण कर बहुत क्षुब्ध हुए। बोले, ध्वस्त हो जाए महोबा। हम लोग अपनी हँसी कराने अब वहाँ नहीं जाएँगे। हम लोगों ने चंदेल राजवंश की गौरव-वृद्धि के लिए क्या-क्या नहीं किया ? अपने जीवन को बार-बार संकट में डालकर हमने चंदेलों के राज्य और कोष की अभूतपूर्व वृद्धि की। उन सब सेवाओं का पुरस्कार मिला—अपनी प्राणाधिक प्रिय जन्मभूमि से अपमानपूर्वक निर्वासन ! हम अपनी प्यारी बेतवा के दर्शन तक के लिए तरस गए !

ऊदल—दादा ने ठीक ही कहा, माँ ! भाड़ में जाय महोबा, क्या उस दिन को हम कभी भूल सकेंगे, जब भादों के महीने की मूसलाधार वर्षा में परमाल ने हमें नितांत दीनावस्था में निर्वासित किया था ? दो-दो दिन तक बच्चों के मुँह में दूध की एक बूंद नहीं गई थी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और···।

देवलदेवी—(रोष से) चुप बैठ, ऊदल ! तू बात क्यों काटता है ? मैं जब तुझसे कुछ पूछूं, तभी उत्तर दे। (ऊदल सिर झुकाकर मौन हो जाते हैं।) हाँ जगनिक, फिर तुमने क्या कहा ?

जगनिक—माँ, फिर मैंने उनसे महारानी मल्हनादेवी का मार्मिक संदेश कहा।

देवलदेवी—उसका आल्हा पर क्या प्रभाव पड़ा ?

जगनिक—वह कुछ द्रवीभूत होते हुए प्रतीत हुए, उनके दो-एक आंसू भी ढुलक आए, पर उन्होंने कहा कुछ नहीं। स्वभाव से ही दादा बड़े गंभीर हैं, मैंने भी इसीलिए उन्हें उस समय नहीं छेड़ा। मौन को अर्ध-सम्मति मानकर मैं दूसरे अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। किंतु···।

देवलदेवी—किंतु क्या ?

जगनिक—किंतु रात में बात फिर बिगड़ गई। (सुलक्षणा की ओर देखकर) ये भाभी भी उस समय उपस्थित थीं···।

देवलदेवी—(सुलक्षणा की ओर देखकर) क्या बात हुई बेटी ?

सुलक्षणा—माँ, भोजन के समय उन्होंने बातों-ही-बातों में देवर मलखान का कुशल-समाचार पूछा। उन्होंने यह भी कहा, सिरसागढ़ी में मलखान के रहते दिल्लीवाले कालिंजर तक पहुंचे कैसे ? फिर तो जगनिकजी को देवर मलखान के वध का सब वृत्तांत कहना ही पड़ा।

देवलदेवी—उसे सुनकर आल्हा ने क्या कहा ?

सुलक्षणा—उसे सुनकर पहले तो वह कुछ देर तक स्तब्ध रहे, फिर पदाहत कालसर्प की तरह फुंकार मारते हुए उन्होंने कहा—"अब तो हम प्राण रहते महोबे को नहीं जाएँगे, भले ही मरणोपरांत कोए मेरी हड्डियाँ वहाँ ले जाएँ।" यह कहकर भोजन छोड़कर वह उठ गए, और सारी रात क्रोध से गहरी निःश्वासें लेते तथा करवटें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बदलते हुए बिताई। (**मलखान के वध की वार्ता चलने से सबके हृदय उच्छ्वसित हो उठते हैं। माता देवलदेवी भी अपने आर्द्र नयन पोंछती हैं। ऊदल अपने साश्रु नयनों से एक बार माँ की ओर देखकर फिर दृष्टि नीची कर लेते हैं।**)

देवलदेवी—क्यों ऊदल, क्या तुम्हें कुछ कहना है ?

ऊदल—हाँ, माँ ! स्वार्थी परमाल ने हम लोगों को अपमानित और निर्वासित कर इतना बुरा नहीं किया, जितना उन्होंने सिरसा के युद्ध में दादा मलखान को सहायता न देकर किया है। कम-से-कम वह हम लोगों को तो सिरसा पर पृथ्वीराज के इस आक्रमण की सूचना दे ही सकते थे। निर्लज्ज चंदेलराज को अब अपने स्वार्थ के लिए हमें बुलाने में तनिक भी संकोच न हुआ। हाय ! उस कुचक्री ने हमारे भाइयों की मृत्यु का समाचार भी हमें नहीं दिया।

देवलदेवी—(रोष से) देखो, ऊदल ! चंदेलराज तुम्हारे लिए पिता-तुल्य हैं। ध्यान रहे, भविष्य में फिर कभी मेरे समक्ष उनके लिए अरुंतुद वाणी का प्रयोग न करना। तुम भूल गए ममतामयी मल्हनादेवी का अमृतोपम स्तन्य...? अकृतज्ञ ! यही है अब तक की मेरी शिक्षा का फल ?

ऊदल—(हाथ जोड़कर) अपराध क्षमा हो, माँ ! मैं शोक के आवेग में आत्मविस्मृत हो गया था। किंतु प्यारी माँ, मेरी विनती भी ध्यान देने योग्य है। अभी कुछ ही दिन पूर्व महोबे पर पृथ्वीराज के पहले आक्रमण का समाचार पाकर आपने ही मुझे दादा को बिना सूचना दिए छद्म-वेष में सहायतार्थ वहाँ जाने की आज्ञा दी। मैंने भी उल्लासपूर्वक वहाँ जाकर बहन चंद्रावली को प्रचंड चामुंडराय के त्रास से मुक्त किया। कीर्तिसागर के युद्ध में अपराजेय समझे जाने-वाले चौड़ा को मैंने कंठगतप्राण करके छोड़ा, ब्राह्मण होने के कारण उसे मैंने जान से मारा नहीं ! किंतु अब महोबा जाने की इच्छा नहीं होती माँ ! क्या हम अकुलीन बनाफरों के स्पर्श से चंदेलों की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुनीत भूमि अपवित्र न हो जाएगी ? दादा मलखान का वध हो जाने पर कुलीन चंदेलों ने सोचा होगा, इस धरती की अकुलीनता का बोझ कुछ कम हुआ ! (आँसू आ जाते हैं)

देवलदेवी—बेटा, धर्ममय जीवन बिताने का व्रत लेनेवालों को अपने हृदय में इतनी कटुता को स्थान नहीं देना चाहिए। याद रख, सच्चे क्षत्रिय की पहचान है उसका लोक-संग्रही प्रबल पराक्रम ! किसी वंश-विशेष में पैदा हो जाने से ही कोई क्षत्रिय नहीं हो जाता, इसलिए गत और अनागत के मानापमान की चिंता छोड़कर तू समागत कर्तव्य का संपादन दृढ़तापूर्वक कर। मेरी-जैसी क्षत्रियाएँ धर्म-युद्ध के लिए ही पुत्र-प्रसव करती हैं। यदि तुम दोनों भाइयों के रहते विपन्न और शरणागत महोबे की रक्षा न हुई, तो मेरा मातृत्व निरर्थक हो जायगा।

ऊदल—अनुगत हूँ माँ ! किंतु क्षुब्ध दादा को कौन मनाएगा ? आज की उनकी रौद्र मूर्ति देखकर मुझे तो उनसे कुछ कहने का साहस न हुआ।

देवलदेवी—कैसा उलटा व्यवहार है तेरे दादा का ! कपट से प्रिय पुत्र मलखान के वध का पाप तो किया है दिल्लीवालों ने, पर उसके क्रोध का लक्ष्य बन गया है महोबे का विपन्न राजवंश ! इस समय आवश्यकता तो इस बात की है कि तुम दोनों दिल्लीवालों से उनके इस जघन्य कर्म का बदला लो। (सुलक्षणा से) बोल बेटी, तेरी क्या राय है ?

सुलक्षणा—माँ, आपका कथन यथार्थ है। क्षात्रधर्म यही है कि हम पुरानी बातों को भुलाकर विपन्न महोबे की सहायता के लिए तत्काल प्रस्थान करें और आततायियों को उनके कुकर्म का फल चखाएं।

देवलदेवी—धन्य बेटी ! (इंदल से) जा बेटा, अपने पिता को बुला ला, मैं उससे दो बातें तो कर लूं।

इंदल—दादी माँ, वह तो कुछ देर पूर्व कन्नौज-नरेश के दरबार में गए

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं, महाराज जयचंद ने उन्हें विशेष रूप से बुलाया था। वहाँ भी कोई विशेष बात अवश्य है, क्योंकि राजचर ने मुझे बताया है कि महाराज के पास उरई का राजा माहिल आया हुआ है।

सुलक्षणा—पिशुनता और प्रवंचना की मूर्ति माहिल आया है, तब तो कोई-न-कोई दुरभिसंधि अवश्य है।

देवलदेवी—उँह, उस कपट-कीट माहिल की क्या चिंता, बेटी ! हाँ, अब मेरी मध्याह्न-पूजा का समय आ गया है। आल्हा के लौटने पर तुम लोग उससे मेरा यह आदेश कह देना कि उसे शीघ्र-से-शीघ्र महोबा के लिए प्रस्थान करना है।

जगनिक—माँ, यदि दुर्भाग्य से उन्होंने आपकी आज्ञा की अवज्ञा कर दी, तो···?

देवलदेवी—(रोष से) क्या आल्हा मेरी आज्ञा की अवज्ञा करेगा ? क्या यह भी संभव है ? क्या सूर्य पश्चिम में उगेगा···? अच्छा, यदि यही होना है, तो सुनो, जगनिक ! कल प्रातःकाल होते ही मैं अपनी बहुओं के साथ युद्ध-वेश धारण कर महोबे की रक्षा के लिए प्रस्थान करूंगी। अभी मेरी बाहुओं में धनुष धारण करने और खड्ग चलाने की शक्ति है। समझे ? मेरे शरीर में प्राण रहते महोबे का अनिष्ट नहीं होगा। (जाने लगती है।)

ऊदल—(हाथ जोड़कर) माँ, माँ ! ठहरो ! ठहरो ! जाओ नहीं, मेरी भी सुन लो। मेरे रहते···।

देवलदेवी—(रोष से लौटकर) अब कोई बात नहीं सुनना चाहती। तुम आल्हा से कह देना कि अब मैं उसका मुख तभी देखूंगी, जब वह वीर-वेष धारण कर महोबे के लिए अश्वारूढ़ होगा। अन्यथा मैंने समझ लिया कि मैं वंध्या हूँ ! ओह···(मानसिक पीड़ा से मुख पर अधिक सिकुड़नें पड़ जाती हैं) धर्म-युद्ध से विमुख होनेवाले पुत्रों की माता होने की अपेक्षा वंध्या का जीवन अधिक श्रेयस्कर है। (उठकर खड़ी हो जाती हैं, और वेग से जाने लगती हैं, ऊदल और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक हाथ जोड़ सामने आ जाते हैं ।)

ऊदल—माँ ! ठहरो माँ ! जाओ नहीं, मेरी भी सुन लो ! मेरे रहते…।

जगनिक—हाँ माँ, ठहरो, तनिक ठहरो ! मेरी प्रार्थना भी सुन लो ! दादा के निश्चय के विषय में आपके मन में संदेह जगाकर मैंने आपको व्यर्थ ही कष्ट दिया । पर माँ, आपके बाण और कृपाण की परीक्षा बाद को होगी, पहले मेरी वाणी की परीक्षा हो लेने दो ।

देवलदेवी—(ठहरकर उत्सुकता से) तुम्हारी वाणी की परीक्षा कैसी, बेटा जगनिक ?

जगनिक—आज अतिकाल हो गया है, माँ ! इसी सामने के घाट पर से गंगा-स्नान कर आऊँ, तब निवेदन करूँगा । (जाते हैं ।)

देवलदेवी—(सुलक्षणा से) मैं मंदिर में पूजा करने जाती हूँ, जगनिक के लौटने पर मुझे सूचना देना ।

(एक ओर से जाने लगती हैं, दूसरी ओर से आल्हा का प्रवेश ।)

इंदल—पिताजी, दादी-माँ अभी-अभी मुझसे आपको बुलाने को कह रही थीं ।

आल्हा—(देवलदेवी से) ठहरो, माँ ! मैं आ गया हूँ, मेरे लिए क्या आज्ञा होती है ?

देवलदेवी—सुनो आल्हा, अब मैं तुम दोनों भाइयों का मुँह तभी देखूँगी, जब तुम महोबे के लिए प्रस्थान करोगे । यदि तुम लोग न गए, तो मैं कल अपनी पुत्र-वधुओं के साथ सैनिक वेष में महोबे के लिए प्रस्थान करूँगी ।

आल्हा—माँ, इतना कठोर निश्चय करने के पूर्व मुझे भी अपनी बात कहने का अवसर दो । दया करके कुछ क्षण बैठ जाओ ।

देवलदेवी—(अपनी चौकी पर बैठकर) अच्छा बोल, तुझे क्या कहना है ?

आल्हा—माँ, इस जीवन में, मन से भी, स्वप्न तक में, मैंने कभी तुम्हारी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आज्ञा की अवज्ञा नहीं की, पर आज मेरा मन मेरे वश में नहीं है। आज···।

देवलदेवी—(कठोरता से) अर्थात् आज तू मेरी आज्ञा की अवज्ञा करेगा ?

आल्हा—मैं यह नहीं कह रहा हूँ, माँ ! पर, परमाल के किए हुए अपमान की आग आज मुझे सहस्रगुनी दाहक प्रतीत हो रही है। ऐसी मानसिक यंत्रणा का अनुभव इसके पूर्व मुझे कभी नहीं हुआ। हम अकुलीन, दीन-हीन बनाफर महोबे में लौटकर मुंह कैसे दिखलाएँगे ! ओह···!

देवलदेवी—संयत हो, आल्हा !

आल्हा—माँ, परमाल के बुलाने पर जब हम अपने प्यारे भाई मलखान की लाश पर पैर रखते हुए महोबे को लौटेंगे, तो क्या वहाँ की जनता हम अकुलीन घोषित किए गए बनाफरों की निर्लज्जता पर थूकेगी नहीं ? (अश्रुपात)

देवलदेवी—उत्तेजना के कारण अपने विवेक का तिरस्कार मत करो, आल्हा ! शांत हो !

आल्हा—माँ, भाई मलखान के नृशंस वध को तटस्थता से देखनेवाले परमाल के बुलाने पर जब हम दौड़कर महोबा पहुँचेंगे, तो वहाँ की जनता यह कहेगी कि यह बनाफर कुत्तों की वृत्तिवाले क्षत्रिय हैं। इनको जब चाहो, तब दुतकारो और जब चाहो, तब तू-तू कर बुला लो। (दीर्घ निःश्वास लेते हैं।)

देवलदेवी—अत्यधिक आवेश ने तुझे अंधा और बधिर बना रखा है, आल्हा ! क्या जगनिक ने तुझसे यह नहीं कहा कि वे तुम्हारे पास महोबे की जनता के, महोबे की धरती के और महारानी मल्हनादेवी के संदेशवाहक होकर आए हैं ?

आल्हा—वह कोरा वाक्छल है, माँ !

देवलदेवी—ओह आल्हा, तेरा दुराग्रह सीमा पार कर रहा है, सावधान !

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(इसी समय गंगा-तट की दिशा से आता हुआ किसी ओजस्वी कंठ का मधुर गायन कक्ष में ध्वनित हो उठता है ।)

सुमिर सरसुती जगदंबा को औ गनपति के चरन मनाइ ।
धरती माता तुमको ध्यावौं, कीरत सबसे बड़ी तुम्हारि ॥

सुलक्षणा—यह कौन है, माँ ! जो जननी जन्म-भूमि के ध्यान में भाव-विभोर होकर अपने दृप्त कंठ से मधु-वर्षा कर रहा है । सचमुच धरती माता की कीर्ति सबसे बड़ी है ।

देवलदेवी—यह तो जगनिक का ही परिचित कंठ प्रतीत होता है । कदाचित् वह गंगा-स्नान के बाद महोवे की, अपनी जन्म-भूमि की, मानसी पूजा कर रहा है । सपूतों में अपनी मातृभूमि के प्रति ऐसा ही अनुराग होता है ।

ऊदल—हाँ, माँ, यह भाई जगनिक ही हैं । सुनिए, अभी उनका गायन तो चल ही रहा है । (फिर गायन ध्वनित होता है ।)

नदी वेतवा तुमको ध्यावौं निर्मल वहै दूध की धार ।
लहर-लहर के तेज-ओज पँ वारौं कोटि तीर तलवार ॥

आल्हा—ऊदल, यह कैसा उन्मादक गीत है ! सचमुच वेतवा की लहर-लहर के तेज-ओज पर करोड़ों तीर-तलवार न्यौछावर हैं । हाय ! हम अपनी प्यारी वेतवा के दर्शन के लिए भी तरस गए । ओह !

ऊदल—दादा, क्या वे दिन भूल गए, जब हम सब भाई अपने बचपन में वर्षा में बढ़ी हुई वेतवा को अपलक होकर निहारा करते थे ? उस मदमाती वेतवा ही से तो हमने अपना युद्ध-कौशल सीखा है ।

देवलदेवी—तू ठीक कहता है, ऊदल ! मैं भी यही सोचा करती थी कि मेरे बच्चों की छाती इसी वेतवा-जैसी चौड़ी हो ।

सुलक्षणा—माँ, गीत अभी चल रहा है, कितना सम्मोहन है इसमें !
(गायन की ध्वनि सुनाई पड़ती है ।)

वन पथ ध्यावौं विंध्याचल के अविचल विनय केर अवतार ।
अपने नभचुम्बी शृंगन पँ धारे चांद सुरुज कै हार ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जहां समीरन की बीना पै साजि चन्दकिरनन के तार।
बन की देवी सुर-मेघन ते बरसौती हैं राग-बहार ।।

ऊदल—दादा, दादा ! हमारे महोवे की चटकीली चाँदनी रातों का कैसा दिव्य वर्णन है ! अगस्त्य के अनुरोध से लोकहित के लिए अवनत विन्ध्याचल का कैसा उदात्त रूप है ! हमारी जन्म-भूमि सचमुच स्वर्गादपि गरीयसी है।

आल्हा—तुम ठीक कहते हो, ऊदल। किन्तु······।

सुलक्षणा—किन्तु क्या, आर्यपुत्र ?

आल्हा—बड़ा धर्म-संकट है।

सुलक्षणा—धर्म-संकट कैसा, माँ कहती हैं कि धर्म-युद्ध का पथ प्रशस्त है। (गीत फिर गूंजता है।) जगनिक का गीत अभी भी चल रहा है। उसे सुन लीजिए।

मानुख ध्यावौं ई धरती के जिनको पौरुख उदधि अपार।
बढ़ बढ़ अपने भुजदडन पै जो लै लेइँ भूमि कर भार ।।
उन्नत ज्योतिस्तंभ धरम के औ जन सेवाव्रती महान।
पर-दुख-भंजन ई धरती पै जनमे बड़े-बड़े बलवान ।।

देवलदेवी—सुन रहा है रे आल्हा, क्या कहते हैं जगनिक ? महोवे की जनता तुझे भी पर-दुख-भंजन कहती है। उसी जनता पर जब आज दुःख का पहाड़ फट पड़ा है, तब तू अपने व्यक्तिगत मानापमान की भावना से कृपण बना हुआ मेरा दूध लजा रहा है ? यही है तेरी पर-दुख-भंजनता ? तू भी तो उसी धरती का मनुष्य है ?

आल्हा—माँ, माँ ! क्या जगनिक सच कहते हैं ? क्या वे सचमुच महोवे की विपन्न और त्रस्त जनता के संदेशवाहक होकर आए हैं ? बुला लो जगनिक को, मैं एक बार फिर उनसे पूछ लूँ। उनकी वाणी ने मेरा हृदय गला दिया है। महोवे के दर्शन के लिए जी तड़प उठा है। पर क्या करूँ ? आह !

इंदल—मैं जाता हूँ पिताजी, और जगनिक चाचा को लाता हूँ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(जाता है)

देवलदेवी—आल्हा, सत्य की चरम रमणीय अभिव्यक्ति ही सच्ची कविता है। जगनिक की एक-एक बात सही है। तेरे इस 'किन्तु' 'परन्तु' से तेरे हृदय की दुर्बलता और कृपणता सूचित होती है।

(इंदल के साथ जगनिक का प्रवेश)

देवलदेवी—बेटा जगनिक, तुम्हारी वाणी की परीक्षा तो हो गई। उसके प्रभाव से इस निष्ठुर बने हुए आल्हा को भी मातृभूमि महोवे की याद बेचैन करने लगी है। पर अभी इसको यह विश्वास नहीं है कि तुम महोबे की जनता की ओर से उसे बुलाने आए हो।

जगनिक—सुनो माँ, अपने पुत्रों के साथ आपके यहाँ चले आने के पश्चात् महोबे की जनता जीवन्मृत-सी हो गई। सम्पूर्ण प्रदेश उजड़ा-उजड़ा प्रतीत होता था, और प्रजाजन निष्क्रिय एवं निश्चेतन। तब मैंने आपके इन दोनों पराक्रमी पुत्रों के प्रचण्ड पौरुष की ज्वलंत गाथाएँ काव्य-वद्ध कर लोगों को गा-गाकर सुनानी आरम्भ कीं। फिर तो उनमें नवीन जीवन-चेतना का ज्वार आ गया, जनपद का जीवन हरियाने लगा। आज मैं अपने उसी आल्हा-नामक काव्य के कुछ अंश दादा को सुनाऊँगा। यदि मैं उसमें महोवे की धरती एवं जनता की पुकार ठीक-ठीक व्यक्त कर सका हूँ, तो आपके दोनों वीर पुत्र अपनी मातृभूमि का वियोग और विध्वंस अब अधिक न सह पाएँगे। माँ मेरी वाणी···।

देवलदेवी—बेटा जगनिक, मैं यह नई बात सुन रही हूँ। आजकल के कवि तो राजाओं का वृत्त लिखते हैं, तुम्हारी तरह आल्हा और ऊदल जैसे साधारण जनों के पौरुष और पराक्रम की चिन्ता कौन करता है।

सुलक्षणा—ठीक है, माँ! मैंने भी अपने पिता की सभा में अनेक कवि देखे हैं। जनता की और धरती की ऐसी बातें मैंने उनके मुख से कभी नहीं सुनी थीं। ये जगनिकजी तो अन्य कवियों की लीक छोड़-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर चल रहे हैं।

जगनिक—भाभी, मैं आज के राज-कवियों का अनुकर्ता तो अवश्य नहीं हूँ, पर मैं चल अपने देश के पुराने कवियों की लीक पर ही रहा हूँ। इस महान् देश का सत्व जिन महापुरुषों में जितना अधिक आविर्भूत हुआ है, हमारे कवियों ने उनको उतना ही महत्व दिया है। वाल्मीकि, व्यास और कालिदास ने इसीलिए राम, कृष्ण और विक्रम से प्रेरणा पाई थी। मुझ में इन क्रांतदर्शी कवियों की क्षमता नहीं है, पर मैंने अपनी काव्य-दृष्टि उन्हीं से पाई है।

देवलदेवी—धन्य हो बेटा जगनिक! तुम्हें अमर कीर्ति मिले। तुम्हारी वाणी सुनकर आज मुझे अपने वीर पति की कृपाण की स्मृति पुलकित कर रही है।

जगनिक—माँ, पहले दादा मेरी वाणी सुन लें, उसके बाद ही आपको कृपाण का स्मरण करने की आवश्यकता होगी। यदि मेरी वाणी सुनकर अपने अन्तर की प्रेरणा से ही दादा महोवा जाने को बाध्य न हुए, तो आपके कृपाण उठाने के पूर्व ही मेरी लेखनी और वाणी इस गंगा के गर्भ में अन्तिम विश्राम ले लेगी। अभी मेरी वाणी की परीक्षा शेष है, माँ!

आल्हा—नहीं, भैया! तुम्हारी वाणी की परीक्षा हो गई। तुमने मेरी स्मृति में मातृभूमि का जो चित्र जगाया है, उसी ने मेरे विवेक के नेत्र खोल दिए हैं। अब मैं तुम्हारे-जैसे सिद्ध कवि के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर सरस्वतीदेवी का कोपभाजन नहीं बनूँगा। कवि को चाटुकार बनने को बाध्य करना हमारे आज के समाज की बड़ी भारी विडंबना है।

जगनिक—दादा, विश्वास रखिए, आपका जगनिक कभी किसी की चाटुकारी नहीं करेगा। कवि का काम है अपनी धरती और जनता की पीड़ा और उसके सुख-दुःख का ठीक-ठीक प्रकाशन एवं अभिव्यंजन। मैंने वही किया है। पहले मेरी बात सुन लीजिए, तब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अपना निर्णय कीजिए ।

आल्हा—भैया, मैंने तो निर्णय कर लिया है, पर एक बड़ी भारी बाधा है ।

जगनिक—वह क्या ?

आल्हा—भाई, यदि हम महोबा जाने को उद्यत हो जायं, तो भी जयचंद हमको जाने की अनुमति नहीं देंगे ।

सुलक्षणा—मुझे तो पहले से ही इसकी आशंका थी, माहिल का आना अकारण नहीं था । जयचंद हमसे चाहते क्या हैं ?

आल्हा—वह हमको अपना ऋणी मानते हैं, और जाने की अनुमति देने के पूर्व राजकोष की पाई-पाई का हिसाब मांगते हैं ।

ऊदल—सारा गांजर जीतकर हम लोगों ने कन्नौज के राज्य में मिला दिया और करोड़ों रुपया कर के रूप में लाकर राजकोष में भर दिया । इसीलिए हम ऋणी हैं ? दादा, आप इसकी चिंता न करें, मैं जयचंद को कौड़ी-कौड़ी का हिसाब भर दूंगा ।......वह भी देख लें बनाफरों की तलवार ।

सुलक्षणा—देवर, चलिए । जगनिकजी की वाणी सुन लीजिए, फिर जयचंद से निपट लिया जायगा ।

ऊदल—ठीक है भाभी !

सुलक्षणा—तो शीघ्र भोजनादि से निवृत्त होकर जगनिकजी के मुख से महोबे की वीरभूमि का संदेश सुनिए । मां का यही आदेश है ।

देवलदेवी—उसकी व्यवस्था करो, बेटी । बेटा जगनिक, भगवान् तुम्हारा मंगल करें ।

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा दृश्य

समय—दिन का द्वितीय प्रहर

स्थान—कन्नौज का सभा-भवन

[सभा-भवन बड़ा विशाल है। भवन की छत पाषाण के स्थूल स्तंभों पर स्थित है, जिन पर सुवर्ण का काम है और यत्र-तत्र रत्न भी जड़े हुए हैं। सभा-भवन की भित्तियों पर अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक घटनाओं के चित्र बने हुए हैं, इनमें भी सुवर्ण का प्रचुर उपयोग किया गया है और छत पर भी सोने का काम है। दोनों पार्श्वों की भित्तियों के सिरे पर एक-एक द्वार है, द्वारों की चौखटें और कपाट भी स्वर्ण-मंडित हैं। पीछे की भित्ति के बीच में, उससे सटा हुआ सिंहाकार पायों का सिंहासन रखा हुआ है। सिंहासन के नीचे सुवर्ण-मंडित एवं रत्न-जटित पादपीठ स्थापित हैं। सिंहासन के दोनों ओर पंक्ति में सुवर्ण-खचित आसंदियाँ रखी हैं। सिंहासन, पादपीठ और सब आसंदियों पर सुवर्ण-खचित एवं अलंकृत गद्दे-तकिए लगे हैं। सभा-भवन की पृथ्वी पर रेशमी वस्त्र की बिछावन बिछी है। सिंहासन पर राजाधिराज जयचंद विराजमान हैं। उनका शिर खुला हुआ है। शरीर पर वे केशरी कौशेय का स्वर्ण-खचित उत्तरीय और अधोवस्त्र धारण किए हैं। वह कुंडल, हार, केयूर, वलय और मुद्रिका आदि सुवर्ण के रत्न-जटित आभूषण पहने हैं, जिनकी झलमलाहट के कारण दर्शकों की आँखें चौंधिया जाती हैं। कमर-पट्टे में बाईं ओर सुनहरे कोष में खड्ग लटक रहा है। आसंदियों पर दोनों ओर राज्य के प्रधान अधिकारी, भट्ट केदार और मधुकर आदि राजकवि एवं सामंतगण बैठे हैं। सब लोग सोने के वस्त्राभूषण पहने हैं। ब्राह्मणों के अतिरिक्त सबके कमरपट्टों में बाईं ओर सुनहरे कोष में खड्ग शोभा पा रहे हैं। दाहिनी ओर की पंक्ति में प्रधानामात्य, धर्माध्यक्ष और जयचंद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के भतीजे लाखनचंद के बाद की आसंदी पर आल्हा बैठे हैं! सभा-भवन की घोर निस्तब्धता किसी असाधारण स्थिति की सूचना दे रही है।]

आल्हा—(खड़े होकर) राजाधिराज, आपने मेरे अवरोध का आदेश देकर उचित नहीं किया।

जयचंद—आल्हा, तुमको अपनी कृतघ्नता का ध्यान नहीं? क्या तुम्हें महोवे जाने की बात करने में लज्जा नहीं आती?

आल्हा—कृतघ्नता कैसी और लज्जा क्यों, राजाधिराज? महोबा हमारी जन्मभूमि है, उस पर संकट है। वहाँ की हमारी मातृतुल्या महारानी मल्हनादेवी ने इस विपत्ति में हमारा आह्वान किया है, शुद्ध क्षात्र-धर्म की प्रेरणा से हम आपसे वहाँ जाने की आज्ञा चाहते हैं। इससे बढ़कर गर्व करने की वस्तु और क्या हो सकती है?

जयचंद—कितने अपमानित और लांछित होकर तुम महोबे से निर्वासित हुए थे, वह सब कुछ तुम भूल गए? कैसे क्षत्रिय हो तुम?

आल्हा—जब धर्म और जन्मभूमि पर विपत्ति के बादल घिरे हुए हों, उस समय सच्चे क्षत्रिय को व्यक्तिगत मानापमान की बात भूल जानी चाहिए, महाराज! गो, ब्राह्मण, मित्र, राष्ट्र की संपत्ति, स्त्री तथा सामाजिक व्यवस्था की रक्षा में प्राणोत्सर्ग करना ही क्षत्रिय का परम पुरुषार्थ है।

जयचंद—कन्नोज राज्य की अशेष समृद्धि का तुमने स्वच्छंदतापूर्वक उप-भोग किया है, उसकी एक-एक कौड़ी तुमको देनी होगी। गाँजर की लूट का माल और रिजगिरि का किराया भी तुमको चुकाना होगा। मैं पहले जैसा कह चुका हूँ, उसी प्रकार तुम यह सब भुग-तान करके यहाँ से जा सकते हो, अन्यथा तुम हमारे बंदी रहोगे।

(महाप्रतिहार का शीघ्रता से प्रवेश और अभिवादन।)

महाप्रतिहार—राजाधिराज की जय हो!

जयचंद—क्या बात है?

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

महाप्रतिहार—राजाधिराज, वीरवर आल्हा के बंदी होने का समाचार सुनकर नगर मे अशांति और असंतोष है, और......

जयचंद—और क्या ? (बाहर कोलाहल) यह कोलाहल कैसा है ?

महाप्रतिहार—देव, क्रोध से फड़कते हुए वीरवर ऊदल अपने सैनिकों के साथ राजद्वार पर आ गए हैं। राजाधिराज के आदेश से जो दो प्रमत्त गजेंद्र द्वार पर छोड़ दिये गए थे, उन दोनों को सेनापति ऊदल ने बात-की-बात में मार गिराया है। सब अवरोध तोड़कर वह बलात् सभाभवन में अपने बड़े भाई को मुक्त कराने के निमित्त प्रवेश करने का आग्रह कर रहे हैं।

जयचंद—(क्रोध से) हमारे द्वार-रक्षक सैनिकों ने उन्हें रोका नहीं ?

महाप्रतिहार—राजाधिराज, जिस व्यक्ति ने अनेकानेक विकट युद्धों में कन्नौज की सेना का सफल नेतृत्व किया है, जो व्यक्ति अभी कुछ क्षण पूर्व तक कन्नौज की विजयवाहिनी का सबसे लोकप्रिय और सफल नायक रहा है, प्रत्यक्ष राजकीय आदेश के बिना यहाँ के सैनिक उस पर शस्त्र नहीं उठा सकते।

जयचंद—(क्रोध से) ऐसी बात है ? तो मैं स्वयं चलकर सैनिकों को ऊदल को बंदी बनाने का आदेश देता हूँ। (उठने का उपक्रम करते हैं।)

लक्ष्मणचंद्र (लाखन)—(उठकर और हाथ जोड़कर) राजाधिराज, यह कार्य कान्यकुब्ज की कीर्ति के अनुरूप नहीं होगा।

जयचंद—(कुछ संयत होकर) ऐसा क्यों, बेटा लक्ष्मण ?

लक्ष्मणचंद्र—बनाफर-बंधुओं ने अपने प्राण हथेली पर रखकर कान्यकुब्ज साम्राज्य का गौरव बढ़ाया है, उनकी सेवाएँ उपेक्षित नहीं होनी चाहिएँ। यह कन्नौज-राजवंश की उदारता की भारतव्यापी ख्याति के प्रतिकूल होगा। एक कारण भी है, देव !

जयचंद—वह क्या ?

लक्ष्मणचंद्र—यदि आल्हा-ऊदल को महोबा जाने से बल-पूर्वक रोका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गया, तो लोग कन्नौज के शासक को भीरु और निर्वीर्य समझेंगे। कहा जायगा कि आल्हा-ऊदल के बिना कन्नौज के राजाधिराज अपने को अरक्षित और असमर्थ समझते थे, इसलिए उन्होंने वीर बनाफर-बंधुओं के प्रकृत क्षात्रधर्म-पालन में बाधा डाली।

जयचंद—तुम्हारी बात विचारणीय है, पुत्र! (महामात्य से) महामात्य, आपकी क्या राय है?

महामात्य—राजकुमार का कथन सर्वथा उचित है, देव!

(इसी समय हाथियों के रक्त में सनी नंगी तलवार लिए हुए रौद्र वेष में बड़े वेग के साथ ऊदल का प्रवेश। उनके साथ नंगी तलवार लिए इंदल तथा निरस्त्र सौम्यमूर्ति जगनिक हैं।)

ऊदल—(आल्हा से) चलो दादा, हमें आज ही महोवे के लिए प्रस्थान करना है। आप विलंब क्यों कर रहे हैं?

आल्हा—भैया, राजाधिराज का आदेश है कि हम लोग गाँजर की लूट का माल देकर तथा रिजगिरि का कुल कर और किराया चुकाकर ही यहाँ से जा सकते हैं। राजाधिराज का कहना है कि हमें एक-एक गेहूँ के दो-दो देने होंगे, और हमने रिजगिरि का जो पानी पिया है, उसके दूध के दाम देने होंगे।

ऊदल—खेद है, राजाधिराज को यह कहने में संकोच नहीं हुआ। बारह बरस लगातार युद्ध करते रहने पर भी जिस गाँजर से कन्नौज राज्य को कभी एक फूटी कौड़ी भी नहीं प्राप्त हुई थी, वहाँ साढ़े तीन महीने दिन-रात संग्राम करके हमने कुल कर वसूल कर राजकोष में भर दिया; हमने राज्य की सीमाओं को पुनः हिमालय के पाद-प्रांत तक विस्तृत कर दिया; इस राज्य की सेवा हमने प्राण हथेली पर रखकर की है, और राजाधिराज की प्रतिष्ठा-वृद्धि के लिए लड़े गए युद्धों में हमने अपने अनेक सगे-संबंधियों की बलि दी है, इनका मूल्य हम भी राजाधिराज से माँगेंगे। वणिकों की तरह हमने कभी धन का संचय तो किया ही नहीं है, शरीर और धन दोनों का चरम साफल्य

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हमने धर्म को ही माना है। अतएव इस खड्ग के अतिरिक्त हमारे पास राजाधिराज का ऋण चुकाने के लिए और है ही क्या ? चलो दादा, महोबा जाने के पूर्व हमें यह ऋण चुका तो देना ही है। (उन्मत्त भाव से आल्हा की ओर बढ़कर और उनकी बाँह पकड़कर) शीघ्र चलो दादा। अब संसार की कोई शक्ति हमें यहाँ रोक कर नहीं रख सकती।

लक्ष्मणचंद्र—बंधु ऊदल, अपने रोष और आवेश को नियंत्रित करो। आप-जैसे आदर्श वीर को सभा-भवन में ऐसा अमर्यादित आचरण शोभा नहीं देता। आपने राजाधिराज का आशय समझने में भूल की है।

ऊदल—(आल्हा की बाँह छोड़कर और कुछ संयत होकर) वह कैसे ?

महामात्य—राजाधिराज को आप दोनों भाइयों की सेवाओं का बहुत अधिक ध्यान है, इसलिए उनको आपके व्यक्तिगत मानापमान की चिंता भी सर्वोपरि है।

ऊदल—मैं आपके इस कथन का अर्थ नहीं समझा।

जयचंद—तुम आसन ग्रहण करो, ऊदल ! मैं स्वयं तुमको अपना आशय समझाता हूँ, शांत होकर मेरी बात सुनो। (जगनिक की ओर देखकर) तुम्हारे साथ यह कौन हैं ?

आल्हा—राजाधिराज, यह महोबे के तेजस्वी कवि जगनिक हैं, यही महोबे के संकट का संदेश लेकर यहाँ आए हैं।

जयचंद—(भट्ट मधुकर से) राजकवि, महोबे के कवि और राजदूत को आदर-पूर्वक अपने निकट बैठाइए।

मधुकर—(जगनिक से) पधारिए कविवर, आसन ग्रहण कीजिए। (जगनिक आदर-पूर्वक जयचंद के समक्ष अभिवादन कर एक आसंदी पर बैठते हैं, ऊदल और इंदल भी बैठते हैं।)

जयचंद—ऊदल, तुम लोगों के महोबा जाने से मेरी कोई विशेष क्षति नहीं, पर महोबा लौटकर जाने से तुम दोनों भाई जनता की निगाह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में गिर जाओगे। लोग कहेंगे, बनाफरों में आत्मसम्मान शेष नहीं रह गया है, ये निश्चय ही श्रेष्ठ क्षत्रिय नहीं हैं। यह सब सोचकर मुझे कष्ट होता है, क्योंकि तुम्हारे लिए हमारे हृदय में स्थान बन गया है।

जगनिक—अनुमति मिले, तो मैं भी कुछ कहूँ, राजाधिराज !

जयचंद—अवश्य कहिए, कविवर ! मैं सुनना चाहूँगा।

जगनिक—राजाधिराज, क्षत्रियों की पारस्परिक श्रेष्ठता का मापदंड उनका लोकहितकारी पराक्रम है, प्रतिशोध लेने की क्षमता नहीं। लोक में आर्ति का शब्द न सुनाई पड़े, इसीलिए वे शस्त्र ग्रहण करते हैं। ऐसे क्षत्रियों को व्यक्तिगत मानापमान की भावना को अपने हृदय में पोषित करने का न तो अधिकार ही है और न अवकाश। क्षत्रियों का जीवन देश और धर्म की सेवा में सतत अर्पित होता है। जब व्यक्तिगत मानापमान की भावना से प्रभावित होकर वे ईर्ष्या-द्वेष और कलह का मार्ग अपनाने लगते हैं, तो देश निर्बल और निःसत्व हो जाता है। आज वही हो रहा है देव !

जयचंद—कवि, अपमान के प्रतिशोध में अक्षम क्षत्रिय भीरु समझे जाते हैं।

जगनिक—देश और धर्म के अपमान के प्रतिशोध में असमर्थ व्यक्ति भीरु होते हैं, राजाधिराज ! लोक-कल्याण के निमित्त व्यक्तिगत मानापमान का कालकूट पी लेनेवाले शिव की तरह सर्वशक्तिमान और जगतवंद्य बन जाते हैं।

जयचंद—बनाफर-बंधुओं का जो अपमान महोबे में हुआ है, उसको भूलकर फिर उनका वहाँ जाना क्या अक्षत्रियोचित नहीं ?

जगनिक—कदापि नहीं, राजाधिराज ! संकटग्रस्त मातृभूमि के आह्वान की उपेक्षा करना ही अक्षत्रियोचित है।

महामात्य—राजाधिराज, बनाफर-बंधुओं के न जाने से दिल्लीपति महाराज पृथ्वीराज को महोबे को ध्वस्त कर अपने राज्य में मिला लेने का अवसर मिल जायगा, उस स्थिति में उनके राज्य की सीमाएँ

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

कान्यकुब्ज-साम्राज्य की सीमाओं का स्पर्श करने लगेंगी । यह अच्छी बात न होगी ।

जयचंद—(संतोषपूर्वक) ठीक कहते हो मंत्रिप्रवर ! आल्हा और ऊदल को महोबे की रक्षा के निमित्त जाना ही चाहिए !

आल्हा—उपकृत हुआ राजाधिराज !

जयचंद—वीरवर ऊदल, यदि आवश्यकता हुई, तो महोबे की सहायता के लिए हमारी भी सेना जायगी । पृथ्वीराज बड़े उद्दंड हो गए हैं, उनका दर्प-दलन भी एक राजनीतिक आवश्यकता है ।

लक्ष्मणचंद्र—राजाधिराज, मुझे आज्ञा दीजिए । मैं स्वयं अपने अधिनायकत्व में कन्नौज की सेना लेकर महोबे की सहायता करूँ ।

जयचंद—(महामात्य से) आपका अभिमत क्या है ?

महामात्य—राजकुमार की इच्छा हो, तो उन्हें जाने दिया जाए । वीरश्रेष्ठ बनाफर-बंधुओं के रहते हुए कोई आशंका नहीं ।

जयचंद—तब ठीक है । बेटा लाखन, तुम जा सकते हो ।

लक्ष्मणचंद्र—(प्रसन्न होकर ऊदल से) बंधुवर, राजाधिराज की कृपा से मुझे भी आपकी विश्रुत जन्मभूमि देखने का अवसर मिल रहा है ।

आल्हा—राजाधिराज, हम लोग तो अभी इसी समय प्रस्थान करेंगे, और बिना कहीं विश्राम किए दिन-रात निरंतर चलकर शीघ्र-से-शीघ्र महोबा पहुंचेंगे । राजकुमार को इतनी शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं । यदि महोबा देखने की उनकी इच्छा हो, तो वह सुविधा-पूर्वक मंगल-वेला में महाराजोचित रीति से प्रस्थान करें । महोबा उनके राजकीय स्वागत-सत्कार का अवसर पाकर फूला न समायेगा ।

ऊदल—(लाखन से) दादा का कथन यथार्थ है, राजकुमार ! (आल्हा से) दादा, अब चलिए ।

(आल्हा, ऊदल, इंदल और जगनिक उठकर खड़े हो जाते हैं, और जयचंद के समक्ष अभिवादन करते हैं ।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—राजाधिराज, चलते-चलते मुझे एक निवेदन और करना है।

जयचंद—अवश्य कहो, कवि! तुम्हारी वाणी श्रुतिसुखद है।

जगनिक—सौ वर्ष पूर्व इस देश पर महमूद ग़ज़नवी ने अनेक आक्रमण किए थे। उनसे देश और धर्म को कितनी क्षति हुई थी, यह राजाधिराज से छिपा नहीं।

जयचंद—मुझे ज्ञात हैं वे घटनाएँ।

जगनिक—उसी तरह मुहम्मद ग़ोरी भी पिछले कुछ वर्षों में अनेक बार आक्रमण कर चुका है।

जयचंद—उसे तो पृथ्वीराज ही अनेक बार पराजित कर चुके हैं। गुजरात में भी वह हार चुका है, कन्नौज को उसकी चिंता नहीं।

जगनिक—बार-बार हारकर भी वह प्रहार करने से विरत नहीं। इस आसन्न राष्ट्रीय विपत्ति की उपेक्षा राष्ट्र के लिए अनिष्टकर हो सकती है।

जयचंद—यदि वह पृथ्वीराज से बच पाया, तो आवश्यकता पड़ने पर कन्नौज उसकी शक्ति को तोड़ देगा। ग़ोरी से कोई भय की बात नहीं।

जगनिक—(गहरी साँस लेकर) भगवान् करें, ऐसा ही हो।

आल्हा—राजाधिराज! आज्ञा और आशीर्वाद प्राप्त हो, तो हम लोग प्रस्थान करें।

जयचंद—जाओ, वीरश्रेष्ठ! कन्नौज तुम्हारे वीरतापूर्ण कार्यों को कभी न भूलेगा। सफलतापूर्वक महोबा राजवंश की सहायता करने के पश्चात् जब इच्छा हो, तब तुम कन्नौज लौट सकते हो। रिजगिरि तुम्हारा ही रहेगा।

आल्हा—दर्शन की उत्कंठा सदैव रहेगी, राजाधिराज! कभी फिर सेवा का अवसर मिला, तो अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा।

(हाथ जोड़कर नतमस्तक हो, अभिवादन कर ऊदल, जगनिक और इन्दल के साथ प्रस्थान।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाँचवाँ दृश्य

समय—चतुर्थ प्रहर

स्थान—चंदेलों की राजधानी। महोबे का एक मार्ग।

[बीच में मार्ग है। मार्ग के दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे गृह बने हैं। एक ओर से कुछ पुरवासियों और दूसरी ओर से कुछ नगरवासियों का प्रवेश। अवस्था में कोई वृद्ध, कोई अधेड़, कोई युवक है, कुछ बालक भी हैं। पुरवासी दुकूल वस्त्र के उत्तरीय और कौशेय वस्त्र के अधोवस्त्र पहने हैं। ग्रामवासी सब शिर पर विभिन्न रंगों की पगड़ियाँ बाँधे हैं। वे घुटनों तक का अधोवस्त्र और चौबंदी पहने हुए हैं। सब लोग चिंतित और उदास दिखाई पड़ते हैं।]

एक पुरवासी—युद्ध-विराम-संधि की अवधि भी बीत चली, केवल कल का दिन शेष है।

दूसरा पुरवासी—किंतु अभी तक कन्नौज से कोई समाचार नहीं आया है।

तीसरा पुरवासी—हाँ, जगनिकजी न तो लौटे ही हैं और न कोई संदेश ही भेजा है।

चौथा ग्रामवासी—(पहले पुरवासी से) क्या अब आल्हा-ऊदल के आने की कोई आशा नहीं ?

पहला पुरवासी—ऐसी बात तो नहीं है, भाई ! विलंब से चिंता अवश्य उत्पन्न हो गई है।

चौथा पुरवासी—जगनिकजी असफल होकर लौट आएँ, मुझे इसकी आशंका नहीं।

पाँचवाँ ग्रामवासी—भैया आल्हा-ऊदल के लौटने की आशा मुझे नहीं। महोबे में उनका जैसा अपमान हो चुका है, उसको कोई क्षत्रिय कैसे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भूल सकता है ?

छठा ग्रामवासी—मुझे भी ऐसा ही प्रतीत होता है। मैंने हिसाब लगाकर देखा है, यदि उन्हें आना होता, तो वे कल ही यहाँ आ जाते।

सातवाँ पुरवासी—तब तो फिर अँधेरा-ही-अँधेरा है। परसों प्रातःकाल ही चौहानों का भयंकर आक्रमण होगा।

एक बालक—(साश्रु हो अपने पिता से) पिताजी, क्या अब आल्हा-ऊदल नहीं लौटेंगे ?

पिता—भगवान् जाने बेटा !

(सहसा कुछ दूर मार्ग पर राजकीय डिंडिम का घोष)

पहला पुरवासी—राजकीय डिंडिम का यह घोष कैसा ? चलो, सुनें क्या समाचार है ?

(दौड़ते हुए एक पुरवासी का प्रवेश। वह उन्मत्त होकर हँसता, नाचता और गाता है।)

पहला ग्रामवासी—भाई, आप इतने प्रसन्न क्यों हैं ? कौन-सा शुभ समाचार आपने सुना है ? क्या आल्हा-ऊदल तो नहीं आ रहे हैं ?

उन्मत्त पुरवासी—हाँ-हाँ, यही बात है, भाइयो। दूत आया है, दोनों भाई दल-बल के साथ आ रहे हैं। आज सबेरे वे लोग कालपी में थे। कल प्रातःकाल वे यहाँ अवश्य आ जाएँगे।

सब लोग—हर-हर महादेव ! कविराज जगनिक की जय ! आल्हा-ऊदल की जय !

दूसरा पुरवासी—क्या राजकीय डिंडिम-घोष के द्वारा यही सूचना प्रसारित हो रही है ?

उन्मत्त पुरवासी—राजाज्ञा है कि आज रात में ही नगर के प्रत्येक गृह, मार्ग और वीथी को सज जाना चाहिए, कल बनाफर-बंधुओं का अनुपम स्वागत होगा। स्वयं महाराज और महारानी, परिजन और पुरजनों के साथ, नगर के सिंहद्वार पर उनके स्वागत के लिए उपस्थित होंगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीसरा पुरवासी—धन्य हैं हमारी महारानी। उन्हीं के विवेक के कारण महोबे के दिन फिरे हैं।

चौथा ग्रामवासी—भला, आल्हा-ऊदल को आने में इतने दिन क्यों लग गए ?

उन्मत्त पुरवासी—भाई, यह बताना तो मैं भूल ही गया। जो चर संवाद लेकर आया है, उसने बताया है कि माहिल ने कुड़हिर के राजा गंगाधर को फुसलाकर मार्ग में कन्नौज जाते हुए जगनिक को बंदी करा देने का षड्यंत्र रचा। उसमें असफल होकर उसने महाराज जयचंद को बनाफर-बंधुओं के विरुद्ध उकसाकर आल्हा को बंदी करवा दिया। बड़े संघर्ष के बाद राजाधिराज जयचंद ने उन्हें महोबा आने की अनुमति दी है।

सब लोग—छिः छिः ! इतना घृणित है यह राजा का साला ! इसे अपनी बहन के साथ विश्वासघात करने में भी संकोच नहीं !

पहला पुरवासी—हमने सुना है, यही चौहान-नरेश को महोबा पर चढ़ा लाया है।

सब लोग—यह बात भी बिलकुल ठीक है।

कुछ लोग—कल आल्हा-ऊदल का स्वागत हो जाने के बाद हम लोग बड़े समारोह के साथ श्मशान में माहिल मामा का पुतला जलाएँगे।

सब लोग—अवश्य जलाएंगे; अवश्य जलाएंगे।

एक ग्रामवासी—भाइयो, कल मैं माहिल मामा बनकर अपने मुंह में कालिख पोतूंगा और···और···और···?

दूसरा ग्रामवासी—तू और-और क्या करता है, साफ क्यों नहीं कहता ?

पहला ग्रामवासी—और सबसे बुद्धिमान् पशु पर सवारी गाँठकर नगर में घूमूंगा। सब लोग मेरे पीछे-पीछे शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे बजाएँगे। **(सब लोग हँसते हैं।)**

दूसरा ग्रामवासी—मेरी राय में तुझसे बुद्धिमान् पशु और कोई नहीं ! तभी तो तू राजा के रजकों के पड़ोस में रहता है। **(सब लोगों से)**

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुम लोग मुझे माहिल मामा बनाना, और मैं इसकी पीठ पर चढ़कर नगर में घूमूंगा।

तीसरा ग्रामवासी—अबे, राजा का साला तू नहीं, मैं बनूंगा। देखना, कैसा रूप भरता हूँ। लिल्ली घोड़ी पर मेरी सवारी निकलेगी। नगर की सब सुंदरियाँ मेरा सौंदर्य देखकर…

चौथा ग्रामवासी—सचमुच, माहिल के रूप में तू तीसरा कामदेव जँचेगा, और नगर की सब सुंदरियाँ तुझे देख आँखें मूंदकर मुँह फेर लेंगी।

पहला पुरवासी—इस पुण्य का प्रायश्चित्त भी उन्हें करना होगा।

दूसरा पुरवासी—माहिल के दर्शन का कोई प्रायश्चित्त नहीं, मामा ने अपने पूर्व जन्म में सैकड़ों ब्रह्म हत्याएँ अवश्य की होंगी, तभी इस जन्म में उन्हें यह गौरवशाली बुद्धि मिली है।

तीसरा पुरवासी—इस जन्म में उसने सैकड़ों तरह की लाखों हत्याएँ की हैं और कर रहा है। अकारण कितने युद्ध उसकी प्रेरणा से हुए और होनेवाले हैं।

चौथा पुरवासी—माहिल की तरह के लोगों की संख्या अब समाज में बढ़ती जा रही है, ऐसे लोग सब जगह पाये जाते हैं।

पहला पुरवासी—तभी तो राजाओं में परस्पर रोज युद्ध होते रहते हैं, कभी किसी सुंदरी के पीछे और कभी झूठी प्रतिष्ठा के अहंकार में।

दूसरा पुरवासी—कैसे हैं ये राजा लोग, जिनकी नकेल माहिलों के हाथ में रहती है।

पहला ग्रामवासी—तभी तो मैं कहता हूँ कि कल माहिल मामा का ऐसा सत्कार हो, जिसे देखकर किसी राजा को उनकी बात मानने का साहस न हो।

पहला पुरवासी—इस तरह के सामान्य उपचारों से राजाओं की बुद्धि शुद्ध होने की नहीं। यदि देश के सुदिन आनेवाले होंगे, तभी उनमें सद्‌बुद्धि का उदय होगा।

(डिंडिम-घोष निकट आता है।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पहला पुरवासी—माहिल के सत्कार की योजनाएँ फिर बनेंगी। अभी हम लोगों को चलकर नगर को सजाना चाहिए।

सब लोग—अवश्य ! अवश्य !

(कुछ एक दिशा में, शेष दूसरी दिशा में जाते हैं।)

(पट-परिवर्तन)

●

छठा दृश्य

स्थान—महोबा

[आल्हा-ऊदल के लौटने का समाचार पाकर नगर में हर्ष का महा-समुद्र उमड़ पड़ा है। प्रत्येक नागरिक का द्वार शुभ्र आतपत्रों से श्वेत है, बंदनवारों के व्याज से नंदन की सुषमा ही इस नगर का अभिनंदन करती प्रतीत होती है। गृहदेवियों ने घर के भीतर और बाहर मंगल-चौकें पूर-कर उन पर मंगल-घट स्थापित किए हैं, उन पर तथा प्रत्येक तुलसी-चौरे पर जलते हुए घृत-दीप मंगल-किरण विकीर्ण कर रहे हैं। ऐसे ही अनेक आयोजनों से महोबे का हर कोना अपने दोनों वीर पुत्रों को स्नेह-मय आलिंगन में बाँध लेने को उत्सुक है ! शंखों और तूर्यों का नाद और बनाफरों का जयजयकार चारों ओर गूँज रहा है ! जिन मार्गों से दोनों भाई गए हैं, वे वीरांगनाओं द्वारा पुष्पों एवं लाजों की वर्षा से पट-से गए हैं। राजद्वार की शोभा आज अपूर्व है, मानो महोबे की राजलक्ष्मी फिर लौट आई है। राजद्वार गर्जित-गजेन्द्र समूह से श्यामायमान और मनोगति-चंचल तुरंग-सैन्य से तरंगायित है। अनवरत झनझन, खन-खन शब्द करते हुए सैनिकों के शस्त्रों और कवचों का संगीत भी बड़ा ही

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सम्मोहक है। बीच-बीच में हर्षोन्मत्त जनता द्वारा गाई गई जगनिक के आल्हा-काव्य की कुछ कड़ियाँ भी झाँझ और मृदंग की ताल पर गूंज-गूंज जाती हैं।

परदा उठने पर महोबे के राजभवन का विविध मंगल उपकरणों से मंडित प्रांगण दिखाई देता है, जिसमें महारानी मल्हनादेवी, चंदेल-नरेश परमाल, उनके युवराज ब्रह्मादेव और आल्हा-ऊदल, उनकी माता देवल-देवी तथा जगनिक विराजमान हैं। महारानी मल्हनादेवी बड़े उल्लास से आल्हा-ऊदल की शौर्य-मंडित भुजाओं और शस्त्रों का पूजन कर रही हैं। परिचारकगण पूजा की सामग्री लिए खड़े हैं, और आवश्यक वस्तु माँगने पर उसे प्रस्तुत कर देते हैं। राजपुरोहित पुरुष-सूक्त का पाठ कर रहे हैं। पूजा संपन्न होने पर मल्हनादेवी आल्हा और ऊदल दोनों भाइयों को हृदय से लगाकर स्नेहाश्रुओं से अभिषिक्त कर देती हैं।]

मल्हनादेवी—मेरे बच्चो ! आज फिर मुझे मेरी माँ का खोया हुआ अधिकार मिला। क्यों न वहन देवलदेवी ?

देवलदेवी—यथार्थ है, जीजी ! आपने इन दोनों को युवराज ब्रह्मा से अधिक ही स्नेह दिया है। मैं तो केवल इनके जन्म का हेतु रही हूँ, स्तन्यपान और लालन-पालन आदि माँ के सारे कार्य आपने ही किए हैं। आप में तो इस सर्वहारा वसुंधरा की ममता साकार हो उठी है। (आल्हा और ऊदल से) तुम दोनों इन महीयसी माँ के चरणों में गिरकर इनसे इतने दिन रूठे रहने के अपराध की क्षमा माँगो।
(दोनों भाई मल्हना के चरणों में सिर टेकते हैं।)

आल्हा—पिता-तुल्य महाराज के आवेश में कहे गए वाक्यों की कटुता को हृदय में धारण कर हम लोगों ने इतने दिन आपके मातृत्व का निरादर किया, इसके लिये हम लोग लज्जित हैं। दयामयी माँ ! अपराध क्षमा हो, हम लोगों से अब ऐसी भूल फिर कभी न होगी।

मल्हनादेवी—(दोनों भाइयों को उठाकर फिर हृदय से लगाकर) तुम्हारे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चले जाने पर ही मैंने जाना कि विधाता ने माँ के हृदय में कितनी पीड़ा संचित कर दी है। (युवराज ब्रह्मा से) ब्रह्मा, तुम अपने इन ज्येष्ठ और कनिष्ठ बंधुओं से मिलकर क्षमा माँगो और अपने पिता के अनुचित व्यवहार का प्रायश्चित्त करो।

(ब्रह्मा बढ़कर आल्हा के चरण छूते और ऊदल को गले लगाते हैं।)

ब्रह्मा—आज मेरी दोनों भुजाओं की शक्ति फिर लौट आई है। दादा! हम लोगों के व्यवहार से आपको इतने दिन जो मानसिक यंत्रणा सहनी पड़ी, उसके लिये मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ।

(आल्हा ब्रह्मा को हृदय से लगाते और परमाल के चरण छूते हैं।)

मल्हनादेवी—**(परमाल से)** महाराज, आप शिर नीचा किए मौन क्यों खड़े हैं? आप भी इन दोनों भाइयों की भुजाओं का पूजन कीजिए, ये ही महोबे के छत्र और दंड हैं।

परमाल—**(दोनों भाइयों को हृदय से लगाकर)** ठीक कहती हो, देवी! वस्तुतः आज मेरी दोनों आँखों की ज्योति फिर लौटी है। अच्छा, लाओ पूजोपचार…।

आल्हा—नहीं महाराज! नहीं माँ! देश-सेवा का व्रत लेनेवाले का काम पूजा ग्रहण करना नहीं, शस्त्र सहन करना है। आज के अभिनंदन-वंदन का अधिकार यदि किसी को है, तो केवल महाकवि जगनिक और **(देवलदेवी की ओर देखकर)** इन पुण्यशीला धर्ममूर्ति माँ को, जिन्होंने मेरे घृणा और क्रोध से अंध बने हुए नेत्र खोलकर कर्तव्य का पथ दिखा दिया।

देवलदेवी—आल्हा, इस देश की माताएँ चाटुकारिता से नहीं, कर्तव्य-संपादन से संतुष्ट होती हैं। हाँ, ये बेटा जगनिक सचमुच वंद्य हैं, इन्हीं की वाणी ने मेरे पुत्रों के दुराग्रह को दूर किया, उनका सुप्त विवेक जगाया। **(मल्हना से)** जीजी, आपके इन कविपुत्र की कविता तो मानो महाशक्ति का विस्फोट है।

जगनिक—लज्जित न करो माँ! आपने ही अपने पुत्रों को वीर-रस का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चरम आश्रय बना रखा है, मेरी कविता ने तो सामान्य उद्दीपन का कार्य किया था। यह भी ध्यान रखिए माँ कि अत्यधिक असामयिक प्रशंसा कवि के सहज विकास में बाधक सिद्ध होती है।

ऊदल—तुम्हारी अत्यधिक प्रशंसा कोई कर ही क्या पायेगा, भैया! तुम्हारी कविता सदैव वीरों को जन्म देगी। वह जहाँ रहेगी, वहाँ वीरता का सागर लहराता रहेगा।

मल्हनादेवी—मैं जगनिक को जानती हूँ, ऊदल! आकाश की तरह निर्लिप्त और पवन की तरह निर्मल इन जगनिक को संसार की कोई आकांक्षा, कोई आसक्ति बाँध नहीं पाई। इन्हें न कोई पुरस्कृत कर सकता है, और न कोई कृतज्ञ बना पाता है। विंध्या की घाटियों और बेतवा की तराइयों में घूम-घूमकर ये न मालूम कौन संगीत खोज लाते हैं, जो हारे और थके हुओं के जीवन में उँडेल देते हैं। दान ही इनका काम है, आदान का इनके जीवन में स्थान नहीं।

जगनिक—क्या कहती हो माँ, क्या कहती हो! मुझ मातृ-पितृ-हीन को तुमने शैशव में अपना स्तन्य पिलाकर क्या नहीं दिया? हाय! क्या मैं उसके लिए कृतज्ञ नहीं? अमृत के वे घूंट पी-पीकर मुझे तुमसे क्या लेना शेष रह गया है, माँ!

(मल्हनादेवी के चरण पकड़ लेते हैं)

मल्हनादेवी—(उठाकर) अमर हो तुम्हारी कविता, बेटा!

जगनिक—जीवन के कंटक-पथ पर विचरण करते हुए माँ भारती को मैंने जो वन्यहार पहनाया है, उसे कविता कहना आप लोगों का अनुग्रह ही है। उसमें अमरता का कोई तत्त्व नहीं, न उसको राजकीय अथवा अन्य कोई आश्रय ही प्राप्त है। वैसे माँ का आशीर्वाद अमोघ होता है।

देवलदेवी—बेटा तुम्हारी कविता राजकीय अथवा किसी अन्य प्रकार के संरक्षण के अभाव में भी युग-युग तक जनता का कंठहार रहेगी, और अमरता का अभिनव आदर्श उपस्थित करेगी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—अपराध क्षमा हो, माँ ! मेरी कविता की चर्चा में आवश्यक कर्तव्य का विस्मरण हो रहा है। आज युद्ध-विराम का पन्द्रहवाँ दिन बीत रहा है।

ब्रह्मा—हम इसे नहीं भूले हैं। माता की आज्ञा से दिल्ली-नरेश के पास संदेशा भेजा जा चुका है कि हम कल युद्ध के लिए प्रस्तुत हैं। हमारा दूत लौट रहा होगा।

जगनिक—बहुत ठीक।

(दूत का प्रवेश)

ब्रह्मा—कहो, क्या दिल्ली-नरेश के पास हमारा संदेश पहुँच गया है ?

दूत—देव ! मैंने आपका संदेश तो पहुँचा दिया, पर दिल्ली-नरेश कल युद्ध करने को प्रस्तुत नहीं।

परमाल—क्यों ?

दूत—दिल्ली से संदेश आया है कि मुहम्मद ग़ोरी दल-बल से फिर आक्रमण करने आ रहा है। अतएव चौहान-नरेश कल प्रातःकाल ही उससे युद्ध करने के लिए प्रस्थान करेंगे। अब उन्होंने आपसे कुछ दिनों के लिए युद्ध-विराम की याचना की है। उन्होंने कहलाया है कि मैं ग़ोरी से निपटकर फिर बनाफरों का विश्रुत शौर्य देखने आऊँगा।

जगनिक—मुझे जो आशंका थी, वही हुआ।

ऊदल—क्या कहते हो भाई ?

जगनिक—ग़ोरी का आक्रमण एक राष्ट्रीय संकट है, उसके विरुद्ध अभियान सच्चा धर्म-युद्ध है। उसमें सबका आह्वान और सबका सहयोग आवश्यक है। किन्तु कितना घोर व्यक्तिवाद !

आल्हा—(परमाल से) महाराज, अब चलकर विश्राम कीजिए; दिल्ली-नरेश से कहला दीजिए कि हम उनकी प्रतीक्षा करेंगे।

जगनिक—(अपने आप) ओह ! भगवान् इस देश की रक्षा करो। मुझे बल दो, मैं जन-जीवन को सतेज बनाने का अपना कार्य करता रहूँ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(बड़े वेग से प्रस्थान।)

ऊदल—कहाँ जा रहे हो, भाई ?

(जगनिक कुछ नहीं सुनते, भावाविष्ट-से चले जाते हैं।)

(पट-परिवर्तन)

सातवाँ दृश्य

समय—सायंकाल

स्थान—महोवे का राजकीय उद्यान

[उद्यान के बीचोवीच प्रस्तर के एक चत्वर पर स्फटिक की आसंदियाँ प्रतिष्ठापित हैं। उन पर बैठे हुए जगनिक, आल्हा, ऊदल और महोवे के राजकुमार ब्रह्माजित वार्तालाप कर रहे हैं।]

ऊदल—(जगनिक से) भाई, तुम उस दिन सहसा न मालूम कहाँ अंतर्धान हो गए। तुम्हारे विना हमारा महोबा लौटने का आनन्द फीका हो गया। सब कुछ सूना-सूना लगता था। आज तुमको पाकर शरीर में मानो प्राण फिर लौटे हैं।

आल्हा—भैया, तुम विना कुछ कहे हुए सहसा कहाँ चले गए थे, हम लोग बड़े चिंतित थे।

ब्रह्माजित—माँ ने तो उसी दिन से अच्छी तरह भोजन नहीं किया है। उनकी आज्ञा से महोबा राज्य के कोने-कोने में तुम्हारी खोज की गई। तुम्हारे न मिलने पर प्रतिदिन हम सबकी उद्विग्नता बढ़ रही थी। इस तरह हम सबको चिन्ता के अथाह सागर में डुबाकर कहाँ चले गए थे, भाई ?

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

जगनिक—मैंने जैसे ही महाराज पृथ्वीराज के लौटने का समाचार सुना और यह जाना कि वह ग़ोरी के आक्रमण के प्रतिरोध के निमित्त जा रहे हैं, मेरा हृदय उनसे मिलने और वार्ता करने के लिए उत्कंठित और अधीर हो उठा। अतएव, मैं बिना अनुमति प्राप्त किए ही युवराज के अश्व हरनागर पर चढ़कर चौहान-नरेश के प्रत्यावर्तन के मार्ग पर बढ़ चला, दादा !

ब्रह्मजित—भैया, महोबा राज्य में तुम्हें किसी वस्तु के लिए अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं, तुम्हारा अधिकार मुझसे बहुत बड़ा है।

आल्हा—क्या चौहान-नरेश से तुम्हारी भेंट हो पाई ?

जगनिक—हो तो पाई, लेकिन उसमें कठिनाई पड़ी, दादा !

आल्हा—यह क्यों ?

जगनिक—मैं समझता था कि मैं दो-चार घंटे में चौहान-नरेश को पकड़ लूंगा। किन्तु हरनागर को निरन्तर पूरे वेग से दौड़ाकर भी मैं उस दिन उन्हें पकड़ नहीं पाया। कारण, ग़ोरी के आक्रमण का समाचार पाकर महाराज क्रोध से उन्मत्त हो उठे थे। वह प्रलय-प्रभंजन की तरह बढ़कर आक्रांता को शीघ्र-से-शीघ्र दंड देना चाहते थे, इसलिए पूरे दिन उन्होंने कहीं विश्राम नहीं किया। डेढ़ प्रहर रात्रि बीतने पर ही उन्होंने थकी हुई सेना को विश्राम का आदेश दिया, तभी मैं उन्हें पकड़ने में समर्थ हुआ।

ऊदल—फिर उस रात्रि में तो चौहान-नरेश से भेंट न हो पाई होगी ?

जगनिक—उस रात्रि में भेंट होने का कोई अवसर ही नहीं था। रात्रि में उन्होंने केवल एक प्रहर विश्राम किया, और प्रहर रात्रि रहे ही चल दिए। आदिभयंकर पर समारूढ़ उनकी वीरमूर्ति को देखकर प्रतीत होता था, मानो भगवान् सूर्य उदयाचल पर आरोहण कर अंधकार को ध्वस्त करने जा रहे हैं, अथवा ऐरावत पर अधिष्ठित वज्रपाणि इन्द्र वृत्र-वध के लिए विक्षुब्ध हो उठे हैं। दूसरे दिन फिर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मैं उनकी सेना के पीछे-पीछे चलता रहा, और मुझे उनसे भेंट का कोई अवसर नहीं मिला।

ब्रह्मजित—भैया, फिर उनसे तुम्हारी भेंट कैसे हो पाई?

जगनिक—सायंकाल जब वह संध्यावंदन के निमित्त एक जलाशय के तट पर ठहरे, तो मैं अवसर पाकर महाकवि चंद की सेवा में गया। वह बड़े प्रेम से मिले, और मुझसे वहाँ उपस्थित होने का कारण पूछा। महाराज के दर्शन की मेरी उत्कट अभिलाषा देखकर उन्होंने मेरी सहायता की, और जैसे ही महाराज संध्या-वंदन से निवृत्त हुए, मुझे उनके समक्ष उपस्थित कर दिया।

आल्हा—चौहान-नरेश से तुम्हारी क्या वार्ता हुई, भाई? उसे जानने की बड़ी उत्कंठा है।

जगनिक—महाकवि चंद से मेरा परिचय पाकर महाराज बड़े प्रसन्न हुए, और मेरे वहाँ जाने का कारण पूछा।

ऊदल—भैया, तुम्हारे आशय की थाह पाना कठिन है। चौहान-नरेश से तुमने क्या कहा?

जगनिक—मैंने उनसे कहा, मैं अपने अंतःकरण की प्रेरणा से एक निवेदन करने आया हूँ। जब उन्होंने सुनने की रुचि दिखाई, तो मैंने देश की राजनीति की वर्तमान विघटनात्मक प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि ग़ोरी का आक्रमण एक राष्ट्रीय संकट है, ग़ोरी अकेला चौहान-नरेश अथवा दिल्ली राज्य का शत्रु नहीं, वह तो समस्त भारतीय राष्ट्र, धर्म और समाज का शत्रु है। इसलिए उसके प्रतिरोध और उच्छेद का प्रयत्न भी राष्ट्रीय दृष्टि से संपन्न होना चाहिए।

आल्हा—इस पर चौहान-नरेश ने क्या कहा?

जगनिक—यह सुनकर महाराज ने मुझसे अपना आशय और अधिक स्पष्ट करने को कहा। मैंने कहा, यदि आप अनुमति दें, तो मैं आल्हा-ऊदल के साथ महोबे की सेना को आपके अधिनायकत्व में

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

ग़ोरी से लड़ने को प्रेरित करूँ। यह कार्य दूसरे राज्यों के लिए भी आदर्श होगा, और देश में राष्ट्रीय कार्य करने की परंपरा चलेगी। दिल्ली और महोबा-जैसे शक्तिशाली राज्यों को एक सहयोग-सूत्र में आबद्ध देख ग़ोरी-जैसे विधर्मी शत्रुओं को फिर कभी इधर देखने का साहस न होगा।

आल्हा—बड़ा महिमामय प्रस्ताव तुमने उनके समक्ष रखा, क्या चौहान-नरेश ने उसे स्वीकार किया?

ऊदल—भैया, क्या चौहान-नरेश की स्वीकृति प्राप्त कर तुम हम दोनों भाइयों को ग़ोरी के विरुद्ध धर्म-युद्ध में भाग लेने की प्रेरणा देने आए हो? हमारी तलवार उस दस्यु का मस्तक उतार लेने के लिए मचल पड़ी है। शीघ्र बोलो, भाई! हम इसी समय चलने के लिए प्रस्तुत हैं।

ब्रह्माजित—इस युद्ध में मैं भी भाग लूंगा। यदि चौहान-नरेश की अनुमति मिल गई, तो महोबे की सेना आज ही प्रस्थान करेगी। संभव है, पिताजी को यह योजना रुचिकर न प्रतीत हो, पर माताजी की तथा आप लोगों की सहायता से मैं उन्हें मना लूंगा।

जगनिक—वह सब तो हो जाता, पर चौहान-नरेश मेरे इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए। मेरी बात सुनकर उन्होंने हँसते हुए कहा कि ग़ोरी-जैसे अनेक आक्रांताओं के लिए मैं अकेला ही पर्याप्त हूं, अन्य राज्यों के सहयोग की अपेक्षा मुझे कदापि नहीं। ग़ोरी मेरे द्वारा कई बार पराजित हुआ, और वंदी बनाया गया है। प्राण-भिक्षा माँगने पर प्रत्येक बार मैंने उसे अत्यंत क्षुद्र समझकर क्षमा कर दिया है। किंतु इस युद्ध में मेरा बाणरूपी काल-सर्प उस दुष्ट का प्राण-पवन अवश्य पी जायगा। मेरी क्षमा-व्यवस्था में अब उसके लिए कोई स्थान नहीं। देखना चाहते हो, तो तुम भी मेरे साथ चलकर यह युद्ध देखो।

आल्हा—तो तुम वह धर्म-युद्ध देखने चले गए। इसीलिए तुम्हें लौटने में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इतना विलंब हुआ, भाई ?

जगनिक—हाँ, दादा ! चौहान-नरेश ने मेरा प्रस्ताव ठुकरा दिया, इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। पर कोई उपाय न था। मैंने देखा, हमारे शासकों का मिथ्याभिमान देश के दुर्भाग्य का प्रलय-मेघ बनकर बढ़ता-उमड़ता चला आ रहा है। हमारे समाज की ब्राह्मण-मेधा भी जो ऐसे संकट-काल में चाणक्य-जैसे क्रांतिदर्शी व्यक्तियों को जन्म देती है, अब प्रसुप्त और दिग्भ्रांत है।

आल्हा—ठीक कहते हो, भाई ! यदि चौहान-नरेश ने तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया होता, तो ग़ोरी के विरुद्ध सम्मिलित रूप से आयोजित धर्म-युद्ध के तीर्थ-सलिल में राजाओं के पारस्परिक वैमनस्य का कलुष धुल जाता, देश पवित्र होकर शक्तिशाली बनता, किंतु कोई बड़ी विपत्ति आने के पूर्व विवेक विदा हो जाता है।

जगनिक—यही बात है दादा !

ऊदल—(जगनिक से) भैया, तुम्हारी बात तो अधूरी ही रह गई। तुमने यह तो बताया ही नहीं कि चौहान-नरेश और ग़ोरी के युद्ध में क्या हुआ ?

जगनिक—भाई ऊदल, उस युद्ध का स्मरण कर अब भी मैं रोमांचित हो उठता हूँ। पहले मुझे यह देखकर बड़ा आघात लगा कि चौहान-नरेश की सेना की अपेक्षा ग़ोरी की सेना बहुत बड़ी है। किंतु महासमुद्र की तरह अनंत-विस्तीर्ण उस म्लेच्छ-सेना को देखकर चौहान-नरेश का रोष अगस्त्य की तरह तृषित हो उठा। उनका विशाल लौह-धनुष मंडलाकृति में आकाश से होड़ करता हुआ विजय-वैजयंती की भाँति ज्यों ही ऊपर उठा, वैसे ही सहस्र-सहस्र काल-भुजंग म्लेच्छों के अंग-अंग से लिपट गए। देखते-देखते ग़ोरी की आधी से अधिक सेना धराशायी हो गई। चौहान-नरेश का विकट वेष देखकर मैं सोच रहा था कि त्रिपुर-वध के लिए उद्यत भगवान् रुद्र ने क्या इससे अधिक शोभा पाई होगी। समस्त युद्ध-

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

क्षेत्र मधुमक्षिकायुक्त शहद के छत्ते के समान म्लेच्छों के दाढ़ीवाले शिरों से आच्छादित हो गया था। मुझे महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित रघु की पारसीक-विजय का स्मरण हो आया।

आल्हा—इस युद्ध का परिणाम क्या हुआ ?

जगनिक—चौहान-नरेश की आग्नेय-दृष्टि ग़ोरी को खोज रही थी। अपनी सेना के व्यूह के पृष्ठ भाग में अपने को सुरक्षित रखते हुए वह उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। किंतु जब दिल्ली की सेना के विकट आक्रमण से वह व्यूह छिन्न-भिन्न हो गया, और ग़ोरी क्रुद्ध महाराज के दृष्टि-पथ में आ गया, तो उसे देखते ही महाराज ने प्रलय-सूर्य की तरह प्रज्वलित होकर वज्र-जैसा अमोघ बाण अपने धनुष पर चढ़ाया। वह बाण उल्का की तरह उद्भासित होकर ग़ोरी का हृदय-रक्त पीने ही वाला था कि उसका स्वामिभक्त सेनापति अपने स्वामी पर मृत्यु-संकट देख सामने आ गया। एक निमेष में वह बाण म्लेच्छ-सेनापति का कवच फोड़कर ग़ोरी को घायल करता हुआ निकल गया। यद्यपि सेनापति के आत्म-बलिदान से ग़ोरी की रक्षा हो गई, पर वह बुरी तरह घायल होकर घोड़े से गिर गया। कुछ म्लेच्छ सरदार और सैनिक घायल ग़ोरी को लेकर युद्ध-क्षेत्र से भागे। अन्यों ने उसकी रक्षा के निमित्त चौहान-नरेश की विजयवाहिनी का डटकर प्रतिरोध किया। अधिकांश मारे गए, और शेष पगड़ी उतारकर शरणागत हुए। महाराज चाहते, तो पीछा करके ग़ोरी को पकड़ सकते थे, पर भागते हुए शत्रु का पीछा करना अधर्म मानकर उन्होंने एक बार फिर उसे छोड़ दिया।

ऊदल—बंधु, मुझे इस धर्म-युद्ध में भाग लेने की प्रेरणा पहले क्यों न दी ? यदि तुम कहते, तो मैं चौहान-नरेश की अनुमति प्राप्त किए बिना ही इस धर्म-कार्य में उनका अनुगामी होता।

आल्हा—यह प्रसन्नता की बात है कि चौहान-नरेश की विजय हुई, और एक संकट टल गया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—ऐसा नहीं है, दादा !

आल्हा—क्यों भाई ? क्या इस घोर पराजय के वाद भी ग़ोरी कभी फिर आक्रमण की बात सोच सकेगा ?

जगनिक—अवश्य ! मेरे विचार में वह आक्रमण की बात सोचेगा ही नहीं, करेगा भी।

आल्हा—आश्चर्य ! ऐसी आशंका तुम्हें क्यों है, भाई ?

जगनिक—कारण, ग़ोरी ने चौहान-नरेश तथा इस देश के अन्य नरेशों की मूलभूत कमज़ोरी को अच्छी तरह समझ लिया है, तभी उसे हारकर भी बार-बार आक्रमण करने का साहस होता है। उसने इस युद्ध में देख लिया है कि चौहान-नरेश की सेना म्लेच्छ सेना की अपेक्षा वहुत कम है। वह जानता है कि अगले युद्ध में बिना अन्य राज्यों से सहयोग प्राप्त किए हुए चौहान-नरेश इतनी सेना भी युद्ध-क्षेत्र में प्रस्तुत न कर पाएंगे। राजाओं में पारस्परिक सहयोग असंभव है, ग़ोरी के गुप्तचरों ने उसे समझा दिया है। इसलिए स्वस्थ होकर और पहले से अधिक सैन्यबल जोड़कर वह निकट भविष्य में पुनः आक्रमण अवश्य करेगा।

आल्हा—भैया, नियति के सूचीभेद्य अंधकार का पटल हटाकर तुम्हारी प्रज्ञा जो देख रही है, वह मुझे भी सत्य प्रतीत हो रहा है। भगवान् मंगल करें !

जगनिक—दादा, इसीलिए चौहान-नरेश का अद्वितीय पराक्रम और ग़ोरी का पराभव देखकर भी मुझे हार्दिक प्रसन्नता नहीं हुई। भविष्य की चिंता से मेरा हृदय व्याकुल है, इसका एक अन्य कारण भी है।

आल्हा—वह क्या ?

जगनिक—चौहान-नरेश थोड़े ही दिनों में महोवे पर आक्रमण अवश्य करेंगे। यहां से वह यही कहकर गए थे, और मेरे चलने के समय भी उन्होंने मुझे इस बात की याद दिलाई थी। उन्होंने कहा, मुझे युद्ध-स्थल में बनाफर-बंधुओं का विश्रुत शौर्य देखने की हार्दिक

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

अभिलाषा है, मैं शीघ्र ही उधर आऊँगा ।

ऊदल—हम लोग उनके स्वागतार्थ प्रस्तुत हैं, बंधु !

जगनिक—किन्तु भैया, दिल्ली और महोबे का यह भावी संग्राम देश के लिए अत्यंत अमंगलजनक सिद्ध होगा । उसकी कल्पना से ही मेरा हृदय काँप उठता है ।

ऊदल—क्या अब तुमको हमारी कृपाण और शौर्य पर आस्था नहीं रह गई है ? क्या महोबे को अब नितांत हीन-वीर्य समझने लगे हो ?

जगनिक—ऐसा नहीं है, भाई । मैं जानता हूँ, इस देश में महाराज पृथ्वीराज के वाण की समता करने की पूर्ण क्षमता बनाफरों की तलवार में है । किन्तु पृथ्वीराज के वाण और बनाफरों की कृपाण के संघर्ष में दिल्ली और महोबा दोनों ही राज्यों के प्रमुख शूर-सामंत और अधिकांश सैनिक बलि हो जाएँगे । फिर आगे यदि कभी ग़ोरी ने आक्रमण किया, तो अपने मृगेंद्र-विक्रम प्रमुख सामंतों और अधिकांश सैनिकों को गँवाकर महाराज पृथ्वीराज अकेले ग़ोरी की असंख्य धर्मांध म्लेच्छ-वाहिनी का सामना करने को वाध्य होंगे । मुझे उसी दिन की चिंता है ।

ऊदल—तुम्हारी चिंता का कारण यथार्थ है, पर उसका प्रतिकार ही क्या है ?

जगनिक—इस समय तो कोई प्रतिकार समझ में आता नहीं । ईर्ष्या-द्वेष ने राजाओं की बुद्धि पर पर्दा डाल दिया है । महाराज जयचन्द ने तुम्हें यहाँ आने की अनुमति इसीलिए दी थी कि तुम चौहान-नरेश की शक्ति तोड़ने के साधन बन सको । जयचन्द पृथ्वीराज के प्रति विशेष वैमनस्य का भाव रखते हैं ।

ऊदल—यह मुझे ज्ञात है । भैया, आज ही कन्नौज से यह समाचार भी आया है कि राजकुमार लाखन महोबा देखने आनेवाले हैं ।

जगनिक—नियति का विधान बड़ा वक्र प्रतीत होता है । दिल्ली और महोबे के युद्ध में संभवत: कन्नौज भी उलझ ही जायगा । परिणाम-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्वरूप पृथ्वीराज और जयचंद का द्वेष और बढ़ेगा। महाराज पृथ्वीराज ही इस समय उत्तरापथ की अर्गला के रूप में विद्यमान हैं। विधर्मी म्लेच्छ उसे तोड़कर पुनः गंगा-यमुना की पवित्र भूमि को पद-दलित करने का प्रबल प्रयत्न करेंगे। संभव है, महाराज जयचंद तब तटस्थ होकर यह दृश्य देखें।

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—महोवे के राजप्रासाद के सिंहद्वार का ऊपरी प्रकोष्ठ।

[प्रकोष्ठ के अलिंद पर नंगी तलवारें लिए शिरस्त्राण, वर्म और शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित आल्हा, ऊदल, कन्नौज के राजकुमार लाखनदेव, ब्रह्माजित आदि महोवे के तीनों राजकुमार तथा इंदल युद्ध-क्षेत्र में जाने के लिए तैयार खड़े हैं। भेरी, शंख, मर्दल और तूर्य आदि युद्ध-वाद्यों की उन्मादकारी ध्वनि चारों ओर फैल रही है। सेना का कोलाहल बढ़ रहा है। इसी समय जगनिक आते हैं। वह सामान्य नागरिक वेष में हैं, उनके हाथ में कोई अस्त्र नहीं है।]

ऊदल—हम लोग बड़ी देर से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे, भाई! तुम्हारी वाणी का ओज ही तो हमारी शक्ति का वास्तविक स्रोत और विजय का प्रधान साधन है। तुम्हारी वाणी की प्रेरणा से ही हमारे खड्ग युद्ध-क्षेत्र में प्रभाकर की प्रभा विकीर्ण करते रहे हैं। माँ रण-कंकण बाँधने आनेवाली हैं, तुम अभियान के पूर्व अपना विजय-गान सुना दो, बंधु!

लाखनदेव—कविश्रेष्ठ, मुझे भी युद्ध में जाने के पूर्व आपकी विश्रुत वाणी सुनने की उत्कंठा है, हम क्षत्रियों के अंतर की प्रसुप्त शक्ति को जगा देने का वही तो अव्यर्थ साधन है।

जगनिक—कुमार, मैंने महोबे के वैतालिकों को अभियान के पूर्व अपना युद्ध-गीत गाने को कह दिया है। अभी-अभी उनके समवेत स्वर में मेरी वाणी आपके पराक्रम की अभ्यर्थना करेगी।

(नेपथ्य में शंख-ध्वनि होती है, फिर चारणों का गीत सुनाई पड़ता है)—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

असी बरस तक कायर जीवें, खटिया परिके मरें सियार।
बरिस अठारह क्षत्री जीवें, आगे जीवन को धिक्कार।
ज्वालामाला बनिसागर सब बाधा देइँ पंथ माँ आय।
तऊ न क्षत्री धर्म-युद्ध ते कबहूँ धरें पछारी पाँय।
धर्म-युद्ध ते बढ़ि क्षत्री का और न कोई साध्य महान।
स्वर्ग निछावर उइ बीरन पर जो तजि देइँ धर्म-हित प्रान।

लाखनदेव—धन्य कविश्रेष्ठ! क्षत्रिय के जीवन का बड़ा उदात्त चित्र तुमने हमारी कल्पना में जगाया है। हमारी भुजाएँ फड़क उठी हैं।

आल्हा—जगनिक, किन्तु क्षात्र-धर्म की यह ओजस्विनी व्याख्या क्या आज हम तुम्हारे मुख से नहीं सुनेंगे? तुम्हारी वाणी आज तुम्हारे ही कंठ में स्तब्ध क्यों हो गई है?

ब्रह्माजित—जगनिक भाई, दादा ठीक कहते हैं। तुम्हारी वाणी तुम्हारे कंठ से फूटकर विशेष शक्ति और स्फूर्ति का संचार करती है। आज वह मौन क्यों है? युद्ध में जाने के पूर्व तुम्हारे भीतर ऐसी उदासीनता तो कभी नहीं देखी गई!

ऊदल—भैया, आज तुम निरस्त्र भी हो! क्या युद्ध में चलने का विचार नहीं?

जगनिक—युद्ध में अवश्य चलूंगा, भाई! किन्तु···!!

आल्हा—किन्तु क्या?

जगनिक—यही कि आज मेरे हृदय में न तो विजय-गीत गाने की प्रेरणा शेष है, और न शस्त्र धारण करने का आवेश; फिर भी मैं युद्ध में चलूंगा और निरंतर आप लोगों के साथ ही रहूँगा, दादा!

ऊदल—तुम्हारी यह मनोदशा तो हमारे लिए एक पहेली है! आज तुम्हें क्या हो गया है, भैया?

जगनिक—कोई नई बात नहीं। मुझे दिल्ली और महोबे का यह गृह-युद्ध देश, धर्म और समाज के लिए सदैव अमंगलजनक प्रतीत हुआ है। मैंने इसे रुकवाने के सब संभव प्रयत्न भी किए, किंतु जिस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समय व्यक्ति या समाज मदांध होकर विनाश के मार्ग पर चलने लगता है, तब उसे अपने अंतरात्मा की विवेक वाणी, जो कवि-कंठ से फूटती है, सुनने का अवकाश नहीं रहता। महाभारत में अथवा यादवों के गृह-युद्ध में विनाश का जैसा रोमहर्षक दृश्य देखा गया था, वैसा ही आज मुझे अपनी इन आँखों से देखना है। महाभारत के युद्ध के मूल में फिर भी एक सिद्धांत था, वह धर्म-अधर्म, सत् एवं असत् का युद्ध था। पर, आज जो संग्राम होने जा रहा है, वह निरर्थक रक्तपात के अतिरिक्त और कुछ नहीं। मिथ्याभिमान, झूठी राजपूती शान और निरुद्देश्य शौर्य-प्रदर्शन के लिए लड़े जाने-वाले इस आत्मघाती युद्ध में संसार का अप्रतिम शौर्य अपने ही हाथों निःशेष हो जायगा, अपने सपूतों का यह सर्वनाशकारी अंतर्विरोध देखकर भारत-भूमि की छाती फट जायगी। अभागा है वह कवि, जो ऐसा युद्ध देखने को बाध्य होता है। इस प्रकार के अंतर्विरोध में विजय की कल्पना आत्मप्रवंचना-मात्र है, पराजय—दोनों पक्षों की पराजय ही एकमात्र ध्रुव सत्य है। इसीलिए आज मेरे भीतर विजय-गीत गाने का उल्लास नहीं, शस्त्र ग्रहण करने की अभिलाषा नहीं। कवि को सत्य का प्रयोक्ता होना चाहिए, आज इस युद्ध को मैं अपनी वाणी और जीवन में किस सत्य की अवतारणा का माध्यम बनाऊँ?

ऊदल—ठीक कहते हो, भाई! युद्ध में महोबे की क्षति चाहे जितनी हो, पर पृथ्वीराज की विजय-कामना भी धूल में मिल जायगी।

जगनिक—यह तो होना ही है। मुझे भय है कि चौहान-नरेश को महोबे पर आक्रमण करने के अपने अभिमानपूर्ण दुराग्रह के लिए पश्चात्ताप अवश्य करना होगा। लेकिन होगा वह इस देश का दुर्भाग्य ही!

ऊदल—भैया, तो फिर आज के इस युद्ध में तुम···।

जगनिक—भाई, आज के इस युद्ध में मैं निरंतर तुम्हारे साथ रहूँगा। इंद्र आदि देवताओं को भी स्तंभित करनेवाला तुम लोगों का रोमांच-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कारी अपूर्व पराक्रम मैं निर्निमेष होकर देखूँगा। आज स्वर्ग की अप्सराएँ वीरों का वरण करने के लिए परस्पर स्पर्द्धा करेंगी। किंतु वय, पराक्रम, राज्य और काम-मद से मत्त महाराज पृथ्वीराज के हठ के कारण अपनी यह पुण्य भूमि अपने अन्यतम वीरों से वंचित हो जायगी। इसीलिए परिणाम में देश और धर्म के लिए निश्चित रूप से अमंगल-जनक इस युद्ध के लिए मेरे कवि-हृदय में कोई उत्साह नहीं। फिर भी इस युद्ध के उपरांत मैं तुम लोगों के देव-दुर्लभ शौर्य का अपनी वाणी की समस्त श्रद्धा-भक्ति और शक्ति के साथ गान करूँगा। मैं प्रयत्न करूँगा कि मेरे वीर-गीत की अजस्र-धारा में तुम्हारी कीर्ति का बोहित आचंद्र दिवाकर गतिमान रहे। लोग जगनिक को भूल जायँगे; किंतु तुम्हारा नाम युग-युग तक जन-जन का कंठहार रहेगा।

आल्हा—भाई जगनिक, मैं समझता हूँ कि वीर-हृदय में यश की आसक्ति भी नहीं होनी चाहिए, तभी क्षात्रधर्म का ठीक-ठीक निर्वाह हो पाता है। कर्तव्य की प्रेरणा से खड्ग की धारा में निःसंग होकर जीवन के बोहित को चलाते रहना यही सच्चा वीर-धर्म है। तुम हमें अपनी वाणी से वही पथ दिखाओ। क्षत्रिय की वीर गति और योगी की परम सिद्धि दोनों एक ही हैं। अब महाराज पृथ्वीराज के अविवेक की चर्चा व्यर्थ ही है। चौहान-नरेश ने कदंबवास (कैमास) जैसे अपने परम पराक्रमी मंत्री का अपने ही हाथों वध कर डाला, अप्रतिभट कन्ह की आँखों पर पट्टी चढ़वा दी, हादुलीराय हम्मीर-जैसे अपने शक्तिशाली सामंत को अपमानित कर शत्रु बना लिया और एक-से-एक बढ़कर अनेक अप्रतिम वीरों की बलि व्यर्थ के युद्धों में दे दी। ग़ोरी-जैसा शत्रु उनके शिर पर मँडराता ही रहता है, फिर भी उन्होंने महोबे पर आक्रमण कर ही डाला। ऐसे उद्धत अहंकारी को हिताहित पर विचार करने का समय कहाँ? मैं यह जानता हूँ कि दिल्ली, कन्नौज और महोबा-जैसे शक्तिशाली हिंदू

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

शासन-केंद्रों की पारस्परिक युद्ध-ज्वाला में देश का मंगल दग्ध हो रहा है, पर उपाय ही क्या है ? हमारे अधिकांश शासकों ने राजनीतिक दूरदर्शिता और विवेक को सिंहासन पर समासीन होते ही अपने पादपीठों के नीचे कुचलकर अलग रख दिया है।

जगनिक—दादा, आपका कथन यथार्थ है। आप मूर्तिमान् क्षात्र-धर्म हैं। महाकवि चंद की वाणी भी आपका यश सुनकर उच्छ्वसित हुई है। किंतु दुःख यही है कि शासन और समाज की दृष्टि में आज आप-जैसे नर-रत्नों के ज्वलंत शौर्य और प्रबुद्ध विवेक का कोई उपयोग नहीं। मिथ्यापरायण चाटुकार राजनीति-विशारद माने जाते हैं, सर्वत्र उन्हीं की तूती बोलती है। देश पर घिरनेवाली दुर्भाग्य की काली घटाओं को अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ से उड़ा देने की क्षमता जिनमें है, वे उपेक्षित हैं।

आल्हा—जगनिक, विधि के विधान को मिटा देनेवाले क्रांतदर्शी पुरुषों का समाज में अभाव है और उपेक्षा भी। नियति के बंधनों की डोरी काल निरंतर खींचा करता है, वही विनाशकाल आने पर बुद्धि में वैपरीत्य उत्पन्न कर देता है। अतएव इस विषम परिस्थिति में हमको नितांत निर्विकार होकर अपना कर्तव्य संपादित करना चाहिए। देश-काल अथवा किसी व्यक्ति-विशेष पर दोषारोपण करने से हृदय में दुर्बलता आती है, और कर्तव्य-कर्म में प्रमाद करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। भगवान् की यही इच्छा है।

जगनिक—यही बात है, दादा !

आल्हा—भगवान् का विधान अपने नियमों की अवमानना कभी सहन नहीं करता, उसके लिए कठोर-से-कठोर दंड की व्यवस्था ही होती है। तुम्हारी इच्छा थी, हम सब महाराज पृथ्वीराज के नेतृत्व में ग़ोरी-जैसे देश और धर्म के शत्रुओं के विरुद्ध एक होकर खड़े होते। किंतु वह सौभाग्य हमारा न हुआ, और हमें उलटे पृथ्वीराज-जैसे देश के वरेण्य वीर के विरुद्ध शस्त्र उठाना पड़ रहा है। महाभारत का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

युद्ध रोकने का पूरा प्रयत्न स्वयं भगवान् ने किया था, किंतु दुराग्रही कौरवों ने उनकी बात भी कहाँ मानी थी ? अंततः भगवान् ने ही अर्जुन को युद्ध करने और अधर्म का पक्ष लेने के कारण पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण-जैसे प्रातःस्मरणीय पुण्य पुरुषों का वध करने को बाध्य किया। उन्हीं भगवान् की इच्छा के समक्ष हम भी नत हैं।

ऊदल—दादा, आप ठीक कहते हैं। अब तो हमें इंद्र के अमोघ वज्र की तरह अविलब शत्रु-सैन्य पर टूटना है, और पृथ्वीराज का गर्व धूल में मिला देना है। (जगनिक से) भाई, अभी तुम कह रहे थे कि चौहान-नरेश के महाकवि चंदबरदायी की वाणी द्वारा दादा के यश का वर्णन हुआ है। यह कैसी बात है ?

जगनिक—महाकवि चंद बड़े उदार और सहृदय हैं। देश के सभी श्रेष्ठ वीरों के चरित्र-चित्र उनकी लेखनी से अकित हुए और हो रहे हैं। दादा ने गया के पठानों को पराजित किया था, इसका उन्होंने बड़ा उदात्त और ओजस्वी वर्णन किया है—

बैठे सु पाट आल्हा नरेश। मारियो जाय पूरब्ब देश।
पट्ठान गया के जेरकीन। तहँ दर्व कोटि तिय लुट्टिलीन।

आल्हा—ठहरो जगनिक ! मुझे लज्जित न करो, मैं इस गौरव का अधिकारी नहीं। महाकवि चंद ने मेरे-जैसे अपदार्थ को आदर देकर अपनी महीयसी वाणी का अपकार ही किया है। तुम स्वयं जानते हो, न तो मैं 'नरेश' ही हूँ और न मैं कभी किसी सिंहासन पर बैठा हूँ। (ठहरकर) देखो, मंदिर के वाद्य बज उठे हैं। माँ पूजा समाप्त कर रण-कंकण बाँधने आने ही वाली हैं। सुनो, सुवासिनियों का मंगल-गीत सुनाई पड़ने लगा है, महोवे के ओजस्वी चारण जगनिक का रोमांचकारी अभियान-गीत गाने लगे हैं।

(नेपथ्य में अनेक प्रकार के वाद्यों की ध्वनि, महिलाओं के कंठ के स्अपष्ट स्वर और सर्वोपरि चारणों का गान फिर सुनाई पड़ता है)—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समर भूमि मा छत्री कोपैं रोपैं अटल धरा पर पाँय,
संका ब्यापैं महाकाल के लोटैं गगन चरन मा आय।
पानी पीवैं तरवारिन का प्रलयानल का करैं अहारु,
ऐसे छत्री की छाती पर सोहै सदा विजय का हारु।

लाखनदेव—मित्र ऊदल, बड़ा उन्मादकारी है युद्ध का यह आह्वान ! प्रेयसी के मुख-चंद्र की ज्योत्स्ना और अलकावलि की स्निग्ध गंध में भी ऐसा सम्मोहन और आकर्षण नहीं होता।

ऊदल—ठीक कहते हो, बंधु ! अब विलंब असह्य है।

सब लोग—हाँ हाँ, अब विलंब असह्य है। (सबके रोमांच हो आया है, भुजाएँ फड़क उठी हैं, गायन और वाद्य की ध्वनि निकट आ जाती है।)

जगनिक—अधीर न हो वीरो, अब विलंब नहीं। लो, माँ आ गईं।

[देवलदेवी के साथ महारानी मल्हनादेवी का प्रवेश। महारानी के हाथ की थाली में बहुमूल्य रत्नों से जड़े हुए कई स्वर्ण-कंकण हैं। माता देवलदेवी के हाथ में तिलक और आरती का स्वर्ण-पात्र है। पीछे-पीछे सौभाग्यवती स्त्रियाँ और चारणियाँ मंगल-गीत गाती हुई चल रही हैं। सब लोग दोनों माताओं के चरणों की वंदना करते हैं।]

मल्हनादेवी—विजयी हो मेरे बच्चो ! वीर प्रसू के जीवन का यह सबसे गौरवमय पर्व है, क्षत्राणी अपने लाड़लों को युद्ध में भेजकर ही जीवन सार्थक समझती है। (देवलदेवी से) बहन, पात्र इधर लाओ, इन लोक-विजयी महावीरों के रोली लगाकर रण-कंकण बाँध दूँ।

ब्रह्माजित—अब देखना है, आज आपके हाथ की रोली किसके मस्तक पर पहले-पहल बालारुण के समान उदित होती है।

मल्हनादेवी—मेरा ही पुत्र होकर तू मेरे कर्त्तव्य-ज्ञान की परीक्षा लेने चला है। आओ, वत्स लाखनदेव ! तुम्हें पहले तिलक लगाकर कंकण पहना दूँ। माता का आशीर्वाद तुम्हारा रक्षा-कवच बनेगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाखनदेव—(हाथ जोड़कर) मैं कृतकृत्य हो गया अब ! महोबे की महिमामयी धात्री, साक्षात् अन्नपूर्णा, के हाथों आज मुझे जो सम्मान मिला है, उससे मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ। कन्नौज की परंपरा के अनुसार सेनापति के ललाट पर ही पहला तिलक किया जाता है। आप विश्वास रखें माँ, मेरे रहते महोबे का आन पर आँच नहीं आएगी।

मल्हनादेवी—कन्नौज की इस परंपरा का ज्ञान मुझे नहीं था, बेटा ! पृथ्वीराज के इस क्रूर अभियान के विरुद्ध युद्ध-संचालन का सारा उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर डालने का विचार नहीं था !

लाखनदेव—(हँसकर) तो क्या तुम मुझे इस कार्य के अयोग्य समझती हो, माँ ?

मल्हनादेवी—कदापि नहीं बेटा ! तुम्हारा अल्प वय देखकर अवश्य न जाने क्यों मेरे मातृ-हृदय में व्याकुल स्पंदन होता है। फिर तुम महोबे के महामान्य अतिथि भी तो हो ! तुम्हारी सुरक्षा का पूरा-पूरा उत्तरदायित्व हमारे ऊपर है। मैं इस युद्ध-व्यापार में तुमको नियोजित ही करना नहीं चाहती थी, लेकिन तुम नहीं माने।

लाखनदेव—कैसे मानता, माँ ! मैत्री-धर्म की अवहेलना मैं कैसे करता ? अपने इन मित्रों के साथ आज के युद्ध में सफल मृगया का आनन्द मिलेगा। पृथ्वीराज चोर की तरह कन्नौज गए थे, और यह कन्नौज़ का राजकुमार उनके सामने अपनी हिमालय-सी अडिग छाती अड़ाकर उनके बाणों के विवेक और बल की परीक्षा करेगा।

मल्हनादेवी—सुनो, बेटा, ब्रह्माजित ! तुम तीनों भाई आज के युद्ध में राजकुमार लाखनदेव के अंगरक्षक होकर रहोगे। तुम तीनों वज्र की ढाल बनकर युद्ध में निरन्तर उनके साथ रहो।

देवलदेवी—(आल्हा और ऊदल से) राजकुमार लाखनदेव तुम लोगों की मैत्री के कारण ही आए हैं, तुम लोगों पर उनकी सुरक्षा का विशेष उत्तरदायित्व है। तुम लोगों ने मेरे स्तन्य के साथ वीर-धर्म

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का अमृत पिया है, तुमको मैंने मृत्यु को भी अमृत बनाकर पीने की सीख दी है। सावधान, राजकुमार लाखनदेव को साथ लेकर ही लौटना।

ऊदल—ऐसा ही होगा माँ, आप निश्चित रहें। ऊदल मित्रवर लाखन के विना युद्ध-भूमि से नहीं लौटेगा।

लाखनदेव—वात्सल्य की इस सुर-सरिता में अवगाहन कर मन और प्राण शीतल हो गए हैं। (हँसकर) माताओ, आप लोगों ने मेरे लिए इतने अंग-रक्षक बना दिए हैं, और मैं अकेले ही अपने सब बंधुओं का अंग-रक्षक बनकर रहना चाहता हूँ।

मल्हनादेवी—(लाखन के मस्तक पर तिलक लगाकर) लो बेटा, यह रोली तुम्हारा मंगल करे। (कंकण बाँधकर) आज मैं तुम्हारे हाथ में वही महिमाशाली कंकण बाँधती हूँ, जिसे धारण कर महोबे के पूर्व-पुरुष ने महमूद गज़नवी का अहंकार धूल में मिला दिया था।

लाखनदेव—मैं उपकृत हूँ, माँ!

मल्हनादेवी—वत्स, तुम लोग भी आओ, मैं तिलक कर दूँ।

(आल्हा, ब्रह्माजित, ऊदल आदि एक-एक कर सबके ललाट पर तिलक लगाती हैं, और उनके दाहिने मणिबंध पर कंकण बाँधती हैं। फिर देवलदेवी आरती-पात्र ऊपर उठाकर सभी के चारों ओर पाँच-पाँच बार घुमाती हैं। सब भावाविष्ट-से सिर झुकाए चुपचाप खड़े हैं। इसी समय शंख और तूर्यनाद होता है।)

आल्हा—संभवतः महाराज सेना को विदाई देने के लिए सिंह-द्वार पर आ गए हैं, अब हम लोग भी चलें। देखो, वैतालिकों का दृप्त गीत सुनकर हमारी सेना का महासागर विक्षुब्ध हो उठा है।

(नेपथ्य में गान की ध्वनि)—

मानुष देही यंह रहि है ना, जैहे छूटि, धरा, धन, धाम।
प्रलय-प्रभंजन की पीठी पर चढि, बढ़ि करौं समर माँ नाम।

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा दृश्य

स्थान—रण-भूमि

[पटह तूर्य, भेरी, शंख, मर्दल आदि युद्ध-वाद्यों का तुमुल घोष हो रहा है। वीरों का सिंहनाद सुनकर आकाश का हृदय दहल उठा है। शस्त्रास्त्रों के आघात-प्रत्याघात से निकली हुई चिनगारियां चारों ओर उड़ रही हैं। हाथी, घोड़ों के चीत्कार से दिशाएँ बधिर हो रही हैं। युद्ध-भूमि के एक सिरे पर महाराजा पृथ्वीराज का शिविर दिखाई पड़ता है, उसके द्वार पर एक गुल्म सैनिक धनुषों पर बाण चढ़ाए खड़ा है, दूसरे गुल्म के हाथ में नंगी तलवारें हैं।]

चामुंडराय—(नेपथ्य में) महाराज! कन्नौज के राजकुमार लाखनसी के नेतृत्व में महोवे की सेना ने बड़ा दुर्द्धर्ष आक्रमण किया है। अभी दो प्रहर भी नहीं बीते हैं, और हमारी आधी से अधिक सेना का संहार हो गया है।

पृथ्वीराज—(नेपथ्य में) क्या कहते हो चामुंडराय? हमारी आधी से अधिक सेना का संहार हो गया, और तुम सब लोग खड़े देखते ही रहे!

चामुंडराय— (नेपथ्य में) ऐसी बात नहीं है, महाराज! हम लोगों ने अपने संपूर्ण पराक्रम के साथ उनका विरोध किया और कर रहे हैं। किन्तु लाखनसी और ऊदल आज हमारी सेना के लिए यमराज बन गए हैं। हमारे कई बड़े-बड़े सामंत और सरदार मारे जा चुके हैं। महोवे के तीनों राजकुमार प्राणपण से लाखनसी की रक्षा कर रहे हैं। उनके कारण हमारे पक्ष के किसी वीर का लाखनसी के निकट पहुंचना भी असम्भव हो रहा है। वह देखिए, कवि चंद आ रहे हैं, उनसे मेरे कथन की पुष्टि होगी, और आल्हा के मोर्चे के समाचार मिलेंगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

(एक ओर से सैनिक वेष में कवि चंद आते हैं, और दूसरी ओर से महाराज पृथ्वीराज और चामुंडराय का प्रवेश।)

पृथ्वीराज—युद्ध का क्या समाचार है, महाकवि ?

चंद—महाराज, इन आँखों से मैंने ऐसा युद्ध पहले कभी नहीं देखा था। आपके प्राय: सभी विजयाभियानों में मैं साथ रहा हूँ, गोरी के साथ हुए सब संग्राम भी मैंने देखे हैं। पर, शौर्य का यह दिव्योत्कर्ष अपूर्व है, अनुपम है। महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु ने जिस प्रकार कौरवों के पैर उखाड़ दिए थे, ठीक उसी प्रकार लाखनसी, ऊदल, ब्रह्माजीत, रणजीत आदि महोबे के तरुणों ने प्रचंड प्रभंजन बनकर आपकी सेना को पतझर के जीर्ण-शीर्ण पीत पत्रों की तरह उडा दिया है। प्रलयादित्य की तरह वे रण-भूमि में तप रहे हैं। आल्हा का पराक्रम तो देखने ही योग्य है, वह तो वस्तुत: शौर्य का उमड़ता-घुमडता, गरजता-वरसता संवर्तक मेघ ही प्रतीत होता है। उसके प्रमत्त गजेन्द्र पंचशावद की साँकल की लपेट में आपके असंख्य सैनिक हताहत हो रहे हैं। उसके पास भवानी की दी हुई अमोघ खड्ग है, उसके मोर्चे पर डटने वाले हमारे सब प्रमुख सामंत मारे जा चुके हैं। जिस समय मैं यहाँ आ रहा था, उस समय आल्हा और संयमराय का रोमहर्षण संग्राम हो रहा था।

चामुंडराय—महाकवि, आपने अपने मंत्र-बल से आल्हा की शक्ति के बढ़ते हुए वेग को नहीं रोका ?

चंद—मैंने वह भी किया, पर असफलता ही हाथ लगी। कारण, आल्हा सिद्ध-श्रेष्ठ गुरु गोरखनाथ का शिष्य है, और स्वयं भी तंत्र-विद्या में निष्णात है। उस पर मेरा मंत्र-बल विफल हो गया। यदि इस प्रकार का संग्राम एक प्रहर भी और चला, तो हमारी सेना का सर्वनाश हो जाएगा।

पृथ्वीराज—(आवेश से) इस स्थिति का निराकरण अविलम्ब होना चाहिए। मैं समझता था कि मेरे सामंत ही महोबे की शक्ति को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धूल में मिलाने के लिए पर्याप्त हैं। इसीलिए मैं अब तक युद्ध में नहीं गया था। किन्तु अब मैं स्वयं चल रहा हूँ। (चामुंडराय से) आदिभयंकर को आने दो। (चंद से) महाकवि कन्ह की आंखों की पट्टी खुलवा दो, कैमास के साथ वह कन्नोज के उद्धत राजकुमार लाखनसी और ऊदल के मोर्चे पर चलें। मैं स्वयं आल्हा के मोर्चे पर चलता हूँ।

चामुंडराय और चंद (दोनों)—जो आज्ञा, देव !

(नेपथ्य में घोड़ों की टापों का शब्द)

पृथ्वीराज—वायु-वेग से घोड़े को दौड़ाता हुआ वह कौन आ रहा है ?

चंद—यह कैमास हैं, बड़े उद्विग्न दिखाई पड़ते हैं।

(कैमास घोड़े को छोड़कर महाराज पृथ्वीराज के सामने आकर अभिवादन करते हैं, उनका शरीर स्वेद तथा रक्त से सना हुआ है।)

पृथ्वीराज—क्या समाचार है ?

कैमास—महाराज, महोबे का यह युद्ध अप्रत्याशित रूप से भयंकर हो उठा है। लाखनसी के मोर्चे पर महापराक्रमी राजकुमार ताहिरदेव महोबे के युवराज ब्रह्माजित के हाथों मारे गए हैं। आल्हा के मोर्चे पर संयमराय बुरी तरह घायल हुए हैं, और मुमूर्षु हो युद्ध-क्षेत्र में पड़े हैं।

पृथ्वीराज—(आश्चर्य से) मृगेन्द्र-विक्रम संयमराय बनाफर आल्हा के हाथों आहत हो मुमूर्षु हैं, मेरा महापराक्रमी पुत्र ताहिरदेव मारा गया ! (रोष से) कैमास, कन्ह को लेकर तुम आल्हा को रोको। मैं लाखनसी के मोर्चे पर जाकर अपने बाणों से उन छोकरों की छाती छलनी बनाता हूँ।

(सहसा जगनिक का प्रवेश। हाथों में कोई अस्त्र या शस्त्र नहीं, कंधे पर उत्तरीय लहरा रहा है, लम्बे केशों पर धूल जम गई है। युद्ध की भीषण अशान्ति के बीच उनके मुख-मंडल पर अविचल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शान्ति की दिव्य आभा विराजमान है।)

जगनिक—(पृथ्वीराज को अभिवादन कर) देव, अविनय क्षमा हो।

पृथ्वीराज—तुम कौन हो? क्या महोबे के कवि जगनिक?

चंद—वही हैं यह, महाराज! (जगनिक से) अंतक की इस लीला-भूमि में आप शत्रु-पक्ष के बीच निरस्त्र क्यों घूम रहे हैं, कवि?

जगनिक—(चंद से) महाकवि, आपसे क्या कहूँ? संसार में कवि का कोई शत्रु नहीं होता। प्रेम का दिव्य संगीत सुनाकर सब प्रकार की शत्रुता के विषधरों को कीलित करते रहना ही कवि के जीवन का प्रमुख व्यापार है। कवि में शिव और सत्य के अतिरिक्त अन्य किसी पक्ष का अभिनिवेश अनुचित है। फिर आज के युद्ध में तो अपने ही राष्ट्र-शरीर के दो अंग एक-दूसरे का सर्वनाश करने पर तुले हैं। मैं किसके लिए शस्त्र उठाऊँ? क्या इस आत्मघाती रक्तपात को देख-कर आपको व्यथा नहीं होती महाकवि?

चंद—होती क्यों नहीं? पर युद्ध-भूमि में ऐसी बातों पर विचार करने का अवकाश और उपयुक्त अवसर नहीं होता, कवि!

जगनिक—महाकवि, मेरे विचार से युद्ध-भूमि ही विवेक की सबसे बड़ी कसौटी है, 'युद्धस्व विगतज्वरः' कहकर भगवान् ने अर्जुन को यही रहस्य बताया था। युद्ध-भूमि में उतरकर वीर यदि विवेक छोड़ दे, तो उसके धर्म और दस्यु के कर्म में अंतर ही क्या रह जायगा?

पृथ्वीराज—कवि, तुम बड़ी विदग्ध वाणी बोलते हो? कहो तो, तुम इस समय यहाँ क्यों आए हो?

जगनिक—महाराज, मैं रुद्र की यह संहार-लीला देखता हुआ युद्ध-भूमि में विचर रहा था। इसी समय मुझे आपकी वीर-वाणी सुनाई पड़ी। ज्ञात हुआ, महाराज स्वयं युद्ध में लाखनसी और ऊदल के मोर्चे पर जा रहे हैं, और अपने कालसर्प की तरह फूत्कार करते हुए बाणों से उन छोकरों की छाती छेद डालने को कृतसंकल्प हैं। मुझे महाराज का यह निश्चय अनुचित प्रतीत हुआ, और यही निवेदन करने मैं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

पृथ्वीराज—तुम्हारा आशय अभी स्पष्ट नहीं हुआ, कवि !

जगनिक—महाराज, आप अपने अनेक प्रमुख सामंतों और अपने राजकुमार ताहिरदेव तथा सूरजदेव की मृत्यु से क्षुब्ध होकर स्वयं लाखनसी और ऊदल के मोर्चे पर जा रहे हैं। चक्रव्यूह में सात महारथियों द्वारा अभिमन्यु का मारा जाना लोक में जैसा निंदित हुआ है, वैसा ही महाराज का यह कर्म होगा। लाखनसी और ऊदल-जैसे बालकों पर बाणों का प्रहार महाराज के कीर्तिचंद्र को चिरकाल के लिए कलंकित कर देगा। राजा का युद्ध राजा से अथवा समान शक्ति और शीलवाले वीर के ही साथ शोभा पाता है।

पृथ्वीराज—अच्छा, कन्ह, कैमास, पुंडीर और चामुंडराय लाखन के मोर्चे पर जायँ और मैं महाकवि के साथ आल्हा को देखता हूँ। देखो चामुंडराय, लाखन और ऊदल अब आगे न बढ़ने पाएँ।

चामुंडराय—(सिर झुकाकर) यही होगा महाराज !

(पट-परिवर्तन)

*

तीसरा दृश्य

स्थान—वही रण-भूमि

[युद्ध का कोलाहल अधिक दारुण हो उठा है। धरती शवों से पटी पड़ी है, घायलों की आह और कराह के कारण दृश्य बड़ा वीभत्स दिखाई पड़ता है। सैनिकगण लाशों और घायलों पर पैर रखते हुए बढ़ते और युद्ध करते हैं। सहसा ब्रह्माजित का प्रवेश। उनके सिर के बाल बिखरे हैं, शिरस्त्राण गिर गया है, वर्म कई जगह कट गया है,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उससे रक्त की धारा बह रही है ।]

ब्रह्माजित—कन्ह और कैमास के हाथों मेरे दोनों भाइयों ने वीरगति पाई, और मैंने भी पृथ्वीराज के दो अन्य कुमारों—गोपी और टोडर को रणभूमि में सुला दिया है। किंतु मेरा प्रिय घोड़ा हरनागर घायल होकर गिर गया। यह अप्रत्याशित घटना हुई। अरे, ओह, वह देखो, कन्ह और कैमास ने लाखनसी को घेर लिया। यह असह्य है, असह्य है। माता ने मुझे लाखनसी का अंगरक्षक नियुक्त किया था। मेरे रहते उनके शरीर पर क्षत आवे, यह लज्जा की बात होगी। ओ कैमास! ओ कन्ह! ठहरो! तुम दो मिलकर एक वीर पर प्रहार करते हो! यह अधर्म है, यह छात्र-धर्म को कलंकित करने वाला आचरण है। रुको, यह तुम्हारा काल ब्रह्माजित आ गया। (वेग से तलवार घुमाते हुए बढ़ते हैं।)

(सहसा बड़ी तेजी से जगनिक का प्रवेश)

जगनिक—युवराज, इस तरह पैदल आगे मत बढ़ो। अभी दूसरा अश्व आया जाता है, उस पर सवार हो! लो! शिरस्त्राण धारण कर लो। तुम्हारी ढाल भी फट गई है, दूसरी ढाल भी ले लो। शत्रु के समक्ष इस अवस्था में जाना उचित नहीं।

ब्रह्माजित—कैसे रुकूं भाई! माता ने मुझे लाखनसी का अंग-रक्षक बनाया है, और वह संकट में हैं। कन्ह और कैमास दोनों ओर से उन पर प्रहार कर रहे हैं। मैं शरीर में प्राण रहते यह नहीं देख सकता। वह देखो, एक तीसरा भी आ गया। वह कौन है?

जगनिक—वह पृथ्वीराज का प्रसिद्ध सामंत पुंडीर है। चिंता मत करो युवराज! वह देखो ऊदल आ गए, बेंदुला ने मृगेंद्र की तरह कैसी छलाँग मारी है। महावीर बनाफर ने तलवार के एक ही वार में पुंडीर का सिर कतर दिया है, जैसे किसी बालक ने मृणालदंड तोड़ डाला हो। ऊदल लाखनसी के पास पहुंच गए, तो फिर कोई उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा। आप आश्वस्त हों।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ब्रह्माजित—आश्वस्त होने का समय नहीं रहा, भाई ! वह देखो, ऊदल के मार्ग में चामुंडराय अड़ गया है, बड़ा भीषण संग्राम हो रहा है। उधर लाखनसी और आगे बढ़कर चौहानों की चुनी हुई सेना के बीच घिर गए हैं। कन्ह और कैमास उन पर दोनों ओर से प्रहार कर रहे हैं। लाखनसी के दोनों हाथों की दोनों तलवारें अलातचक्र की तरह घूम रही हैं। कन्ह और कैमास के सब प्रहार विफल हो गए हैं। उनकी भूरी हस्तिनी भी अपनी साँकल से भीषण संहार कर रही है।

जगनिक—वह देखो युवराज, चौहान-सेना के पैर उखड़ गए।

ब्रह्माजित—आहा ! बालारुण ने अंधकार की सेना को मानो अपनी किरणों के बाणों से छिन्न-भिन्न कर दिया ! किंतु यह क्या ? कन्ह की गुर्ज के प्रहार से लाखनसी का महावत धराशायी हो गया, भूरी विचलित हो उठी है। अब तो मित्र पर बड़ा संकट आ गया। अब मैं नहीं रुक सकता, नहीं रुक सकता। माता का आदेश था कि लाखनसी का बाल भी बाँका न होना चाहिए।

जगनिक—भय नहीं युवराज ! देखो, ऊदल के प्रहार से मूर्च्छित हो चामुंडराय अपने हौदे से लुढ़क गया है। ऊदल अब लाखनसी के पास पहुँचने ही वाले हैं। किंतु पज्जूनराय ने बढ़कर उन्हें रोक दिया। ओह ! लाखनसी के दाहिने हाथ में यह किसका विषधर बाण आकर चुभ गया, रक्त का धारा बह रही है। फिर भी वह तलवार चला रहे हैं। दुर्भाग्य, कैमास ने नीचे से हौदे के रस्से काट दिए, और राजकुमार लाखनसी धरती पर आ गए हैं। अब तो वह नितांत अरक्षित हैं।

ब्रह्माजित—(उन्मत्त की तरह प्रस्थान करते हुए) मैं आ गया मित्र ! तुम अकेले नहीं हो। हम लोग साथ-साथ विजयी होकर महोबा चलेंगे या सूर्यमंडल भेदकर स्वर्गलोक !

जगनिक—युवराज, मैं अभी आपको शिरस्त्राण और ढाल लाकर देता

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

हूँ। एक क्षण का भी विलंब नहीं होगा।

ब्रह्माजित—मैं आधे क्षण की भी प्रतीक्षा नहीं कर सकता, बंधु ! यदि मैं लाखनसी को न बचा पाया, तो माता से कह देना कि मैंने अपने कर्त्तव्य में प्रमाद नहीं किया।

(वेग से तलवार घुमाते हुए प्रस्थान)

जगनिक—युवराज ! धन्य हो तुम, किंतु एक बात सुन तो लो।··· नहीं सुनते, उन्हें तो जैसे पर लग गए हों·····अरे, वह तो कन्ह और लाखनसी के बीच में पहुँच गए। कन्ह ने कैसा घातक प्रहार किया है, और युवराज के पास ढाल भी नहीं। हाय ! परमाल के कुल का दीपक बुझ गया, मल्हनादेवी की कोख सूनी हो गई।··· अब तो लाखनसी का बाणविद्ध दाहिना हाथ भी थककर रुक-सा गया है, और कैमास तथा कन्ह ने उन पर दोनों ओर से प्रहार किया है। आश्चर्य ! कन्ह के प्रहार से उनका सिर कट गया, पर कबंध अब भी लड़ रहा है।···दोनों राजकुमारों ने वीर गति पाई है। धरती पर पड़े हुए वे ऐसे लगते हैं, मानो युद्ध-भूमि की कुरूपता मिटाने के लिये वसंत और कामदेव यहाँ आकर सो गए हैं। ओह, उधर ऊदल और पज्जूनराय का युद्ध बड़ा भयंकर हो उठा है। लो, वीरवर ऊदल ने पज्जूनराय को धराशायी कर दिया। युद्ध-युद्ध, मनुष्य के भीतर का यह दानव संसार की सारी श्री, समस्त शोभा-सुषमा को निगल जायगा। ऊदल अप्रतिहत गति से लाखनसी की ओर बढ़ रहे हैं, अभी उनको अपने मित्र के वीरगति पाने की सूचना नहीं मिली; किंतु वे बहुत व्यग्र प्रतीत होते हैं, क्योंकि वह लाखनसी को नहीं देख पा रहे। उनके शरीर से आग की लपटें निकल रही हैं। लो, वह चामुंडराय चैतन्य-लाभ कर फिर ऊदल के मार्ग में आ गया। ऊदल ने पुनः एक ही वार में उसके हौदे के स्वर्ण-कलश गिरा दिए, महावत को मार दिया। उसका सिर भी ऊदल के खड्ग के नीचे है; पर धर्म-प्राण बनाफर ने ब्राह्मण होने के कारण फिर उसे नहीं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मारा। इधर से कन्ह और कैमास भी उधर ही पहुंच रहे हैं। यह कैमास ऊदल को सुना-सुनाकर क्या कह रहा है ?

कैमास—(नेपथ्य में) देखो, बनाफर, तुम्हारे मित्र लाखनसी यमराज का आतिथ्य कर रहे हैं। अब तुम भी सामने आ जाओ।

ऊदल—(नेपथ्य में) क्या मित्र लाखनसी मारे गए ? शौर्य का वह सूर्य मध्याह्न में ही अस्त हो गया ! क्या यह सत्य है ?

कैमास—(नेपथ्य में) बिलकुल सत्य है। उनका कबंध भी लड़कर सो गया है।

ऊदल—(नेपथ्य में) धिक्कार है तुम्हें। तुम कई लोगों ने मिलकर उस किशोर पर प्रहार किया। तुमने लाखनसी को नहीं मारा, अपितु क्षात्र-धर्म का अपघात किया है। तुम युद्ध-क्षेत्र में मरकर भी वीरगति नहीं पाओगे। मित्र लाखन ! तुम्हारे बिना मैं अपनी माता को मुख कैसे दिखलाऊँगा ?

जगनिक—बंधु ऊदल ! तुम यह क्या कर रहे हो ! तुमने तो शोक से अभिभूत हो तलवार चलाना बंद कर दिया, आँखें भी मूंद लीं। तुमको विषाद-मग्न जानकर बेंदुला भी निश्चेष्ट हो गया है। (जोर से) युद्ध-क्षेत्र में ऐसा मोह उचित नहीं, यह तुम्हें शोभा नहीं देता, बंधु ! आँखें खोलो, अपने कर्तव्य की चिंता करो।······अरे, यह क्या होने जा रहा है ? चामुंडराय नंगी तलवार लेकर उन पर झपट पड़ा है। हाय ! इस कुकर्मी ने उनका सिर काट डाला। (अधिक जोर से) चामुंडराय ! तू बड़ा अधम है, और नारकी ! लोक में तेरी गणना आततायियों में होगी। आह ! आज शौर्य का शृङ्गार लुट गया, वीरता विधवा हो गई।......किंतु महावीर ऊदल का कबंध अब भी लड़ रहा है, जैसे किंशुक की श्री धारण किए हुए विशाल शाल वृक्ष विचर रहा है, वह शत्रु-सेना को काट-काटकर खलिहान कर रहा है, मानो विंध्याटवी के बीच दावानल प्रलय मचा रहा हो। चलूं, दादा को इसका समाचार दूं।

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा दृश्य

स्थान—वही युद्ध-भूमि, जो अब श्मशान-जैसी प्रतीत हो रही है।

[शवों और घायलों पर गीधों, चीलों तथा शृगालों के झुंड टूट रहे हैं, और उन्हें खींच-खींचकर खा रहे हैं। युद्ध अब भी पूरी भयानकता के साथ चल रहा है। लड़नेवालों की संख्या बहुत कम हो गई है। सूर्य अस्ताचल की ओर ढल चुके हैं, अतएव दोनों पक्षों के अवशिष्ट वीरों में अपने-अपने पक्ष के लिये विजय-वरण करने का आवेश उन्माद की अवस्था तक पहुँच गया है। इसी समय एक ओर से माहिल और दूसरी ओर से जगनिक का प्रवेश।]

जगनिक—(घृणा से) तुम यहाँ कैसे आ गए, मामा! ठीक है, अपने भानजों का निधन-महोत्सव देखने आए होंगे। अब जाकर महादेवा मल्हना माता को यह शुभ समाचार तो सुना आओ, और उनका भी तड़प-तड़पकर मरना देखो। देवलदेवी से ऊदल के निधन का समाचार कह देना, अब तो तुम्हारा सबसे बड़ा काँटा निकल गया। एक बनाफर धरती से उठ गया, तुम सब कुलीन क्षत्रिय मिलकर मंगल-गीत गाओ और घी के दीपक जलाओ।

माहिल—भैया जगनिक, भानजों के शोक से मेरा हृदय खंड-खंड हो रहा है, और तुम मुझे व्यंग्य-बाणों से वेध रहे हो। मैं अपनी बहन को मुँह कैसे दिखलाऊँगा? और दुनिया कुछ कहे, ऊदल तो मुझे अपने भानजों और अपने औरस पुत्रों से भी अधिक प्यारा था। हाय! मैंने जैसे ही सुना कि ऊदल मारे गए हैं, दौड़कर यह समाचार मैंने आल्हा से कहा। पृथ्वीराज से भी मैंने कहा कि तुम्हारे चामुंडराय ने बड़ा निषिद्ध कर्म किया है।

(फफक-फफकर रोने लगता है।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—युद्ध-भूमि रुदन करने का स्थान नहीं। यहाँ कपटी और कायर ही आँसू गिराने का ढोंग रचते हैं। यह जीवन और मृत्यु को गेंद बनाकर खेलने वाले उन महावीरों की समाधि-भूमि है, जिन्होंने हँसते-हँसते कर्तव्यों की वेदी पर अपने शीश चढ़ा दिए हैं। अपने नक्राश्रु गिराकर इस धर्म-क्षेत्र को कलंकित मत करो। प्रवंचना छोड़कर मुझे यह बताओ कि दादा इस समय कहाँ हैं ? मैं भी कुछ देर से उन्हें ही खोजता फिर रहा हूँ। क्या सचमुच तुमने उन्हें ऊदल के निधन का समाचार सुना दिया ?

माहिल—वीरों की रक्त-गंगा की इस बीच धारा में खड़े होकर मैं झूठ नहीं बोलूंगा। जब मैं उनके निकट पहुँचा, पृथ्वीराज के साथ उनका बड़ा भयंकर संग्राम हो रहा था। पृथ्वीराज उसके ऊपर चुन-चुनकर अपने अर्द्धचन्द्राकार लौह वाण चला रहे थे, पर आल्हा ने भवानी की दी हुई खड्ग का ऐसा मंडल अपने आस-पास बनाया था कि वाण उनमें प्रवेश ही नहीं कर पाते थे, कट-कट बाहर ही रह जाते थे। चक्राकार घूमते हुए सौदामिनी के मंडल के बीच जैसे वृषराशिस्थ मध्याह्न सूर्य तप रहा हो, ऐसे लग रहे थे उस समय आल्हा।

जगनिक—क्या उसी समय तुमने उनसे ऊदल की मृत्यु का समाचार कहा ? राय ! कहीं उनकी भी वही दशा तो नहीं हुई, जो लाखनसी के निधन का समाचार सुनकर ऊदल की हुई थी ? मुझे संदेह है, तुमने दादा को शोकाभिभूत बनाकर उनका वध करवा देने के लिये ही यह नाटक रचा था।

माहिल—नहीं भैया ! भगवान् के लिये मुझ पर अविश्वास न करो। डरो मत, आल्हा का किसी प्रकार का अमंगल नहीं हुआ है। मेरी बात सुनते ही वह अपना हाथी बढ़ाकर उल्का की तरह पृथ्वीराज पर टूट पड़े। उनके खड्ग के प्रहार से चौहान-नरेश घायल होकर अचेत हो गए। चौहान-नरेश वहीं गिरे हैं, जहाँ संयमराय मुमूर्षु

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अवस्था में पड़ा है।

जगनिक—क्या चौहान-नरेश के निकट महाकवि चंद नहीं थे ?

माहिल—चंद महाराज के आदेश से पहले ही कन्ह और लाखनसी के मोर्चे का समाचार लेने चले आए थे।

जगनिक—फिर ?

माहिल—चौहान-नरेश को अचेतावस्था में ही छोड़कर आल्हा चामुंडराय को खोजते हुए कुपित यम के समान इधर ही आए हैं।

जगनिक—दादा इधर ही आए हैं ? (चौंककर सुनते हुए) यह तो दादा का ही गंभीर कंठ-स्वर है, जो इस युद्ध-भूमि में भय का संचार कर रहा है।

आल्हा—(नेपथ्य में) ठहर आततायी चामुंडराय ! तूने शस्त्र-चालन से विरत मेरे शोकाभिभूत अनुज का वध किया है। दया, लज्जा, लक्ष्मी और कीर्ति तुझे छोड़ चुकी है। तूने ऐसा नीच कर्म किया है, जिसकी निंदा मनुष्यों की बात क्या, राक्षस तक करेंगे। तेरा काल आ गया है, भगवान् का स्मरण कर ले। तेरे अपवित्र रक्त से यह पवित्र धरती कलुषित न हो, इसलिए मैं अभी गला दबाकर तुझे मारूँगा।

जगनिक—ओह ! युद्ध की विभीषिकाओं का अंत नहीं। दादा ने कितना भयानक संकल्प किया है। देखो माहिल, वह देखो। गोपालकृष्ण जिस प्रकार कंस पर टूटे थे, और भीम ने जैसे दुःशासन को दबोच लिया था, वैसे ही दादा अपने हाथी से कूदकर चामुंडराय के हौदे में पहुँच गए और चामुंडराय को गिराकर उसकी छाती पर चढ़ बैठे हैं। (माहिल वह दृश्य देखकर कांपने लगता है) कन्ह के प्रहारों की अवहेलना कर उन्होंने उसके शरीर से प्राणों का सार खींच लिया है। लो, चामुंडराय का शव भी उन्होंने उठाकर धरती पर फेंक दिया।

माहिल—(कांपते हुए) ऐसा भयानक कर्म मैंने कभी नहीं देखा, जगनिक ! (आंखें मूंद लेता है।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—युद्ध की आग लगानेवाले ऐसे ही भयानक और क्रूर कर्मों को देखने के लिए जीते हैं। युद्ध की ज्वाला में इस धरती का सुख-सौभाग्य दग्ध हुआ जा रहा है। माहिल, अपनी कूटनीति की यह सफलता आँख खोलकर देखो, और आनंद मनाओ। युद्ध की ज्वाला कभी बुझने न पाए, इसके लिए जो निरंतर मानव के मेद, मज्जा, रक्त और मांस का समिध, चरु, हवि और पुरोडाश प्रस्तुत करता रहे, वही तो सफल कूटनीतिज्ञ या राजनीतिज्ञ माना जाता है। लेकिन तुम तो काँप रहे हो, माहिल! जल्दी यहाँ से भाग जाओ! दादा इस समय क्रोध से विक्षिप्तप्राय तुमको देखकर, पुरानी बातें स्मरणकर, कहीं प्रहार ही न कर दें। जल्दी भागो यहाँ से।

माहिल—यही आशंका मुझे भी हो रही है। (भागता है। एक लाश से टक्कर खाकर गिर पड़ता है। सँभलकर फिर भागता है।)

आल्हा—(नेपथ्य में) कन्ह, मैं चाहता हूँ, दिल्ली तक इस सर्वनाश का समाचार पहुँचाने के लिए तुम तो बचे रहो। इंदल, तुम अब तक कहाँ थे? देखो, तुम कन्ह को रोको। पृथ्वीराज मेरे प्रहार से मूर्च्छित हो युद्ध-भूमि में पड़े हैं, वे ही इस सर्वनाश की जड़ हैं। मैं उन्हें स्वर्ग भेजकर फिर यहीं आता हूँ।

जगनिक—शोक और क्रोध से अभिभूत दादा के हृदय में प्रतिशोध की दारुण ज्वाला जल उठी है। लेकिन उनके हाथों मूर्च्छित पृथ्वीराज का वध अनुचित होगा। मुझे विश्वास है, वे ऐसा नहीं करेंगे। किंतु क्रोध अंधा होता है। यदि अचेत पृथ्वीराज पर उनका हाथ चल गया, तो उनकी कीर्ति कलंकित हो जायगी। मैं यह न होने दूंगा। वैसे भी पृथ्वीराज की रक्षा होनी चाहिए। कारण, यवनों के आक्रमण अब रुकनेवाले नहीं। दिल्ली और महोबे के इस युद्ध के भीषण परिणामों का समाचार पाते ही गोरी सँभलने का अवकाश दिए बिना तुरंत चढ़ दौड़ेगा। पृथ्वीराज के न रहने पर उसके लिए उत्तरापथ की विजय का मार्ग अनवरुद्ध हो जायगा। शीघ्रता के

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

साथ दादा के पास पहुँचकर उन्हें समझाना आवश्यक है ।

[शीघ्रता से एक ओर से प्रस्थान । दृश्यांतर होता है । परदा उठते ही युद्ध-भूमि का वीभत्सतर दृश्य सामने आता है । एक ओर पृथ्वीराज मूर्च्छित पड़े हैं । दूसरी ओर घायल संयमराय पड़े तड़प रहे हैं । वह प्यास से व्याकुल हैं । गृध्र और शृगाल उन पर झपटते हैं, बड़ी कठिनाई से वह उनका निराकरण कर पाते हैं । इसी समय एक गृध्र आकर पृथ्वीराज के ऊपर मँडराता है और उनके शिर के बहुत निकट पहुँच आँख की ओर अपनी चोंच बढ़ाकर उड़ जाता है । दो-एक और गृध्र भी आ जाते हैं ।]

संयमराय—हाय ! महाराज अचेत पड़े हैं, उन पर गृध्र भी मँडराने लगे हैं । इस गृध्र की दृष्टि उनकी मुद्रित इंदीवर-जैसी आँखों पर लग गई है । अरे, उसने तो महाराज के नेत्रों पर चंचु-प्रहार कर ही दिया । ओह, अब मैं क्या करूँ ? अभी संयमराय के शरीर में प्राण हैं, और मेरे देखते-देखते महाराज की यह दशा ! हाय ! कामदेव भी जिनमें अपने नेत्रों का प्रतिबिंब देखकर अपनी अनुपमता के गर्व को खर्व हुआ समझता है, उनको मेरे रहते ये गृध्र अपना आहार बनाएँगे ! पर. अब क्या करूँ, शरीर क्षत-विक्षत है । चलने की बात ही क्या, उठने और करवट लेने तक की शक्ति नहीं । (पीड़ा से सिहरकर) गृध्र ने फिर चंचु-प्रहार किया । इस बार दूसरे नेत्र पर । अच्छा, एक उपाय है । (**कठिनाई से टटोलकर कमर से क्षुरिका निकालते हैं, और अपने शरीर का मांस जल्दी-जल्दी काटकर गृध्र की ओर फेंकने लगते हैं ।**) गृध्र, लो, मेरा यह मांस खाओ, महाराज के ये नेत्र छोड़ दो । तुम नहीं जानते, विधाता ने सौंदर्य का सार-तत्त्व ग्रहण कर इन नेत्रों की रचना की है । तुम्हारे जैसे अति अधम आमिषजीवी पशु को भी इन पर प्रहार करने में कुंठित होना चाहिए । निखिल सौंदर्य के सरोवर में भी ऐसे कमल कभी नहीं खिले होंगे । (**गृध्र पृथ्वीराज पर प्रहार करना छोड़कर संयमराय के**

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फेंके हुए मांस के टुकड़ों पर टूटते हैं।) साधुवाद गृध्रो! मुझे प्रसन्नता है, मेरे इस क्षत-विक्षत शरीर से भी क्षात्र-धर्म का पालन हो गया। स्वामी की रक्षा हुई, और तुम्हारी भूख मिटी। मैं तो अब चलने ही वाला हूँ। भगवान्! महाराज की रक्षा के लिये किसी को शीघ्र भेजो! (साँस उखड़ने लगती है।)

(एक ओर से जगनिक का प्रवेश।)

जगनिक—धन्य, संयमराय धन्य! समय की सिकता पर तुमने अपनी वीरता और बलिदान की ऐसी लीक छोड़ी है, जो कभी नहीं मिटेगी। वीरों में अग्रगण्य तो तुम हो ही, दानवीरों में भी तुम शिवि और दधीचि के समकक्ष माने जाओगे। तुम्हारे जीवन की इस अंतिम पुण्यज्योति का दर्शन कर मेरा कवि-जीवन सार्थक हो गया है।

[दूसरी ओर से आल्हा का प्रवेश, हाथ में नंगी तलवार लिए वह साक्षात् यम प्रतीत होते हैं।]

आल्हा—कहाँ है, इस सर्वनाश का मूल पृथ्वीराज? अभी तुम अचेत ही हो, पृथ्वीराज! इस अवस्था में मैं यदि तुम्हें मारूँ, तो मेरा क्षात्र-धर्म कलंकित हो जायगा। तुमको युद्धों से कभी तृप्ति नहीं हुई, एक बार पुनः उठो। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर तुम्हारे रक्त से अपने मृत बंधुओं का तर्पण करूँ। (पृथ्वीराज का हाथ पकड़कर झकझोरते हैं।) तुम चाहे जितने अचेत हो, मैं तुम्हें चैतन्य-लाभ कराके तुमसे युद्ध अवश्य करूँगा, और तुम्हें यमलोक भेजूंगा।

जगनिक—यह क्या कर रहे हो, दादा? अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व का स्मरण करो! आपने अपने अनुजों और सुहृदों को सदैव विगत-ज्वर होकर युद्ध करने की शिक्षा दी है, इस विषम परिस्थिति में भी आपको वही स्थिति प्राप्त करनी है। सच्चा वीर व्यक्तिगत ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और प्रतिशोध की सर्वातिशायिनी भावना के ऊपर भी उठता ही है, यह आप हम लोगों से कहते रहे हैं। आज आपको अपनी उसी शिक्षा को उदाहृत करके दिखा देना है। पृथ्वीराज के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मारने का विचार छोड़ दीजिए, क्योंकि इससे देश का अनिष्ट होगा। जो कुछ हुआ है, उसी के अंतिम परिणाम की कल्पना कर हृदय काँप उठता है। मेरी बड़ी इच्छा थी कि आपका दैवी-शक्ति संपन्न खड्ग और महाराज पृथ्वीराज का गांडीव-दुर्द्धर्ष धनुष एक पक्ष और एक लक्ष्य पर अटल होकर देश और धर्म की रक्षा में सतत प्रवृत्त रहते। पृथ्वीराज के अहंकार के कारण ही वह न हो सका। किंतु अब आपके हाथों कोई ऐसा कार्य न होना चाहिए, जिससे देश और धर्म का अमंगल हो।

आल्हा—(पृथ्वीराज का हाथ छोड़कर) भैया जगनिक, तुम्हारी वाणी शांति और विवेक की मंदाकिनी है, मैं अब पृथ्वीराज को नहीं मारूँगा। फिर भी ऊदल का शोक मुझे जलाए दे रहा है, सातों महासमुद्रों की निःशेष जल-राशि भी मेरी वह ज्वाला शांत नहीं कर सकती। ऊदल के बिना मैं माँ के सामने कैसे जाऊँगा, और ब्रह्माजित तथा लाखनसी आदि को गँवाकर मल्हनादेवी को मुँह कैसे दिखाऊँगा? भैया, इस लोक में अब कदाचित् मेरे लिए कुछ करने योग्य नहीं रह गया, छाया की तरह क्षण-क्षण अनुसरण करनेवाले भाई के बिना यह जीवन भार प्रतीत होता है।

जगनिक—दादा, विषाद त्यागकर प्रकृतिस्थ होइए, अभी आपको बहुत कुछ करना है। देखिए, यह महाकवि चंदबरदाई आ रहे हैं। यह पृथ्वीराज को सँभालकर ले जाएँगे, आप भी अगले कर्तव्य की चिंता करें।

(चंद का प्रवेश। वह महाराज पृथ्वीराज के निकट बैठकर अपने उत्तरीय से उनके मुख पर व्यजन करते हैं।)

आल्हा—भैया, कदाचित् भ्रातृशोक ने मेरी दृष्टि भी हर ली है, बाहर मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। यह नामरूपात्मक प्रपंच अरूपता के अनंत असीम महासागर में लय होता प्रतीत होता है। मुझे क्या हुआ जा रहा है, जगनिक! भीतर एक ध्वनि सुनाई पड़ती है,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कभी वीणा की, कभी शंख की। वह मुझे किसी ऐसे दूर देश की ओर खींच रही है, जिसकी राह पहचानी नहीं लगती। क्या ऊदल भी वहीं हैं, क्या मेरे अन्य बंधु भी वहीं गए हैं ? जगनिक, गुरुदेव ने कहा था, मैं संकटकाल में आऊँगा। क्या मेरे ऊपर इससे भी बड़ा कोई संकट आ सकता है ?

सहसा किंगरी सुनाई पड़ती है, और एक गीत वायु-मंडल को परिप्लावित करता हुआ गूंजता है—

मधि निरंतर कीजै बासा। निहचल मनुवाँ थिर होई साँसा।
सहज-पलांण पवन करि घोड़ा, लै लगाम चित चबका।
चेतनि असवार ग्यान गुरू करि, और तजो सब ढवका।
माता हमारी मनसा बोलिए, पिता बोलिए निरंजन निराकारं।
गुरू हमारे अतीत बोलिए, जिन किया पिंड का उधारं।
नाव-विंद गाँठि प्रवानां। कवण घटि जोति कवण अस्थानां।
कहाँ निरंजन बासा करही। कहाँ काली नागिनी मीडक धरहीं।
कहाँ जलधर पवना मेला। उंद्र कहाँ बिलाइया घेरा।
सींगी नाद कहाँ जोगी पूरा। जीत्या संग्राम पुरिष भया सूरा।

आल्हा—अहा ! खुल गये मेरे भाग्य। अमृत के करुणामय मेघ ने मरुस्थल को सींच दिया, मेरे गुरुदेव आ गये, जगनिक ! देखो वह दिव्य मूर्ति !

[एक अत्यंत ज्योतिर्मय व्यक्तित्ववाले यति का प्रवेश। गेरुए वस्त्र, पैरों में खड़ाऊँ, हाथों में कमंडलु, किंगरी और धंधारी; कटि-प्रदेश में मेखला और व्याघ्र-चर्म। उनकी आँखों से जैसे ज्योति और शांति बरस रही है। युद्ध-भूमि का कोलाहल और आर्तनाद शांत हो जाता है, आल्हा दौड़कर उनके चरणों से लिपट जाते हैं। जगनिक भी उनके सामने धरती पर मस्तक टेक देते हैं। पृथ्वीराज भी चैतन्य-लाभ करते हैं, वह और चंद चकित-से यह दृश्य देखते हैं।]

यति—(आल्हा को उठाकर कंठ से लगाकर) बेटा, शस्त्रधारियों के

Digitization by American Academy of Indic Studies-AAIS(USA)

पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष और मद-मत्सर के कारण राष्ट्र का शस्त्रबल प्रचंड और अपराजेय होते हुए भी कुंठित और निष्फल होनेवाला है। इसलिए तुम मेरे साथ आओ, मैं तुमको साधना का वह मार्ग बताता हूँ, जो सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं के बीच देश में अपूर्व आत्मबल का संचार करेगा। यही सब बिछुड़े हुओं को मिलाएगा, डूबने वालों को पार उतारेगा। इस साधना का कवच धारण कर देश चिरकाल के लिए पुनः सुरक्षित हो जाएगा। कवियों की वाणी, मनीषियों की मेधा और शस्त्रधारियों के शस्त्र सब उसी साधना से उत्प्रेरित हो एक बार फिर राष्ट्र के तेजस्वी जीवन की नवीन रचना करेंगे। इसी से अंततः विश्व का भी कल्याण होगा।

[यति यह कह चल देते हैं। आल्हा अपनी तलवार तोड़कर फेंक देते हैं, और मंत्र-मुग्ध से उनके पीछे-पीछे चलते हैं। अन्य सब लोग खड़े हुए देखते रह जाते हैं।]

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा अंक

पहला दृश्य

स्थान— महोबे में कीर्तिसागर के तट पर बहुत बड़ा जन-समूह एकत्र है।

[दिल्ली और महोबे के युद्ध में जो वीर मारे गये थे, जगनिक की प्रेरणा से आज उनकी वर्षी मनाई जा रही है। चंदेलों के राज्य के ग्राम-ग्राम से बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष आए हैं। लोगों में असाधारण उत्साह है, स्थान-स्थान पर ढोलक की ताल पर दिवंगत महावीरों के विषय में जगनिक द्वारा रचे हुए वीर गीत गाए जा रहे हैं। ऊदल की समाधि के निकट विशेष भीड़ है। युवकों का एक दल ऊदल की कीर्ति गा रहा है, निकट अन्य सब जन भाव-विभोर सुन रहे हैं।]

बड़ा प्रतापी रणमंडल माँ ठाकुर उदयसिंह सरदार।
को गति बरणै बघऊदल की बेंका बाँदुल का असवार।
झुकि-झुकि मारैं औ ललकारैं दोऊ हाथ करैं तलवार।
बहुदल मारा पृथ्वीराज का नदिया बही रक्त की धार।
मारति-मारति दल-बादल के तब लखि परे वीर चौहान।
विषधर सायक इक हाथे माँ, अरु लोहे की गहे कमान।

[इसी समय जगनिक प्रवेश करते हैं। युवक-दल गायन बंद कर उन्हें घेर लेता है। अन्य बहुत से स्त्री-पुरुष भी उनको घेर कर खड़े हो जाते हैं।]

एक युवक—(जगनिक से) दादा, आपकी कविता हमारे रोम-रोम में रमी है, साँस-साँस में बसी है।

दूसरा युवक—आपकी कविता गाकर या सुनकर हमको लगता है कि

Digitization by American Academy of Indic Studies - AAIS(USA)

ऊदल आदि वीर मरे नहीं, अपितु अमर होकर आज भी हमारे बीच हैं। आपकी कविता ने हमारे जीवन के सब अभावों को पूरा कर दिया है।

तीसरा युवक—भैया, तुम्हारी कविता माता के दूध के समान हम सबके लिए सहज, सुगम और हितकारी है।

एक वृद्धा—(निकट जाकर) बेटा जगनिक! सचमुच जब हम लोग तुम्हारा गीत सुनती हैं, तो आल्हा-ऊदल की तसवीर आँखों के सामने खिच जाती है। हमारे सूखे स्तनों में भी दूध की धारा उमड़ने लगती है।

एक वृद्ध—बेटा, यह कैसा जादू है तुम्हारी कविता में! उसे सुनकर हम जो हैं, वह नहीं रह जाते। उस अवस्था का ठीक-ठीक वर्णन करना तो हमारे लिए कठिन है, किंतु इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि कभी हम उत्साह के झूले में झूलते और कभी करुणा के समुद्र में डूबते-उतराते हैं। सबसे विचित्र बात यह है कि तुम्हारी कविता हम लोगों के लिए बड़ी सुबोध है। और भी बड़े-बड़े नामी कवि मैंने देखे और सुने हैं, किंतु उनकी बात हमारी समझ में क्यों नहीं आती, भैया?

जगनिक—बाबा, आज के बड़े-बड़े कवि उन बड़े-बड़े लोगों की बात करते हैं, जिनको धनमद या राजपद ने ऊंचा उठाया है। वे इन बड़ों के समझने योग्य पंडिताऊ भाषा में बोलते भी हैं। किंतु मैं तो तुम लोगों का कवि हूँ, तुम्हारे सुख-दुःख ही मेरी कविता के हर्ष और शोक हैं। तुम्हारा जीवन ही मेरा जीवन है, और तुम्हारी प्रतिदिन की भाषा ही मेरी कविता की भाषा। मैं तुम सबके हृदय, तुम सबके श्रम और उद्योग के साथ एकरूप होकर रहा हूँ, रहना चाहता हूँ। इसीलिए मेरी बात तुम्हारी समझ में आती है, बाबा! तुम्हारे होकर, तुम्हारी सेवा कर जो बड़े हुए हैं, मैं उन्हीं के गीत गाता हूँ। राजकीय ऐश्वर्य-मात्र से जो बड़े हुए हैं, उनसे मुझे मतलब नहीं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा वृद्ध—यही बात है, बेटा ! यही बात है ! सचमुच तुम हमारे ही होकर रहे हो ! नहीं तो इसी महोबे में तुम्हें क्या कमी थी । अन्य बड़े-बड़े राजा और सम्राट् भी तुमको अपना राजकवि बनाकर धन्य हो सकते थे। लेकिन तुम हम लोगों के दर-दर की खाक छानते फिरा करते हो ! हमारा घर ही तुम्हारा घर है, और हमारा परिवार ही तुम्हारा परिवार ! तुम हमारे पुत्र, मित्र, बंधु और गुरु सभी कुछ तो हो, बेटा !

जगनिक—बाबा, तुम्हारा यह स्नेह ही तो हमारी कविता है ।

एक वृद्धा—कितना शील है हमारे बेटे में ! हमारी यही इच्छा रहती है कि तुम कभी हमारी आँखों से ओझल न हो ।

जगनिक—तुम सब माताओं ने मुझे अपनी आंख की पुतली बनाकर रखा है, यह सौभाग्य आज के किस राजकवि को उपलब्ध है ? माँ, अब मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जाना चाहता हूं, आज आप सब लोगों से विदा माँगने आया हूँ ।

अनेक जन एक साथ—कहाँ जाओगे, भैया ? कहाँ जाओगे बेटा ? तुम्हारे बिना हमारे घर-द्वार सूने हो जायेंगे !

जगनिक—आज ही मुझे समाचार मिला है कि ग़ोरी ने दिल्ली पर फिर आक्रमण किया है । पृथ्वीराज के हाहुलीराय हम्मीर-जैसे कई सरदार ग़ोरी से मिल गए हैं, देश के अन्य सब नरेश तटस्थ हैं । पता नहीं, इस युद्ध का क्या परिणाम हो । मैं दिल्ली जाकर स्वयं सब-कुछ अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ ।

एक युवक—महाराज पृथ्वीराज तो अनेक वार ग़ोरी को पराजित कर चुके हैं । क्या इस बार कोई विशेष चिंताजनक परिस्थिति निर्मित हो गई है ?

जगनिक—अवश्य भाई ! चौहान-नरेश ने अपने सब प्रमुख सामंत और अधिकांश सेना व्यर्थ के आपसी युद्धों में कटवा दी है । अवशिष्ट कुछ सामंत भीतर-भीतर से उनके विरोधी भी हो गए हैं । ग़ोरी

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

पूरी तैयारी के साथ पहले की अपेक्षा दूना सैन्यबल लेकर आया है। ऐसी अवस्था में परिणाम के विषय में शंका स्वाभाविक है।

दूसरा युवक—तब तो देश पर बड़ा भारी संकट आया समझो भैया!

जगनिक—सचमुच देश पर बड़ा भारी संकट आता हुआ दिखाई देता है, भाई! तुम लोगों को भी उसके लिए अभी से तैयार होना है।

तीसरा युवक—हम लोग क्या करें, आप यह भी बतलाएँ।

जगनिक—मैं आप लोगों से सदैव यही कहता आया हूँ कि देश की वास्तविक शक्ति आप ही लोगों के हाथ में है। आज के राजाओं ने आप लोगों की उपेक्षा कर भारी राजनीतिक भूल की है, फिर भी आपको अपने कर्तव्य का पालन तो करना ही चाहिए। आप लोग सब प्रकार के आपसी भेदभाव भुलाकर एक हो जायँ, तथा धर्म के लिए बड़े-से-बड़ा कष्ट सहने और बड़े-से-बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार रहें। समय तो ऐसा है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति को सैनिक बन जाना चाहिए।

पहला युवक—सबको सैनिक बनने के साधन सुलभ ही कहाँ हैं?

जगनिक—यह ठीक है, किंतु इस स्थिति में भी हम व्यक्तिगत प्रयत्नों से जितनी सैनिक शिक्षा प्राप्त कर सकते अथवा शस्त्र-संग्रह कर सकते हैं, उतना तो अवश्य ही करें।

दूसरा युवक—यह तो हो ही सकता है।

जगनिक—मैंने महाराज से भी इस दिशा में कुछ उद्योग करने के लिए कहा है। किंतु वह बहुत दुःखी हैं, महारानी मल्हनादेवी के निधन के बाद से तो वे और भी जर्जर हो गए हैं, फिर भी कदाचित् वह कुछ करने का प्रयत्न करें। उनकी वास्तविक शक्ति तो आप लोग ही हैं।

तीसरा युवक—तुम जो कुछ कहोगे, वृद्ध महाराज के लिए हम लोग वह सब करेंगे।

जगनिक—महाराज कुछ दिन के लिए कालिंजर जाना चाहते हैं, उस गढ़

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को सुदृढ़ और पूर्ण सुरक्षित बनाने की व्यवस्था करना आवश्यक है। आप लोग भी सेना का बल बढ़ाने में सहयोग दें। संभवतः देश की अग्नि-परीक्षा का काल सन्निकट है, आप लोग उसके लिए तैयार रहें। मैं आज ही महाराज के दर्शन कर दिल्ली के लिए प्रस्थान करूँगा, इस समय आप लोगों से विदा चाहता हूँ।

[जगनिक हाथ जोड़ते हैं, कुछ लोग उत्तर में हाथ जोड़कर और कुछ लोग हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हुए विदा देते हैं।]

(पट-परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

स्थान—दिल्ली में महाकवि चंद का भवन।

[एक कक्ष में जगनिक और महाकवि चंद के पुत्र जल्ह बैठे हुए वार्तालाप कर रहे हैं। उनके मुख पर गहरे विषाद के भाव अंकित हैं। जल्ह के सामने चौकी पर विशाल ग्रंथ रखा है।]

जल्ह—आपको आने में विलंब हो गया। बंधु, महाराज भी चले गए और पिताजी भी। जाते समय पिताजी ने आपका स्मरण किया था। कहते थे, महोबे के कवि को जो आशंका थी, वही होकर रहा।

जगनिक—सचमुच मुझे यहाँ पहुंचने में बहुत विलंब हो गया। महाराज भी गए और महाकवि भी! हा! क्या इस युद्ध के समय महाकवि नहीं थे?

जल्ह—वह यहाँ होते, तो कदाचित् युद्ध का ऐसा अनिष्टकर परिणाम न होता। काँगड़ा दुर्ग के स्वामी हाहुली हम्मीरराय ने उनके साथ विश्वासघात किया।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

जगनिक—वह ग़ोरी से मिल गया है, यह समाचार तो मुझे मिला था। पर महाकवि के साथ उसने ऐसा विश्वासघात किया, यह कैसी बात है ?

जल्ह—हाहुलीराय के ग़ोरी से मिल जाने का समाचार पाकर वह उसे समझाने के लिये गए थे। उन्होंने हाहुलीराय से अनुरोध किया कि वह पृथ्वीराज की सेना का सेनापतित्व ग्रहण कर सुलतान से युद्ध करें।

जगनिक—महाकवि के समझाने पर भी हाहुलीराय नहीं माना ?

जल्ह—इतना ही नहीं, वह जानता था कि यदि पिताजी युद्ध में महाराज के साथ रहे, तो सुलतान की विजय असंभव है। कारण, पिताजी का मंत्र-बल महाराज की बड़ी भारी शक्ति था। इसलिए वह पिताजी को दर्शन कराने के निमित्त जालंधरीदेवी के मंदिर में ले गया, और उन्हें वहीं बंदी बनाकर स्वयं दस हज़ार श्रेष्ठ घुड़सवार और बहुत बड़ी पैदल सेना लेकर ग़ोरी सुलतान से जाकर मिल गया।

जगनिक—इतना बड़ा विश्वासघात ! ऐसा प्रतीत होता है कि देश और धर्म के दुर्भाग्य के किसी बड़े क्रूर ग्रह का उदय हुआ है। फिर उसने महाकवि को कब छोड़ा ?

जल्ह—जब युद्ध में महाराज की सब सेना नष्ट हो गई और ग़ोरी उन्हें पकड़कर ग़ज़नी चला गया। तभी पिताजी हाहुलीराय के बंधन से मुक्त हो पाए।

जगनिक—यहाँ आकर कवि ने क्या करने का निश्चय किया ?

जल्ह—यहाँ आकर दिल्ली की दुर्दशा देखकर उनका हृदय फट गया। महारानियों की चिता के पास जाकर वे दिल्ली-निवासियों के साथ फूट-फूट कर रोए। फिर उन्होंने इस 'पृथ्वीराज रासो' नामक अपने महाकाव्य में महाराज के जीवन की वे सब घटनाएँ जोड़ीं, जो उनकी अनुपस्थिति में घटित हुई थीं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जगनिक—धन्य ! उनकी काव्य-रचना का प्रवाह इस विषम मानसिक स्थिति में भी नहीं रुका !

जल्ह—फिर मुझे उन्होंने अपना यह महाकाव्य पढ़ाया, और इसे पूरा करने का भार भी मुझे सौंपा। उन्होंने कहा, मैं इस 'रासो' के अंतिम पृष्ठों की सामग्री ग़ज़नी जाकर प्रस्तुत करूँगा, और तुम यहाँ उसे काव्यबद्ध कर मेरी कृति को पूर्ण कर देना।

जगनिक—इतने बड़े महाकवि की महनीय कृति की पूर्ति का उत्तरदायित्व आप पर आ पड़ा है। महाकवि की लेखनी आपको उत्तराधिकार में मिली है। आपकी भारती भारत के इस युग की दो परम महिमा-शालिनी विभूतियों को विस्मृत न होने देंगी, यह असाधारण गौरव की बात है। वाल्मीकि और राम, व्यास और कृष्ण, कालिदास और विक्रम के समान ही लोग चंद और पृथ्वीराज का स्मरण करेंगे। तो क्या महाकवि ग़ज़नी गए हैं ?

जल्ह—बंधु, पिताजी ग़जनी ही गए हैं। उन्होंने कहा, 'चकोर यदि चंद्र से अलग होकर रह सकता है, तो रहे ! चातक यदि स्वाति-बुंद का पार्थक्य सहन कर सकता है, तो सहे ! शरीर यदि प्राण विरहित होकर ठहर सकता है, तो ठहरे ! पर चंद पृथ्वीराज से अलग रहे, यह सम्भव नहीं।' यह कहकर उन्होंने ग़ज़नी जाकर महाराज के उद्धार का निश्चय कर योगी-वेष धारण कर लिया, और माताजी को समझा-बुझाकर सबसे विदा ले अपनी धुन में लगे हुए क्षुधा-पिपासा भूलकर ग़ज़नी के दुर्गम मार्ग पर प्रस्थान किया।

जगनिक—उनके साथ और कोई नहीं है ?

जल्ह—मैंने कुछ अत्यन्त कुशल और विश्वस्त व्यक्ति उनके साथ भेजने चाहे, किंतु उन्होंने सबको लौटा दिया। वह अकेले ही गए हैं।

जगनिक—खेद है, मुझे यहाँ पहुँचने में विलंब हो गया, अन्यथा मैं उनके साथ अवश्य जाता। वह मेरी प्रार्थना अस्वीकार न करते।

जल्ह—कह नहीं सकता, बंधु ! जो व्यक्ति कुछ दूर तक आग्रह करके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उनके साथ गए थे, उनको भी उन्होंने लौटा दिया। उन्होंने आकर बतलाया कि पिताजी दिन-भर बिना रुके हुए चलते रहते हैं, और रात्रि में किसी सरोवर के तट पर समाधिस्थ होकर भगवती की आराधना करते हैं।

जगनिक—धन्य महाकवि ! उनका यह अभियान भारतीय इतिहास की एक चिरस्मरणीय घटना बनेगा, बंधु ! उन्होंने मैत्री का परमोच्च आदर्श तो उपस्थित किया ही है, देश के माथे से पराजय का कलंक मिटाने का भी उपक्रम किया है। मेरा अनुमान है, चौहान-नरेश की पराजय को विजय में परिणत करने की कोई युक्ति सोचकर ही वह वहाँ गए हैं। पर, मुझे एक बात की चिंता है।

जल्ह—वह क्या ?

जगनिक—ग़ज़नी में अपना है ही कौन ? महाकवि वहाँ जो कुछ करेंगे, वह चिरकाल के लिए असत्य द्वारा आच्छादित भी किया जा सकता है। विधर्मी और विदेशी विजेताओं के संकेत पर लिखे गए इतिहास में सत्य रहे ही, इसकी संभावना कम है। इसीलिए मैं स्वयं गज़नी जाकर अपनी आँखों से महाकवि की योजना को कार्यान्वित होते देखना चाहता हूँ।

जल्ह—बंधु, उनको गए एक पक्ष से भी अधिक हो गया। वह ग़ज़नी पहुंचकर जो कुछ करना है, वह करने भी लगे होंगे या कर चुके होंगे। अब आप समय पर वहाँ नहीं पहुँच सकते।

जगनिक—केवल अनुमान या कल्पना के आधार पर हमें उद्यम-हीन न हो जाना चाहिए। विधर्मियों के उस प्रदेश में इतनी जल्दी कोई योजना सफल या कार्यान्वित हो गई हो, इसकी संभावना कम ही है। इसलिए मैं आज ही ग़ज़नी के लिये प्रस्थान करता हूँ।

जल्ह—ग़ज़नी का मार्ग बड़ा दुर्गम है, आप उसे ठीक-ठीक जानते भी नहीं। उस पर पद-पद पर संकट ही संकट हैं। पिताजी तो उस पथ से सुपरिचित थे। आप इतना बड़ा संकट मोल न लें। पिताजी जो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुछ करेंगे, वह छिपा न रह सकेगा।

जगनिक—वंधु ! जब देश पर इतना बड़ा संकट आया है, तो व्यक्तिगत संकट की चर्चा करना भी अनुचित है। महाकवि जिस मार्ग पर गए हैं, उस पर चलना मेरे लिये सुगम ही होगा। अतएव मैं भी आज ही और अभी ग़ज़नी के लिये प्रस्थान करता हूँ।

जल्ह—वंधु ! आपके आ जाने से मुझे बड़ा बल मिला था।

जगनिक—आप चिंता न करें, मैं शीघ्र-से-शीघ्र लौटने का प्रयास करूँगा। आपसे मिलकर ही मैं महोबा जाऊँगा। यदि ग़ज़नी में मुझे महाकवि और महाराज के दर्शन हो सके, तो अपने को कृतार्थ समझूँगा।

जल्ह—तो फिर जाओ, वंधु ! भगवान् मंगल करें।

(पट-परिवर्तन)

तीसरा दृश्य

स्थान—ग़ज़नी

[शहाबुद्दीन ग़ोरी का दरबार, सब सभासद यथास्थान बैठे हैं। एक ऊँचे सिंहासन पर शहाबुद्दीन बैठा है। हिंदुस्तान की फतह के उपलक्ष्य में जशन मनाया जा रहा है। पारसीक नर्तकियों ने अपना नृत्य समाप्त किया है। कुछ शायर मुबारकबादी की कविताएँ पढ़ चुके हैं। दरबार में शराब के दौर चल रहे हैं।]

ग़ोरी—शाबाश मेरे सरदारो ! आज तुम्हारी ही बदौलत मेरी हार जीत में बदल गई है।···हिंदुस्तान का शाहंशाह पिरथीराज, जिसके नाम से हमारे सब हम-क़ौम खौफ खाते थे, आज हमारी क़ैद में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं।...सात बार मुझे जीतकर भी जिंदा छोड़ दिया !...लेकिन मैं...ऐसा हरगिज़ नहीं कर सकता !...हमारी सियासत सिर्फ़ कामयाबी पर निगाह रखती है !...सच्चाई तो महज़ दिल की कमज़ोरी है...हः हः हः...!

तत्तारखाँ—बजा फ़र्माते हैं, हुज़ूर !...लेकिन दुश्मन का क़त्ल तो कर ही दिया जाय, जहाँपनाह !

ग़ोरी—अंदेशे और खौफ़ की कोई बात नहीं। क़त्ल तो वह कर ही दिया जाएगा...फ़िलहाल मैंने उसकी आँखें निकलवा ली हैं !...ओह... पिरथीराज की आँखें...उनकी मानिंद आज तक दुनिया में मैंने कुछ नहीं देखा !..बिजली और आफताब में भी वह ताव नहीं है, जो पिरथीराज की आँखों में थी !...चुंबक में भी तो वह कशिश नहीं !...उन...आँखों को देखकर मेरा दिल बार-बार उसके कदमों में झुकने को बेताब हो जाता था...! इसीलिए मैंने उन्हें फुड़वा दिया है। बार-बार फ़तहयाब होकर मेरी जान बख्शते वक्त वह मुझे जिस निगाह से देखा करता था, उसी निगाह से वह मुझे क़ैद होने पर भी देखता रहा। इसी से मैं उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सका। इसीलिए मैंने उन्हें फुड़वा दिया है !...ओह...वे आँखें !

हुजाब—क़ैद से छूटकर भी अब वह दुश्मनी करने लायक नहीं रहा !... उसका ग़रूर धूल में मिल गया !

ग़ोरी—नहीं, नहीं सरदार, उसका ग़रूर तो नहीं गया, हिमालिया से भी बुलंद उसका ग़रूर फिर भी नहीं झुका।...मैंने उसकी आँखें निकलवा लीं, उनमें लाल मिर्च भरवा दीं !...मैं देख रहा था कि दर्द से उसके जिस्म का अज़ो-अज़ो तड़पने को बेकरार था। फिर भी उसके लबों का तबस्सुम नहीं गया !...दुनिया के वे सबसे नायाब हीरे...पिरथीराज की आँखें मैंने निकलवा लीं !...फिर भी उसकी हुकूमत की शान नहीं मिटी...!

(दरबान का प्रवेश। वह ग़ोरी को अभिवादन करता है।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दरवान—जहाँपनाह, हिंदुस्तान का एक चंद नाम का सिपाही हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहता है ! क्या हुक्म होता है ?

ग़ोरी—(भौंहों में बल डालते हुए) हिंदुस्तान का सिपाही···क्यों आया है वह यहाँ ? कुछ बताया है तुमसे ?

सब सरदार—ख़ुदावंद ! (शंका से) हाँ-हाँ, क्यों आया है वह यहाँ ?

दरवान—उसने और कुछ कहने से इनकार कर दिया, जहाँपनाह ! जो कुछ उसे कहना है, वह हुज़ूर से ही कहेगा।

ग़ोरी—डर की कोई बात नहीं ! जब हिंदुस्तान का सबसे बड़ा बहादुर मेरी क़ैद में है, तो मुझे एक अदना सिपाही से क्या खौफ़ हो सकता है ? हाज़िर करो उसे।

(थोड़ी देर बाद चंद दरवान के साथ आता है। उसकी वेष-भूषा सैनिकों जैसी है, कंधों तक फैले हुए केश और वस्त्र आदि धूल में सने हुए हैं। मुख पर क्लांति के चिह्न विराजमान हैं। वह बड़े अदब के साथ सुलतान को अभिवादन करता है।)

ग़ोरी—हिंदुस्तानी सिपाही, तुम्हारे यहाँ आने का मक़सद क्या है ?

चंद—एक विशेष प्रार्थना लेकर सेवा में उपस्थित हुआ हूँ, सुलतान !

ग़ोरी—लेकिन तुम हो कौन ? यह बताओ !

चंद—मैं···मैं संसार के अप्रतिम शूर चौहान-कुलभूषण दिल्ली-पति महाराज पृथ्वीराज का राजकवि हूँ।

ग़ोरी—तुम···चंद ? पिरथीराज के मशहूर शाही शायर ? बड़ी जुरअत की तुमने !···तुमको तो मैंने पहले भी कभी देखा है ?···शायद पिरथीराज के साथ मैदाने-जंग में ?

चंद—अवश्य, अवश्य !···इसके अतिरिक्त आपने मुझे अजमेर और दिल्ली की राजसभाओं में महाराज का विरद-गान करते हुए भी देखा होगा।

ग़ोरी—क्या मतलब, शायर ?

चंद—सुलतान, मतलब यही कि जब आप बार-बार पराजित होकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बंदी-रूप में महाराज के समक्ष उपस्थित किए जाते थे, तब अपने उच्छ्वसित कंठ से मैं महाराज की यशोगाथा गा-गाकर दिग्वधुओं के कपोलों को आरक्त बनाया करता था।

ग़ोरी—(उन्मत्त हास) हः हः हः ! तो अब तो तुम मेरे दरबार में हो। मेरी फतह के तराने गाओ शायर !

चंद—आपके दरबार में भी फतह के तराने गाऊँगा, धैर्य रखें सुल्तान ! किंतु अभी आपने मेरी प्रार्थना तो सुनी ही नहीं।

ग़ोरी—हाँ-हाँ, कहो वह क्या है ?

चंद—ग़ज़नीपति, मैं एक बार अपने बाल-सखा दिल्लीपति का दर्शन करना चाहता हूँ, केवल एक बार···और अंतिम बार। (घुटने टेककर) पृथ्वीराज के अतिरिक्त और किसी के समक्ष कभी न झुकनेवाला यह चंद आपसे भिक्षा माँग रहा है ! ···खेद है सुल्तान, हमारे महाराज के साथ संसार की एक अद्वितीय कला अस्त हो रही है।

ग़ोरी—वह कौन-सा हुनर है, शायर ?

चंद—वह है शब्द-वेधी वाण चलाने की कला ! ध्वनि-संकेत-मात्र से अमोघ लक्ष्यवेध की कला इस युग में संसार में केवल पृथ्वीराज जानते हैं।

ग़ोरी—(आश्चर्य से) मैंने यह बात सुन तो रखी थी, पर यक़ीन नहीं होता था।

चंद—यक़ीन नहीं था, तो अब उसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त कीजिए। पृथ्वीराज से कहिए कि आपके दरवार में अपनी कला का प्रदर्शन करें।

ग़ोरी—यह तो हो सकता था, पर अब तो मैंने उसकी आँखें निकलवा ली हैं, शायर ! उसका शरीर भी अब पहले-जैसा नहीं रह गया है। अब उसमें पौरुष कहाँ ?

चंद—(पीड़ा से सिहरकर होंठ काटते हुए) ओह···! शृंगार और वीर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दोनों ही रसों की चरम अधिष्ठात्री पृथ्वीराज की आंखें निकलवा ली गईं…! (आंसू आ जाते हैं)…ओह ! किंतु अपनी कला वह अब भी दिखला सकते हैं।

ग़ोरी—ऐसा ! क्या यह भी मुमकिन है ?

चंद—देख ही न लीजिए सुल्तान ! आपके संदेह की निवृत्ति हो जाय।

सब सरदार—(एक साथ) फतह के जशन के सिलसिले में अंधे क़ैदी की यह करामात ज़रूर देखी जाय, जहांपनाह !

ग़ोरी—अच्छा, तो यही सही।

चंद—एक प्रार्थना और है, सुल्तान ! महाराज का कौशल देखने के लिए उनको उन्हीं का धनुष देना होगा।

ग़ोरी—क्यों शायर, हमारे यहाँ भी लोहे की कमानें हैं ?

चंद—लेकिन वे सब महाराज का आकर्ण आकर्षण सहन न कर सकेंगी, टूट जाएँगी।

ग़ोरी—ख़ैर, देखा जाएगा ! (सभासदों से) कल यही शुगल सही। (मुस्कराते हुए) कल जशन के हफ़्ते का आखिरी दिन है। ग़ज़नी का हर खासो-आम कल मेरे दरबार में अंधे पिरथीराज की बाज़ीगरी देखे। हः हः हः ! (हुजाब से) देखो हुजाब, तुम कल अंधे पिरथीराज को क़ैदखाने के कुएँ से निकालकर पैदल ग़ज़नी की सड़कों पर घुमाते हुए मेरे दरबार में हाज़िर करो। मुझे यहां आकर यह भी इत्तिला दो कि इसका असर ग़ज़नी की रिआया और खासतौर से उस पिरथीराज पर क्या होता है। खबरदार, कड़े पहरे का बदोबस्त रहे। (चंद से) शायर, तुम भी कल यहीं पिरथीराज से मिल लेना ! ठीक है न ! (उन्मत्त अट्टहास करता हुआ उठता है, उसके साथ ही सब लोग खड़े होते हैं, पर्दा गिरता है।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा दृश्य

स्थान—ग़ज़नी

[ग़ोरी का दरबारे-आम खचाखच भरा है। सब सरदार यथास्थान बैठे हैं। बीच में बहुत ऊँचे मंच पर ग़ोरी बैठा है। मंच के एक ओर अष्टधातु के सात बृहदाकार घड़ियाल सजाये गए हैं। दोनों ओर दर्शकों के बैठने का स्थान है। वहीं एक स्थान पर अत्यंत गंभीर मुद्रा में चंद बैठे हैं। नेपथ्य में बड़ा कोलाहल सुनाई पड़ता है।]

ग़ोरी—(चकपकाकर चारों ओर देखते हुए) यह हंगामा कैसा ?

एक सरदार—मालूम होता है कि पिरथीराज का जुलूस नज़दीक आ गया है। ग़ज़नी की रिआया उसको देखकर खुश हो रही है।

(इसी समय हुज़ाब दरबार में उपस्थित होकर अभिवादन करता है।)

ग़ोरी—हुज़ाब ! क़ैदी की क्या खबर है ?

पीरोजखाँ—वह नज़दीक ही है, जल्द हुज़ूर के सामने पेश होगा। खता मुआफ़ हो, जहाँपनाह ! मेरी समझ में नहीं आ रहा, पिरथीराज आदमी है या···देव !

ग़ोरी—(क्षोभ से) कहो भी, बात क्या है ?

हुज़ाब—हुज़ूर, उसके गले में कई मन का वज़नी तौंक पड़ा है, हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी हैं। ऐसी हालत में दूसरे ग़ैर-मामूली ताक़त के आदमी के लिए दो क़दम भी चलना मुश्किल हो जाता ! लेकिन पिरथीराज शेर की-सी मस्त चाल से ग़ज़नी की सड़कों पर चल रहा है, ऐसा लगता है, मानो उसको फूलों के हार पहनाए गए हैं। उसके लबों पर अजीब मुस्कराहट है। आज सुबह भी आपके हुक्म से उसकी आँखों में लाल मिरचा डलवा दिए गए थे। उसके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आँसू तो आ गए, लेकिन उसकी पेशानी पर बल नहीं पड़ा और न उसकी मुस्कराहट गई।

ग़ोरी—ओह ! उसकी पेशानी पर बल नहीं पड़ा···और न उसकी मुस्कराहट गई ! मैं सब कर चुका, लेकिन पिरथीराज को अब तक झुका न पाया···! पता नहीं, किस धातु का बना है यह मग़रूर···?···ओह !

चंद—सुलतान, पृथ्वीराज किसी धातु के नहीं, भारतवर्ष की मिट्टी के बने हैं, जिसमें दुर्धर्ष ग्रीक, बर्बर, शक और अपराजेय हूण विनीत होकर अपना सब-कुछ खोकर मिल गए ! अपराध क्षमा हो सुल्तान, पृथ्वीराज को झुकाने की कल्पना वही कर सकता है, जिसमें संसार के सबसे ऊँचे पर्वत हिमालय को झुकाने की शक्ति हो···!

ग़ोरी—(क्रोध से) शायर, वह भी देखूंगा···क़यामत और क़हर मेरा रुख देखते रहते हैं···सब्र करो ! अच्छा हुज़ाब, पिरथीराज को देखकर ग़ज़नी की रिआया पर क्या असर पड़ा ?

हुजाब—जहाँपनाह, जान बख्शी जाय, ऐसा नज़ारा मैंने अपनी आंखों से तो कभी देखा नहीं, कभी सुना भी नहीं। हुस्न और शुजाअत के उस चलते-फिरते बुत को देखकर ग़ज़नी के लोग पागल-से हो गए हैं। वे उसकी दर्दनाक हालत देखकर हमदर्दी और अफ़सोस ज़ाहिर करते हैं···। बच्चे और बूढ़े तो रो रहे हैं···। और हुज़ूर, आपकी इस ग़ज़नी की औरतों ने उसके हुस्न को देखकर बेताब होकर अपनी नकाबें उलट दी हैं। बहुतेरी बेहोश होकर···।

ग़ोरी—(उद्विग्नता से मंच पर खड़े होकर) ठहरो हुज़ाब···मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता।···उसे जल्द दरबार में हाज़िर करो।··· देखो, एक भी औरत यहाँ न आने पावे। और देखो, हरमसरा की जो बेगमें ऊपरी मंज़िल पर आई हैं, उन्हें भी जल्द यहाँ से वापस कर दो···।

हुजाब—(सिर झुकाकर) जो हुक्म···।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ग़ोरी—(अपने-आप) ओह ! पिरथीराज···हारकर भी···जीत रहा है।···और···मैं···मैं जीतकर···भी···हार रहा हूँ ? अच्छा, (दाँत पीसकर)···देखा जायगा···।

(नेपथ्य में कोलाहल होता है। हथकड़ी-बेड़ियों की आवाज सुनाई पड़ती है, और पृथ्वीराज बंदी-वेष में भयानक प्रहरियों से घिरे हुए दरबार में उपस्थित किए जाते हैं। उन्हें देखकर चंद आँखों में आँसू भरकर-उठकर दौड़ पड़ते हैं, प्रहरी रोकते हैं···।)

चंद—(उच्छ्वसित कंठ से) महाराज !···महाराज !···भारत-सम्राट् !···आपकी यह दशा ?···परम प्रिय वयस्य !···चिरअभिन्न सहचर !···जीवन-सखा !···(आँखों से आँसू गिरते हैं)।···सुलतान···क्या आप मुझे महाराज से निकट से दो बातें करने की आज्ञा देंगे ?

पृथ्वीराज—(चंचल होकर)···यह मैं किसकी···किसकी अमृतमयी वाणी सुन रहा हूँ···? कौन है यह···? क्या चंद···? महाकवि चंद ?···(सिर झुकाकर) यहाँ कैसे···?

चंद—हाँ, मैं ही हूँ देव ! चंद आपसे अलग कब और कहाँ रहा है ? राजराजेश्वर ! आज दिल्ली अनाथ है, भारत-जननी नितांत परवशा और पराधीना है। जिनके धनुष की टंकार सुनकर दिशाएँ काँप उठती थीं, सूर्य और चंद्र अपनी कक्षा से स्खलित हो जाते थे, उन्हीं अप्रतिभट चक्रवर्ती महाराज पृथ्वीराज की यह दशा !···हा दैव !

पृथ्वीराज—मित्र, यह सब मेरी ही भूल का परिणाम है, दैव का कोई दोष नहीं। आज मुझे कह्ल, कैमास आदि के साथ किये गये अपने व्यवहार का स्मरण होता है। हा ! अकारण छेड़े गए मेरे युद्धों की ज्वाला में देश का शौर्य दग्ध हो गया। महोबे के वे अप्रतिम वीर मेरे ही अहंकार के दानव की भेंट हो गए। मैंने कभी भी देश को प्रेम और ऐक्य द्वारा संगठित करने का प्रयास नहीं किया। हमारे अहम्मन्यताजन्य घोर व्यक्तिवाद ने देश की यह दुरवस्था

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

की, पर अब क्या हो सकता है, महाकवि ! देश का क्या होगा, चंद ?

(पृथ्वीराज का प्रशस्त ललाट और भ्रूयुगल आकुंचित हो जाते हैं, ओष्ठ काँपने लगते हैं, आँखों से दो-चार बूंद आँसू भी गिरते हैं।)

ग़ोरी—(मंच पर खुशी से उछलकर) हः हः हः ! आज मैंने पिरथीराज की आँखों में ग़म के आँसू देखे ! आज उसकी पेशानी पर परेशानी नज़र आई, लबों पर तबस्सुम की जगह रंजोअलम की तारीकी दिखाई पड़ी। अब मुझे मेरी उम्मीद बर आने की उम्मीद हुई। शाबाश, शायर शाबाश ! मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुमने पिरथीराज को रुला दिया। जब तक वह मेरे रूबरू दरबार में है, तुम नज़दीक जाकर उससे मिल सकते हो।

चंद—सुलतान, ये महाराज के अपने दुःख के आँसू नहीं हैं, देश के दुःख के आँसू हैं।

(चंद पृथ्वीराज के निकट जाकर उनके गले से लिपट जाते हैं, दोनों के आँसू गिरते हैं। सुलतान का संकेत पाकर प्रहरी उन्हें अलग कर देते हैं।)

ग़ोरी—क़ैदी के हाथ खोल दो, और उसे तीर-कमान देकर अपना फ़ने-तीरंदाजी दिखाने को कहो।

(पृथ्वीराज के हाथ खोल दिये जाते हैं, उपस्थित जनता उत्सुकताजन्य आवेश से चंचल हो उठती है। कोलाहल होता है।)

पृथ्वीराज—चंद···! (टटोलते हैं। ग़ोरी उन्मत्त अट्टहास करता है। कुछ सरदार भी हँसते हैं।)

चंद—महाराज, महाराज ! यही समय है, यही समय है शौर्य-प्रदर्शन का अंतिम ज्वलित क्षण !···पावन पर्व ! अब न चूकिए, देव !

पृथ्वीराज—समझ गया, मित्र ! तुम जो चाहते हो, वही होगा। किंतु महाकवि ! मेरे बाण को तो सदैव तुम्हारी वाणी से ही स्फूर्ति और गति प्राप्त होती रही है। आज···अंतिम बार।···हाँ, अंतिम बार,

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

…सुना दो अपने ओजस्वी छंद !…मैं, मैं…।

ग़ोरी—शायर ! क्या कह रहा है पिरथीराज ?

चंद—स्वीकार है महाराज को धनुर्विद्या का प्रदर्शन ! पर इसके पूर्व वह मेरी दो कविताएँ सुनना चाहते हैं ! आज्ञा हो, तो सुना दूं, सुलतान !

ग़ोरी—हाँ, हाँ, इसमें कोई हर्ज नहीं। शायरी सुनने का शौक़ अब भी नहीं गया ! हः-हः-हः !

(पृथ्वीराज के हाथ में लोहे का धनुष और बाण दिये जाते हैं। धनुष चढ़ाकर उस पर शर नियोजित करके जैसे ही वह उसे खींचते हैं, वह टूट जाता है। बहुत से सरदारों के मुख से बलात् प्रशंसा-सूचक शब्द निकल जाते हैं। ग़ोरी की भौंहें टेढ़ी होती हैं। पृथ्वीराज को दूसरा धनुष दिया जाता है, उसकी भी वही दशा होती है…फिर तीसरे, चौथे और पाँचवें की भी वही दशा होती है…। ग़ोरी का चेहरा कभी निराशा और आत्मग्लानि से बुझा हुआ दिखाई पड़ता है, कभी क्रोध से तमतमाया हुआ।)

तत्तार ख़ाँ—जहाँपनाह, मेरी राय में अब इस तमाशे को ज्यादा बढ़ाना ठीक नहीं। मुझे इसमें खतरा नज़र आता है !

ग़ोरी—कोई खतरा नहीं। डरो मत, तत्तार ख़ाँ ! होने दो यह तमाशा ! अच्छा, क़ैदी को इसी की कमान दे दो।

(तत्तार ख़ाँ खीझकर दरबार से उठ जाता है। भृत्यगण एक विशालकाय लोहे का धनुष लाकर पृथ्वीराज को देते हैं।)

पृथ्वीराज—(उसे हाथ में लेकर) मेरे धनुष !…जीवन-संगी…। मैंने सोचा था, जब तक तुम मेरे हाथ में हो, भारत की ओर कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता।…किन्तु…किन्तु…!

चंद—महाराज, अब चिन्ता न करें, धनुष पर बाण चढ़ाएँ। (ग़ोरी से) सुलतान, आप संकेत क रें, महाराज लक्ष्य-वेध करने को प्रस्तुत हो रहे हैं। मैं कविता पढ़ता हूँ।…सू र्य, तुम अन्तिम बार पृथ्वीराज

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का शर-संधान देखो···! आकाश, अंतिम बार तुम भी इस चंद की वाणी सुन लो ! ···सँभलो शेष ! ···संभलो दिग्पालो···! (चंद डमरू बजाकर महाराज की विरुदावली पढ़ते हैं।)

हिंदुवान थान उत्तम सुदेस।
तहँ उवित द्रग्ग दिल्ली सुवेस।
संभरि नरेस चहुवान थान।
प्रथिराज तहाँ राजंत भान।
संभरि नरेश सोमेस पूत।
देवत्त रूप अवतार धूत।
जिहि पकरि साह साहाव लीन।
वहु बेर करिय पानीय हीन।
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जंगीर।
चुक्कइ न सबद बेधंत तीर।

ग़ोरी—शायर, मैं फरमान देता हूँ, क़ैदी से कहो तीर छोड़े।

(ग़ोरी तवों पर आघात करता है, पृथ्वीराज के धनुष से तीर छूटता है। बड़े ज़ोर का शब्द होता है। तीर सातों तवों को वेध कर धरती में समा जाता है। लोग वाह-वाह करते हैं। ग़ोरी के मुँह से भी बलात् 'शाबाश पिरथीराज' निकल जाता है।)

चंद—महाराज ! महाराज ! शीघ्रता कीजिए ! समय आ गया !

चारि बाँस चौबीस गज अंगुल अट्ठ प्रमान।
सात बार तब चूकियो, अब न चुक्कु चहुवान।

[पृथ्वीराज का मुँह रोष से प्रज्वलित हो उठता है, भौंहें टेढ़ी होती हैं। वह धनुष पर दूसरा बाण चढ़ाकर उसका संधान करते हैं। वज्र-गर्जन का-सा भयानक शब्द होता है, चारों ओर भयानक प्रकाश फैल जाता है। देखते-ही-देखते गोरी उस बाण से विद्ध होकर मंच के नीचे लुढ़क जाता है।···चंद पुकार उठते हैं—'भारत की जय', 'महाराज पृथ्वीराज की जय'···बड़ा कोलाहल होता है। चंद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दौड़कर महाराज के पास पहुचता है, और अपनी जटाओं से एक छुरी निकालकर उन्हें देता है।]

चद—महाराज ! जल्दी कीजिए।

पृथ्वीराज—धन्य हो कवि ! अच्छा विदा ! (हृदय पर छुरी का आघात करते हैं।)

चंद—(दूसरी छुरी निकालकर अपने हृदय पर आघात करते हैं।) महाराज, विदा कैसी ? मैं तो मृत्यु में भी साथ ही हूँ। (अनेक यवन उनके शरीरों पर टूटते हैं।)

(पट-परिवर्तन)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

स्थान—दिल्ली में महाकवि चंद का भवन

[एक कक्ष में जगनिक और जल्ह बैठे वार्तालाप कर रहे हैं।]

जल्ह—बन्धु, आप जो समाचार लाए हैं, उसे सुनकर किस भारतीय का मस्तक गर्व से ऊँचा न होगा ? सचमुच पिताजी ने 'रासो' के महिमामय उपसंहार के उपयुक्त सामग्री प्रस्तुत कर दी है ! यह गौरवमयी गाथा लिखकर मेरा कवि-जीवन भी धन्य हो जायगा। (आँसू आ जाते हैं।)

जगनिक—उनकी कीर्ति सूर्य और चन्द्र के साथ-साथ चलेगी। महाकवि युग-युग के लिए वंदनीय हो गए हैं, भारत-भूमि उनके-जैसे सपूतों से सदैव गौरवान्वित रहेगी। उन्होंने देश की स्वाधीनता के शत्रु सुलतान ग़ोरी को नेत्र-हीन चौहान-नरेश के बाण की अग्नि में क्षार करवाकर अपने प्राण उत्सर्ग कर दिये। कवि-जीवन की ऐसी ज्योतिर्मयी पुण्य परिणति का उदाहरण और कहाँ मिलेगा ?

जल्ह—बन्धु ! आपको यह समाचार मिला कहाँ ?

जगनिक—दरवेश के वेश में मैं सिन्धु पार कर गक्खरों के प्रदेश में पहुँच गया था। वहीं मुझे ग़ज़नी की ओर से भागकर आते हुए भारतीय यात्रियों का दल मिला। उनमें भीम खत्री नाम का एक व्यक्ति भी था। महाकवि ग़ज़नी में सुलतान की आज्ञा से उसी के यहाँ ठहरे थे। उसने पूरी घटना का आँखों देखा वृत्तांत मुझे सुनाया। ग़ोरी के मारे जाने पर वहाँ के मुसलमानों का रोष बहुत भड़क उठा इसलिए बेचारा भीम खत्री चुपके से वहाँ से भाग निकला।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जल्ह—वहाँ के और भी समाचार आपको मिले होंगे ?

जगनिक—बहुत-सी बातें मालूम हुईं। वैसे तो मेरी इच्छा यह थी कि मैं स्वयं ग़ज़नी जाकर महाराज और महाकवि की अस्थियों के पुष्प खोजकर और चुनकर यहाँ लाता, और यह पवित्र थाती गंगा और यमुना को सौंप देता, किन्तु कुछ सोचकर मैं अपने इस संकल्प से विरत हो गया।

जल्ह—क्या सोचा आपने, बन्धु ?

जगनिक—मैंने सोचा, संभव है, भविष्य में भारतीय जनों की कोई प्रतापी और तेजस्वी पीढ़ी ग़ज़नी तक पहुंचकर वहाँ अपने इन महान् पूर्व पुरुषों का स्मारक खड़ा करे। भारतीय राष्ट्र की पश्चिमी सीमा पर अपना बलिदान कर ये दोनों महापुरुष भारत के वर्तमान और भावी राजनीतिज्ञों को देश की सुरक्षा का मूलमंत्र समझा गए हैं।

जल्ह—ठीक है, कवि ! आपकी बुद्धि बहुत दूर तक देखती है। वहाँ आपको ग़ज़नी की राजनीतिक हलचल के और क्या समाचार मिले ?

जगनिक—ग़ोरी का गुलाम कुतुबुद्दीन उसका उत्तराधिकारी हुआ है। वह भारत पर आक्रमण करने ही वाला है, उसका विचार दिल्ली को अपनी राजधानी बनाने का है। यहाँ से वह देश के विभिन्न राज्यों पर आक्रमण कर क्रमशः उन्हें स्वायत्त करने का प्रयत्न करेगा।

जल्ह—इस स्थिति में मेरा क्या कर्तव्य है, बन्धु !

जगनिक—आप 'रासो' को पूरा कर दिल्ली छोड़ दें, और इस प्रदेश के जन-साधारण के बीच निवास करें। वहाँ रहकर जन-जीवन को सतेज करते रहना ही इस समय का आपका सबसे बड़ा कर्तव्य है। अस्थायी रूप से युद्ध-क्षेत्र में पराजित हो जाने पर भी यदि देश मन से न हारा, तो अन्तिम विजय हमारी ही होगी। हमारी गई हुई

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्वाधीनता भी फिर लौटेगी।

जल्ह—आप ठीक कहते हैं, बन्धु ! मैं वही करूँगा। किन्तु है यह असाधारण राष्ट्रीय संकट का काल ! आक्रांता तो मन्दिर गिराते हैं, गायों का वध करते हैं, सामूहिक रूप से स्त्रियों के सतीत्व का अपहरण करते हैं। क्या इस स्थिति में देश का मनोवल बना रह सकेगा ?

जगनिक—क्यों नहीं, बन्धु ? संकट-काल में राष्ट्र जितना बड़ा बलिदान करता है, उतना ही महान् उसका नव्योत्थान होता है। मैंने महोबे के युद्ध-क्षेत्र में आल्हा के गुरुदेव की दिव्य वाणी सुनी है। उन्होंने उस साधना का संकेत किया है, जिससे शस्त्र, शास्त्र तथा कवियों की वाणी सब अभिनव श्री से मंडित हो उठेंगे।

जल्ह—वह कैसो साधना है, बन्धु ?

जगनिक—उसका अवतरण स्वतः हमारे प्राणों में होगा ! हमको लोकहित की वेदी पर अपना सर्वस्व समर्पित कर उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। मुझे लगता है, कवियों की एक ऐसी पीढ़ी आने वाली है, जिसकी वाणी इस राष्ट्र का रक्षा-कवच बनेगी। जन-जन में अपूर्व आत्मबल का संचार होगा, इस देश की स्त्रियाँ पुरुषों से भी बड़े-बड़े बलिदान करेंगी। हमें अभी से उसके लिए भूमि तैयार करनी चाहिए।

जल्ह—आपकी प्रज्ञा इस निराशा की तमिस्रा में भी जिस स्वातंत्र्य-ज्योति का साक्षात्कार कर रही है, उसका आभास पिताजी को भी मिलता था। तभी दिल्ली छोड़ते समय भी उनके मुख पर अपूर्व कांति थी।

जगनिक—अवश्य मिला था। मैं यह बताना तो भूल ही गया कि भीम खत्री ने महाकवि का अन्तिम छन्द मुझे सुनाया था। महाराज के बाण से जैसे ही ग़ोरी विद्ध हुआ, वैसे ही महाकवि के दृप्त कण्ठ से वह छन्द आविर्भूत हुआ था। भीम खत्री को वह याद था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जल्ह—क्या है वह छन्द, बन्धु ? क्या आपको स्मरण है ?

जगनिक—क्यों नहीं ? क्या वह भी भूल जाने की वस्तु है ? सुनिए—

मरन चंद बरदाइ, राजपुनि सनिग साहि हनि।
पुहपंजलि असमान, सीस छोड़ो सुदेव तनि।
मेछ अवद्धित धरनि, धरनि सब तीय सोह सिंग।
तिनहि तिनहि संजोति, जोति जोतिहि संयातिग।
रासो अलंभ नव रस सरस, चंद छंद किय अमिय सम।
शृंगार, बीर, करुना, बिभछ, भय अद्‌भुत्त हसंत सम।

जल्ह—धन्य पिताजी ! आपने अपने शोकपर्यवसायी महाकाव्य को सुखांत से ज्योतिर्मय बना दिया। धरणी के म्लेच्छ-मुक्त होने की कल्पना के समक्ष पिताजी का राजशोक भी दब गया है।

जगनिक—यही बात है, बंधु ! उनका यही संदेश हमें घर-घर पहुँचाना है। अब मैं भी विदा चाहूंगा। अपने प्रदेश में जाकर मुझे भी यही करना है, जो आप यहाँ करेंगे।

(उठकर खड़े हो जाते हैं। जल्ह भी उठकर हाथ जोड़ते हैं। जगनिक आशीर्वाद का हाथ उठाते हैं।)

(पट-परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

स्थान—कालिंजर में महाराज परमार्दिदेव (परमाल) का मंत्रणा-कक्ष।

[महाराज परमार्दिदेव, उनके प्रधान मंत्री और जगनिक बैठे हुए मंत्रणा कर रहे हैं। सब लोग गंभीर विचार में डूबे हैं।]

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रधान मंत्री—कुतुबुद्दीन दिल्ली को राजधानी बनाकर धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ रहा है, यह समाचार चिंताजनक है।

जगनिक—मैंने कन्नौज जाकर राजाधिराज जयचंद को यह स्थिति समझाकर सचेत करने का पुनः प्रयत्न किया; किंतु उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उनमें राजनीतिक दूरर्दाशता का अभाव है, वह अब भी अपनी सेना को अपराजेय मानते हैं।

परमार्दिदेव—कन्नौज के बाद वह इधर भी आ सकता है।

प्रधान मंत्री—कौन कह सकता है? संभव है, वह पहले इधर ही आक्रमण करे।

जगनिक—यही बात है! उसके आक्रमण की गतिविधि समझ लेना कठिन है। बस, हमको तैयार रहना चाहिए।

परमार्दिदेव—क्या उसका सामना करने की शक्ति हममें है?

जगनिक—क्यों नहीं? आपके राज्य का बच्चा-बच्चा आपके लिए प्राण देने को प्रस्तुत है।

परमार्दिदेव—पर हमारे पास अब आल्हा-ऊदल-जैसे कुशल सेनानायक कहाँ हैं? मैंने अकुलीन समझकर उन दोनों भाइयों का कितना अपमान किया! हा! उसी का यह दंड मुझे मिल रहा है।

जगनिक—बीते हुए पर शोक करना व्यर्थ है। आप स्वयं युद्ध में अपनी प्रजा का नेतृत्व करें। आपको अपने बीच पाकर आपके प्रजा-जनों द्वारा संगठित सेना की शक्ति बहुत बढ़ जायगी।

प्रधान मंत्री—यह सेना तो अत्यंत अल्प-शिक्षित है।

जगनिक—कोई चिंता नहीं। उसमें असाधारण मनोबल है। उसमें सर्वस्व की बाजी लगा देने की वह दृढ़ निष्ठा है कि यवन सेना के दाँत खट्टे हो जायेंगे। महोवे की आज की सेना में जनता के प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक स्तर के लोग हैं। उन्होंने सब प्रकार के भेद भाव भुलाकर अपनी स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व अर्पित करने का निश्चय कर लिया है। प्रतिकूल परिस्थिति में यहाँ की स्त्रियाँ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भी अपना शरीर अग्नि को अर्पित कर देंगी।

परमार्दिदेव—(जगनिक से) बेटा, धन्य है, तुम्हारा उद्योग ! ऐसी सेना का नेतृत्व करने का अवसर मुझे अपने जीवन के अंतिम दिनों में मिल रहा है। मेरे वृद्ध शरीर में भी युवकों का-सा रक्त-प्रवाह वहने लगा है। तुमने मुझे जो आर्ष पथ दिखाया है, अपनी प्राणों से प्यारी प्रजा के साथ मैं उसी पर चलकर सुगति प्राप्त करूँगा। अभी आज ही मैंने व्यास की यह वाणी पढ़ी है कि संसार में दो प्रकार की मृत्यु परम दुर्लभ और श्रेष्ठ मानी गई हैं—एक तो योगी पुरुष का अपने प्राणों को वश में करके ब्रह्मचिंतन द्वारा शरीर का परित्याग और दूसरा युद्ध-भूमि में सेना के आगे रहकर बिना पीठ दिखाए जूझ मरना। मैं अब इस प्रकार का कोई शुभ अवसर खोने का नहीं।

जगनिक—ऐसे आदर्शों से अनुप्राणित राष्ट्र कभी पराजित नहीं हो सकता, महाराज ! ये सब लोक और लोकपाल जाल में फँसे हुए पक्षियों की भाँति जिसकी अधीनता में विवश होकर चेष्टा करते हैं, वह काल ही अस्थायी रूप से सबकी जय-पराजय का कारण बनता है। किंतु अंतिम विजय सत्य और धर्म की ही होती है, इसमें किसी प्रकार का व्यतिरेक कभी नहीं होता।

(पटाक्षेप)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राजकमल का उत्कृष्ट नाटक साहित्य

लहरों के राजहंस (राज संस्करण, सचित्र)	मोहन राकेश	६.००
लहरों के राजहंस (विद्यार्थी संस्करण)	मोहन राकेश	३.५०
मृच्छकटिक (पुस्तकालय संस्करण)	अनु० मोहन राकेश	४.५०
वाह रे मैं वाह !	कन्हैयालाल मा० मुंशी	४.५०
सात रंग एकांकी	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	३.००
रक्त कमल	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	२.५०
युगछाया	सं० शिवदानसिंह चौहान	२.५०
एकांकी श्री	सं० राजेन्द्र भनोत 'शील'	३.००
कॉफ़ी हाउस वाली लड़की	डॉ० सत्यप्रकाश संगर	३.००
दामाद का चुनाव	डॉ० सत्यप्रकाश संगर	४.५०
रुपया तुम्हें खा गया	भगवतीचरण वर्मा	३.००
अधूरी मूर्ति	गोविन्द वल्लभ पन्त	३.५०
जौहर की ज्योति	डॉ० रामकुमार वर्मा	३.५०
नगर वधू	डॉ० प्रतिभा अग्रवाल	४.००
एवम् इन्द्रजित	बादल सरकार, अनु० प्रतिभा अग्रवाल	३.७५

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६